شاہد کبیر

زندگی اور غزل

ڈاکٹر ثمیر کبیر

मराठी साहित्यात वि. वा. शिरवाडकरांचे साहित्य : एक दृष्टिक्षेप 148
—डॉ. लता खापरे (जाने)
संत एकनाथांची भारूडे : एक दृष्टिक्षेप 151
—प्रा. डॉ. विनोद उत्तमराव भालेराव
दृक संवाद प्रक्रीयेत ललीत कलांची प्रखर भूमिका : एक अभ्यास 154
—डॉ. मुक्तादेवी प्रशांत मोहीते
'मुखवटा' अबौल संवाद साधणारे माध्यम... 159
—सदानंद चौधरी
मराठी साहित्य आणि जीवनमूल्ये 163
—डॉ. अमृता इंदूरकर
नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कवितेतून प्रगटणारे शेतकरी जीवन 169
—प्रा. डॉ. राम चौधरी
गांधीवाद आणि मराठी साहित्य 175
—डॉ. सरयू तायवाडे
जैत-रे-जैत 178
—हर्षल गेडाम

उर्दू

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ और ऊर्दु अदब 184
—डॉ. सरोशा नसरीन क़ाज़ी
हिंदुस्तानी क़ौमी शायर : जोश मलीह आबादी 189
—डॉ. रेशमा परवीन
उर्दू ज़बान में मोहम्मद असदुल्लाह की इन्शाईया निगारी 194
—डॉ. अज़हर अबरार
हिन्दुस्तानी अदब की खुसुसियात 198
—डॉ. समीर कबीर
ऊर्दू का एक अज़ीम अवामी शायर : नज़ीर अकबर आबादी 203
—डॉ. नुसरत मीनू
भारतीयता और राष्ट्रीयता 207
—सानमितरा डी. नवघडे
हिन्दुस्तानी अदब और जिंदगी की क़दरें 211
—डॉ. तरन्नुम नियाज़ शेख
उर्दूनज़्म व नस्र के चंद अहम शायर व अदीब 216
—मोहम्मद असरार

© ڈاکٹر ثمیر کبیر

کتاب کا نام : شاہد کبیر: زندگی اور غزل
مصنف : ڈاکٹر ثمیر کبیر 91-9923459544
سنِ اشاعت : ۲۰۱۸
ضخامت : ۱۸۸ صفحات
تعداد : ۵۰۰
سرورق : آصف آرٹ، ناگپور۔ 91-9371023009
کمپوزنگ : احسان حیدر، کامٹی 91-8390111221
ناشر : وائس پبلیکیشن، پرکاش لوک کالونی، اندرا نگر، لکھنؤ (اتر پردیش)
Mobile: 91-9794981222, E-mail:voicepublication@gmail.com
آئی ایس۔بی۔این نمبر: ISBN : 978-93-82427-71-1
قیمت : ۲۰۰ روپیے

☆ کتاب ملنے کا پتہ ☆

۱۔ ڈاکٹر ثمیر کبیر۔ بی ۱۲۔ فراز اپارٹمنٹ، جعفر نگر، ناگپور۔ ۴۴۰۰۱۳
E-mail: poetkabir@gmail.com Mobile: 9923459544

۲۔ ڈارک روم پوئٹس، پلاٹ نمبر A/۳۲، بایرام جی ٹاؤن، ناگپور۔ ۱۳
E-mail: getintouch@darkroompoets.com M:7989905495

۳۔ وائس پبلی کیشن، لکھنؤ۔
E-mail:voicepublications@gmail.com Mobile: 7994981222

Shahid Kabir : Zindagi Aur Ghazal
By Dr. Sameer Kabir
Address: B/12, Faraz Apartment, Jafar Nagar, NAGPUR-13
First Edition : 2018
Price: Rs. 200/-

उर्दूनज़्म व नस्र के चंद अहम शायर व अदीब

मोहम्मद असगर

किसी भी मुल्क का अदब उस मुल्क की तहज़ीब का आईना होता है। जो कुछ समाज में होता है अदीब उस पर गहरी नजर रखता है। वो मुनासिब मौका देखकर कलम का इस्तेमाल करता है और दुनिया के सामने अपने समाज का सच पेश कर देता है। कभी-कभी ये सच इतना कड़वा होता है कि समाज के लोग अदीब की मुखालेफ़त करने लगते है, लेकिन सच फिर भी सच होता है। हमारे सामने आलमी सतह पर इसकी मिसालें मौजूद है।

हिंदुस्तान दुनिया का शायद एक अकेला ऐसा मुल्क है जहां इतने मज़हब और तहज़ीब के लोग एक साथ रहते हैं। शायद ही कोई ओर मुल्क होगा जहां इसके साथ से मुख़तलिफ़ मजहब के लोग रहते हैं, जब इतने लोग एक साथ रहते हों तो वहां का अदब भी जरूर ही रंगा रंग होना चाहिए। यहां कई ज़बान का अदब परवान चढ़ रहाहै। हिंदी मुल्क की बड़ी जबानों में से एक है इसके अलावा उर्दू, मराठी और दीगरज़बानों के अदीब और शायर भी अपनी अलग पहचान रखत है। अभी कुछ अरसा कब्ल ही हिंदी के मशहूर शायर नीरज का इंतेकाल हुआ। वो अपनी अलग पहचान और मुनफ़रिदअंदाज़ रखतेथे। फिल्मी शायरी के साथ-साथ अदबी लिहाज़ से भी हिंदी में उन्हें आलामकाम हासिल है।

उर्दू अदब की इबतेदा से अभी तक जो कुछ अदब तहरीर किया गया उन पर कुछ फ़नकारों के नुकुश हमेशा सबक रहेंगे। अमीर खुसरों, सिराज औरंगाबादी, गुलान हुसैन चिश्ती, वलीदकनी से लेकर मिर्ज़ाग़ालिब के जमाने तक उर्दू अदब ने कई रंग देखे। इसमें जबान की तब्दीली भी शामिल है और हमारे मआशरे का बदलता मिज़ाज, भी। मीर और ग़ालिब की ज़बान, उनका ख़्याल, लफ़्ज़ों के बरतने का सलीका ये सब आज के जदीदम आशरे से अकसर अलग महसूस होते है। हां ये

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2021

ISSUE No- (CCLXXI) 271- B

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

20	नागपूर शहर का विस्तार प्रा. रवि आर. साखरे	103
21	वर्धा जिल्हयातील तालुकानिहाय लोकसंख्या वाढीचे भौगोलिक विश्लेषण प्रा. एन. जी. सोनुले	106
22	विदर्भ जलसिंचन क्षमतेचे भौगोलिक अध्ययन डॉ. सुषमा ल. दामोदरे,	115
23	आदिवासी साहित्याच्या प्रेरणा आणि सद्यस्थिती प्रा. डॉ. अविनाश मेश्राम	122
24	मराठी कथेतील वास्तवदर्शी भावविश्व डॉ. हिराजी बनपूरकर	128
25	महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय : एक अध्ययन प्रा. सचिन गणपतराव कर्णेवार	132
26	ब्रज का भक्ति संगीत प्रा. डॉ. श्वेता दीपक वेगड	137
27	शेतकऱ्यांच्या समस्या व उपाय चोपराम लक्ष्मण गडपायले / डॉ.अमोल मांडेकर	142
28	बाबा आमटेंच्या 'ज्वाला आणि फुले' मधील जीवन दर्शन डॉ. वैजयंती पेशवे	147
29	पंडित कुमार गंधर्व यांची गायणशैली सहा. प्रा. जगन्नाथ के. इंगोले	152
30	वारकरी सांप्रदायाची संगीता सोबत भक्तीमार्गाची वाटचाल प्रा.गजानन बा. काळे	155
31	शरच्चंद्र मुक्तिबोधांची कविता - एक समीक्षा प्रा. डॉ. पंकज शं. वानखेडे	160
32	दुस—या महायुध्दानंतरचे मानसशास्त्र डॉ सुनीता श्रीकांत पांडे	164
33	साहित्यातील स्त्रीदर्शन : मालतीबाई बेडेकर यांचे साहित्यातील वाङ्मयीन योगदान प्रा. अंशुमती भा. पेंडोखरे	167
34	Urdu Ka Eik Khoobru Shayer Mohammad Asra	172
35	AFKAR-E-SAROSHA Dr. Azhar Abrar	177
36	Sahir Ludhyanwi ki shayeri Dr.Feroz S.Khan	181

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 271(CCLXXI) B
ISSN : 2278-9308
Fabruary, 2021

افکار سروشہ : ایک جائزہ

AFKAR-E-SAROSHA

(Dr. Azhar Abrar(Dept. Urdu

Seth Kesarimal Porwal College of Arts & Science & Commerce Kamptee

Dist: Nagpur

Mobile No : 9970284175

ڈاکٹر شیخ عمران کی مرتب کردہ کتاب "افکار سروشہ " ایک ایسی کاوش ہے جس نے ڈاکٹر سروشہ نسرین قاضی صاحبہ کی ادبی زندگی کا کماحقہ احاطہ کیا ہوا ہے ۔ یقیناً یہ کتاب مرتب کرنا اتنا آسان نہیں تھا لیکن ڈاکٹر شیخ عمران کی انتھک محنت نے یہ کام کر دکھایا جس کی سب سے اہم وجہ یہ رہی ہے ڈاکٹر شیخ عمران کا تقرر وسنت رائو نائک کالج ناگپور میں شعبہ اردو میں ہوا جہاں آپ کو ڈاکٹر سروشہ نسرین قاضی صاحبہ کی شخصیت کو سمجھنے کا بھر پور موقع ملا لہٰذا ہندوستان بھر کے ادیبوں نے سروشہ نسرین قاضی کی تخلیقات پر جو کچھ لکھا وہ شیخ عمران نے حاصل کیا اور چند برسوں کی محنت و لگن کے بعد اتنے مضامین جمع کر لیے کہ پھر انہیں کتابی شکل میں شائع کیا جائے ۔

ڈاکٹر شیخ عمران مبارک بعد کے مستحق ہیں کہ آپ کی یہ کتاب نیشنل کونسل فار پروموشن اف اردو لینگویج کے مالی تعاون سے اشاعت پذیر ہوئی ۔کتاب کا سرورق دیدہ زیب ہے ۔ ۲۳۵ صفحات کی اس کتاب میں ان تمام مضامین کو شامل کیا گیا جو سروشہ نسرین نے لکھے تھے جن میں تحقیقی کتابیں ،تنقیدی کتابیں اور افسانوی مجموعے بھی شامل ہیں ۔ کتاب کے آخر میں چند رنگین تصاویر بھی موجود ہیں جن میں ان محفلوں کی تصاویر ہیں جب قاضی صاحبہ مختلف موقعوں سے ان میں شامل رہیں تھیں ۔

اب آئیے "افکار سروشہ " اس کتاب کی ورق گردانی کرتے ہیں ۔اس کتاب میں کل ۴۷ مضامین شامل ہے جن میں اردو دنیائے ادب کی بڑی بڑی شخصیات نے ڈاکٹر سروشہ نسرین قاضی کے فکر وفن کا جائزہ لیا اور ان پر اپنے اپنے خیالات کا اظہار خیال کیا ہے ۔ جن میں ڈاکٹر مدحت الاختر، ڈاکٹر رمیشا قمر،یعقوب الرحمن ، آغا محمد باقر ،عذرا نسرین قاضی،محمد آصف ، ڈاکٹر سید قادری واجد، ڈاکٹر ارم فاطمہ ، تحمینہ مسرور صدیقی اور پروفیسر محمد اسرار وغیرہ کے مضامین شامل ہیں۔

ڈاکٹر شیخ عمران ڈاکٹر سروشہ قاضی کے بارے میں رقم طراز ہیں " اس بات سے انکار نہیں کیا جاسکتا ہے کہ خواتین اپنی عائلی ذمہ داریوں کو نبھاتے ہوئے زندگی کے ہر شعبہ میں راست یا بلواسطہ رہی ہیں۔ نصف صدی قبل تک محدود شعبوں میں ہی خواتین نظر آتی تھیں، لیکن آج کل تقریباً ہر شعبہ میں خواتین کی نمائندگی نظر آتی ہے ۔ ادب کے شعبہ میں خواتین کی کارفرمائی عروج پر نظر آتی ہے ۔ ان خواتین میں ایک معتبر و موقر نام ڈاکٹر سروشہ نسرین قاضی صاحبہ کا ہے ۔ ڈاکٹر سروشہ نسرین قاضی نہایت فطین خاتون ہیں ۔ آپ بیک وقت کئی خصوصیات کی حامل ہیں ۔ کبھی ایک منکسر المزاج خاتون کی حیثیت سے وہ ہمارے سامنے آتی ہیں تو کبھی ایک بے باک ادیبہ کے طور پر ہم ان سے آشنا ہوتے ہیں ۔ جہاں آپ خوش لباس ہیں وہیں خوش مزاج بھی ۔ وہ سیدھی سادھی خاتون ہیں مگر ان کی نظر آپس کے میل ملاپ اور ایک دوسرے کے برتاؤ پر گہرائی تک پہنچ جاتی ہے ۔ حساس دل کی مالک ہیں مگر شکوہ شکایت سے حتی الامکان گریز کرنا ان کا شیوہ ہے ۔ اگر ہم افکار سروشہ میں شامل مضامین پر نظر ڈالیں تو ہمیں معلوم ہوگا کہ اس فہرست میں جتنے بھی قلم کار شامل ہیں سبھی نے ڈاکٹر سروشہ نسرین کی ادبی زندگی کے مختلف پہلوئوں پر روشنی ڈالی ہے اور اس میں ہندوستان بھر کے چھوٹے بڑے قلم کار وں نے لکھا ہے ۔ ڈاکٹر منشاء الرحمن منشا کی تہنیتی نظم تو کیا خوب ہے جس کے اشعار دیکھیے

بن گئیں صاحب تصنیف سروشہ قاضی آج یہ بات ہے میرے لیے حد درجہ خوشی

ہوئی افسانے کی دنیا میں یہ جلوہ آرا ناگپور شہر کا نام ان کے قلم سے چمکا

روح افزا بہت ہوتی ہے کہانی ان کی ہے بڑے خاصے کی شئے شستہ بیانی ان کی

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN - 2277 - 5730

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

AJANTA

Volume IX, Issue - IV, October - December - 2020
Hindi Part - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399 (www.sjifactor.com)

AJANTA PRAKASHAN

VOLUME - IX, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२४	बरेली जनपद के सरकारी तथा गैर सरकारी महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन **ममता फुलेरा** **डॉ. प्रतिभा रस्तोगी**	११३-११७
25	Adeeb-e-Atfaal Haider Biyabani **Dr. Azhar Abrar Ahmad**	118-123
26	Talkh-o-Shirin Lahje ka Shayer Majaz **Mohammad Asrar**	124-127

CONTENTS OF ENGLISH PART - III

S. No.	Title & Author	Page No.
12	Efficacy of Yoga for Women **Dr. Manish R. Chakravarty**	67-70
13	Significance of Strength Training for Basketball Players **Mayank Chakraverty**	71-77
14	Role of Yoga in Health Hazards during COVID-19 **Mohan Ashok Hosakoti**	78-82
15	E-Learning its Impact on Jammu & Kashmir during Covid-19 "Where It Stands" **Mr. Abid Bashir Rather** **Ms. Mousmi Verma**	83-88
16	Employment through yoga **Dr. Azhar Abrar Ahmad**	89-95
17	Yoga: A Sigh of Relief during Covid-19 **Dr. Vinod R. Shende**	96-101

COVID-19 Pandemic Special

ISSN - 2249-5134

Perspectives

A National Interdisciplinary Annual Research Journal

Peer Reviewed Research Journal for Interdisciplinary Studies of Arts Commerce & Social Sciences

Vol. I
Special Issue (IX)
July 2020

Dr. Madhukarrao Wasnik
PWS Arts and Commerce College
Kamptee Road, Nagpur - 26.
(Reaccreditated 'B' by NAAC)

17	सर्वांगीण विकासासाठी कोरोनानंतरची आव्हाने	प्रा. डॉ. वर्षा गंगणे	91-96
18	कोरोना महामारी आणि केंद्र सरकारचे आर्थिक पॅकेज	प्रा. डॉ. प्रज्ञा बागडे	97-105
19	कोविड–१९ : आत्मनिर्भर भारत अभियान	डॉ. जितेन्द्र सावजी तागडे	106-110
20	भारतीय अर्थव्यव्यवस्थेची मंदीसदृश्य स्थिती: एक दृष्टीक्षेप	डॉ. प्रशांत म. पुराणिक	111-119
21	कोरोनोत्तर काळातील व्यवस्था परिवर्तनाव्दारे शाश्वत विकास साधणारे महात्मा गांधी यांचे प्रारूप	प्रा. केदार रविंद्र केंद्रेकर,	120-124
22	कोरोना विषाणू व्हायरासचे सामाजिक जिवनाच्या विविध घटकांवर होणारे परिणाम आणि उपाय	डॉ. अश्रू जाधव	125-128
23	विश्वव्यापी कोराना व्हायरस नंतरची आव्हाने	डॉ. निशा अशोक कळंबे	129-134
24	कोरोनाच्या काळात प्रसारमाध्यमांचा समाज मनावरील अनिष्ट परिणाम	डॉ. अमित पांडे	135-139
25	लॉक डाऊन नंतर उच्च शिक्षणातील बदल आणि आव्हान	डॉ. जे.एस. हटवार	140-143
26	कोविड–१९ मुळे देशाचा अर्थव्यवस्थेत मोलाची भर टाकणाऱ्या शेतकऱ्यांची अवस्था	डॉ.बी.व्ही.श्रीगीरीवार	144-146
27	कोरोना महामारीमुळे स्थलांतरीत मजुर व शेती क्षेत्रावर झालेले परिणाम	प्रा. अलका वाल्मीक पाटील प्रा. डॉ. प्रज्ञा बागडे	147-151
28	कोरोना साथीचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम	कु. माधुरी रा. बोटरे	152-154
29	कोरोना महामारी के प्रभाव	डॉ. रजनी हारोडे	155-158
30	कोविड–१९ सर्वेक्षण– भारतीय जनसमुदाय पर जागरूकता मूल्यांकन एक अध्ययन	डॉ. जयंत कुमार वी. रामटेके	159-164
31	कोरोनाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम	डॉ.सिध्दार्थ हरिदास मेश्राम	166-172

कोरोनाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम

डॉ.सिध्दार्थ हरिदास मेश्राम

गोषवारा:

कोविड–१९ या विषाणूमुळे संपूर्ण जगाच्या अर्थव्यवस्थेवर प्रतिकूल परिणाम झाल्याचे दिसून येत आहे. जागतिक अर्थव्यवस्थेमध्ये विकसित व विकसनशील अशा प्रकारची विभागणी आहे.विकसित देशामध्ये चीन, अमेरिका,इटली आणि स्पेन सारख्या देशाची अर्थव्यवस्था कोलमडून पडली आहे. या संकटाचा विकसित देशावरील परिणाम बघता विकसनशील देशावरील परिस्थितीची कल्पना येण्यास वेळ लागणार नाही.विशेषत: अनेक समस्याग्रस्त प्रश्न निर्मित भारतासारख्या देशाची तर स्थिती अतिशय गंभीर आहे. सामान्य माणसाचे तर जगणेच मुश्किल झाले आहे. या स्थितीमध्ये अर्थव्यवस्थेच्या दृष्टीने अनेक उपयाधीन पावले उचलण्याची गरज आहे.या पेपर मध्ये भारतीय अर्थव्यवस्थेचा सर्वागाने सविस्तर विचार करण्यात आला आहे. यामध्ये वर्तमानकालीन स्थितीचा आढावा घेण्यात आला असून त्याच्या गंभीर परिणामाची माहिती देण्यात आली आहे. प्रस्तुत पेपर हा दुय्यम सामग्रीवर आधारित असून दिलेल्या अंकाची नोंद ही परिवर्तनीय आहे.याचे कारण कोरोना विषाणूचा प्रभाव अजून संपलेला नाही.ह्या परिणामाची दखल शासन सवर्तोपरी घेत आहे.

बिजशब्द:जागतिक आर्थिक परिणाम, भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम

प्रास्ताविक:

सध्याच्या वर्तमान परिस्थितीमध्ये संपूर्ण जगाला वेठीस धरलेल्या कोरोना–१९ या विषाणूच्या वाढत्या प्रभावाने राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक,शैक्षणिक, आणि आर्थिक यासारख्या सर्वच क्षेत्रावर प्रतिकूल परिणाम झाल्याचेदिसून येते. कोरोना हे जगाच्या इतिहासातील आता पर्यंतचे सर्वात मोठे संकट आहे. ज्यामध्ये सुरळीत चालु असलेले सगळे व्यवहार बंद करावे लागले आहेत.कदाचित पृथ्वीच्या इतिहासात यापेक्षा जास्त मोठी उलथापालथ घडवून आणणारी संकटे येऊन गेलेली असतील, पण मानवजातीच्या लिखित इतिहासात दोन जागतिक महायुद्ध वगळता असे मोठें संकट आलेले नव्हते, किंबहुना दुस–या महायुद्धापेक्षाही हे संकट कित्येक पटीने मोठे आहे, कारण ते पृथ्वीवर सर्व व्यापी आहे. त्याने आता अर्थव्यवस्थेवर घाला घातला असून त्याचे काय दुष्परिणाम होतील याची कल्पनाही आपण न केलेली बरी.

आतापर्यंत या विषाणूमुळे झालेल्या आजाराने व्यक्तीच्या मृत्यूची संख्या ही लाखोच्या वर जाऊन पोहचली आहे. तरीही हे दुष्टचक्र थांबलेले नाही. टाळेबंदी सारखा अखेरचा उपाय वापरूनही कोरोनाचे रुग्ण वाढत असल्याने जागतिक आरोग्य संघटना आणि इतरही जागतिक संस्थानी यापुढे हात टेकले आहे. भारतासह अमेरिका, ,इटली स्पेन, युरोप आणि इतरही छोटे, मोठे देश या संकटापुढे हतबल झाल्याचे केविलवाणे चित्र आहे. औषध किंवा लस सापडली तरच या विषाणूच्या संक्रमण व संकटापासून जगाची सुटका होऊ शकते, तोपर्यंत टाळेबंदीचा वापर करण्याशिवाय पर्याय नाही. यामुळे अर्थव्यवस्था धोक्यात आलेली आहे. याचा परिणाम केवळ भारतीय अर्थव्यवस्थेलाच नाही तर जागतिक अर्थव्यवस्थाही यामुळे कोलमडून पडल्याचे चिन्ह आपणास पहावयास मिळत आहे. परिणामी, बेरोजगारी, आणि भूखमारी यांचे संकट जगभरा मध्ये येईल, ज्याची तीव्रता या विषाणूच्या संकटापेक्षा ही कैक पटीने असू शकते असे जागतिक आरोग्य संघटनेचे म्हणणे आहे. कोरोना मुळे मोठ्य प्रमाणावर आर्थिक संकट आलेले आहे तरी सर्व साधारणपणे चालु आर्थिक वर्षात जागतिक स्तरावर आर्थिक स्थितीत सुधारणा होइल अशी आशाही ओ.इ. सी.डी.ने व्यक्त केली आहे. मात्र प्रादुर्भाव असाच एकेका खंडात होत राहिला, तर जगाचा आर्थिक विकास

दर मंदावनार असल्याचे आर्गनायजेशन फॉर इकॉनॉमिक डेव्हलपमेंटचे सेक्रेटरी जनरल यांनी म्हटले आहे. यांचे परिणाम दीर्घकाळ भोगावे लागले तर हा वृद्धि दर आणखी खाली येत १.५ टक्के राहील अशीही भीती अनेक संघटनांनी व्यक्त केली आहे

कोरोना विषाणूचा उद्रेक झाल्यानंतर गेल्या काही दिवसांमध्ये शेअर बाजार कोसळला अशा बातम्या तुम्ही ऐकल्या असतील पण अर्थव्यवस्थाही फक्त शेअर बाजार, गुंतवणूकदार यापुर्ती मर्यादित आहे का? अर्थव्यवस्था ही फक्त याचं गोष्टीवर अवलंबून नसून आपल्याकडे जो किराणा येतो, भाज्या येतात, दूध येणे, वाहतूक, एकंदरीत जीवनावश्यक अशा सर्व घटकांवर अर्थव्यवस्था अवलंबून असते.

भारत हा विकसनशील देश आहे. कोरोना या विषाणूमुळे इतर देशाप्रमाणे अवलंबलेल्या टाळेबंदीमुळे भारताच्या समग्र अर्थव्यवस्थेवर गंभीर परिणाम झाला आहे. भारतात बहुसंख्य लोकं रोजंदारीवर काम करतात. हजारो मजूर स्थलांतर करत आहे. त्याच्या रोजंदारीवर किंवा नोकरीवर टांगती तलवार आलेली आहे. या विषाणू मुळे छोटे मोठे कारखाने बंद झाले आहेत. पुरवठासाखळी तुटली आहे. सिनेमागृह बंद झालीत. दुकाने, मॉल बंद झाली. आय.पी.एल. सारख्या स्पर्धा अनिश्चित काळासाठी पुढे गेल्या, इतकेंच काय तर सर्व धार्मिक स्थळे बंद झालीत.म्हणजे पर्यायाने भारताच्या समग्र अर्थव्यवस्थेवर कोरोनाचे गंभीर परिणाम दिसून येत आहे.

भारताचा २०२० मध्ये विकास दर ५.३ टक्के राहिलं असं भाकीत मुडीज या संस्थेनी केले होते.पण आता त्यांनी सांगितले आहे भारताचा विकास दर २.५ टक्के इतका राहील. मुडीज ही क्रेडिट रेटिंग संस्था आहे, एखाद्या देशाची आर्थिक प्रगती कशी राहील आणि त्या आधारावर त्या देशाची किंवा एखाद्या संस्थेची बाजारात पत किती राहील याचे नामांकन मुडीज करते. भारताचा विकास दर कमी राहील याचं नामांकन मुडीजच नव्हे तर भारताचे माजी प्रमुख सांख्यिकी तज्ज्ञ प्रणव सेन यांनीही भाकीत केले आहे की, भारताचा विकास दर ३ टक्क्यांहुन कमीच राहील.काही महिन्यासाठी अर्थव्यवस्था खिळखिळी राहिली किंवा सातत्याने विकास दरात घसरण होत असेल तर त्याला मंदी म्हणतात. हीच स्थिती जर बराच काळ टिकली आणि विकास दर नकारात्मक झाला तर महामंदी असें म्हणतात. या सर्व बाबीचा सर्वांगांणे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर कसा परिणाम होत आहे याचा सांगोपांग अभ्यास प्रस्तुत पेपरमध्ये करण्यात आला आहे.

जागतिक आर्थिक परिणाम :

जगातील बलाढ्य अर्थव्यवस्था असलेल्या देशामध्ये कोरोना–१९ या विषाणूने थैमान घातले आणि जणु काही मनुष्याच्या जगण्यावरच मूळातून परिणाम झाला. कोरोना संकटाच्या दूरगामी परिणामामुळे जागतिकीकरनाला एक मोठा धक्का बसलेला आहे. जागतिकीकरनामुळे प्रत्येक देशाचे इतर देशावरील परावलंबित्व मोठ्याप्रमाणात वाढलेले आहे आता या परावलंबीत्वाची झळ विकसित आणि विकसनशील देशाना बसल्यामुळे रिशेअरिंग चा विचार नव्याने सुरू झाला आहे. कोरोना विषाणूचा मानवी जीवनावर होणा–या परिणामसह विविध देशावरील आर्थिक परिणाम विश्लेषित करण्यासारखे आहे. जागतिक अर्थव्यवस्थेत चीनची भूमिका अतिशय महत्त्वाची आहे.चीन मधील ६० टक्के उत्पादन निर्यात प्रधान आहे जगभरात आर्थिक उत्पादनाच्या बाबतीतचीनचा दुसरा क्रमांक लागतो. या वर्षात चीनच्या आर्थिक वाढीत ०.५ ते १ प्रतिशतने घट संभवली आहे.

तर अमेरिका जगातील सर्वात शक्तिशाली महासत्ता असलेल्या देशाची अर्थव्यवस्था जाने. ते फ्रेब्रू. मध्ये मंद गतीने धावत होती. त्यात तेल बाजारातील घटत्या किंमतीचा फटका बसलेल्या शेल तेलाचे उत्पादन करणा–या सुमारे १२० अब्ज डॉलरचे कर्ज डोक्यावर असलेल्या कंपन्या बंद करण्याची वेळ आली. त्याचप्रमाणे इटलीच्या अर्थव्यवस्थेवर या विषाणू चा मोठा प्रभाव पडला आहे.टाळेबंदीमुळे पर्यटन,

आणि निर्यात क्षेत्रात मध्ये मोठ्या प्रमाणावर नुकसान होऊन मंदीचे सावट निर्माण झालेले आहे.त्यामुळे इटलीच्या विकास दरामध्ये १.२ प्रतिशत घट होण्याची संभाव्यता तेथील तज्ज्ञांनी वर्तवली आहे.कोरोना विषाणूच्या प्रादुर्भावामुळे टाळेबंदी केल्याने सगळ्या जगाची ५३ टक्के अर्थव्यवस्था स्तब्ध झाली आहे. हॉटेल, विमान सेवा, संबंधी क्षेत्रातील उद्योगांनी आपल्या कामगारांना घरी बसविले आहे.

आय.एम.एफ.च्या म्हणण्यानुसार गेल्या १०० वर्षातील ही आर्थिक क्षेत्रातील सगळ्यात मोठी मंदी असणार आहे. जगभरातील सर्व वित्तीय बाजार कोसळत आहे. अनेक उद्योगाची चाके कायमस्वरूपी थांबली आहे. सारं समाज जीवन ठप्प झालं आहे. काही वित्तीय तज्ज्ञ असे मानू लागले आहे की, वित्तीय बाजार वारंवार कोसळल्यामुळे विविध चलनाच्या दरातही घसरण होत असल्याचे दिसून येते.रुचिर शर्मा सारख्या अनेक तज्ज्ञाचे असे मत आहे की, ही कोरोना महामारी जर लवकर आटोक्यात आली नाही तर २००८ मध्ये जी मंदी आली होती तशी मंदी येऊ शकेल. आणि पुढे तर १९२९ मध्ये आलेल्या महामंदी सारखे प्रश्न निर्माण होईल.

भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम :

सध्या कोरोनामुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेची स्थिती अत्यंत बिकट झाली आहे.१३० कोटी लोकसंख्या असलेल्या भारतात या महासंकटाने जनजीवन विस्कळीत केले आहे. या शिवाय कोरोना विषाणूचा प्रादुर्भाव रोखण्यासाठी लागू केलेल्या टाळेबंदीमुळे देशांतर्गत अवलंबून असलेले लहान मोठे उद्योग ठप्प झाले आहे. हे वर्तमान काळातील संकट खूपच वेगळे आहे. कारण त्यात भीती, चिंता, व अस्थिरता निर्माण झाली आहे. मालाचे उत्पादन आणि पुरवठा आणि वितरणाची साखळी पूर्णपणे विस्कळीत झाली आहे. कारण अत्यावश्यक सेवा वगळता सर्वच कामे ठप्प झालेले आहे. आजच्या कोरोना या संकटामुळे अनेक क्षेत्र प्रभावित झालेले आहे, त्यात तयार माल आणि उपकरणाच्या किंवा वाहनाच्या सुट्या भागांची निर्मिती करणारे उद्योग तसेच विकेंद्रिकृत उत्पादन प्रकियेबरोबर जेथे अनेक बाबतीत उपकरणाच्या सुट्या भागांचे उत्पादन मूळ प्रकल्पामध्ये घेता येत नाही. तसेच सुट्या भागांचा पुरवठा ठप्प होणे, या बाबी संपूर्ण साखळी मोडून टाकू शकतात. अशा प्रकारच्या अडथळ्यांमुळे आंतरराष्ट्रीय कराराचा भंग होऊ शकतो तसेच आंतरराष्ट्रीय बाजारात कंपन्या काळ्या यादीत टाकण्याच्या जोखमीचाही समावेश आहे. कोरोना या संकटामुळे मोठ्या प्रमाणावर सुरुवातीच्या टप्प्यातच वास्तविक आणि संभाव्य नोक–या गमावण्याची आकडेवारी भीतीदायक आहे. विशेषत: त्याचा तात्काळ परिणाम उत्पादन निर्मिती क्षेत्रावरच नव्हे तर हॉटेल, उद्योगासह, वाहतूक, पर्यटन,शिक्षणावर, झाला आहे.

प्राथमिक क्षेत्र:

शेती हा भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा आहे. आपल्या देशाची लोकसंख्या ६८ ते ७०टक्के शेतीवर अवलंबून आहे. गेल्या काही दिवसांपासून कोरोना या विषाणू प्रादुर्भावाला रोखण्यासाठी देशात लागू झालेल्या टाळेबंदीचा संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्थेवर विपरीत परिणाम झाला आहे. ज्याचे पोट हातावर आहे, अश्या लोकांच्या हालअपेष्टाना पारावर उरलेला नाही. देशात सर्वाधिक रोजगार शेती क्षेत्राशी निगडित आहे. हातातोंडाशी आलेले रब्बी पिक काढणीला आलेले असतांना या टाळेबंदीमुळे मजूर मिळेनासे झाले. तसेच पिक काढणीत उपयोगाला येणारी यंत्रे मिळेनाशी झाली. त्यामुळे सर्व व्यवहार ठप्प झाले आहे. मालवाहतूक ठप्प झाली. लोकांच्या हालचालींवर बंदी आल्यामुळे फळे, भाजीपाला,फुले, यासारख्या नाशिवंत पिकांचे उत्पादन तोट्यात गेले आहे. त्यांच्या मालाला बाजारभाव मिळत नसल्यामुळे त्यांना आपला माल कवडीमोल भावाने विकावा लागतो. याचा परिणाम सामान्य जनतेला भोगावा लागत आहे.

त्याचप्रमाणे शेतीला पूरक व्यवसाय म्हणून भारतात पशुपालन व दुग्ध व्यवसायाला अधिक महत्त्व आहे.परंतु या टाळेबंदीमुळे दुधाच्या मागणी व पुरवठ्यवर प्रचंड परिणाम झालेला आहे. दुधाच्या बाबतीत अमुल या कंपनीने नमूद केले आहे की, भारतभर ३६ लाख शेतक–याकडून दुधाची खरेदी सुरू आहे संपूर्ण भारतभर दररोज १.५० लाख लिटर दुधाचे वितरण सुरू आहे परंतु टाळेबंदीचा काळ जसजसा वाढत जाईल तसतसा अमुलच्या दुधाची मागणी कमी होण्याची अपेक्षा आहे, असे अमूलचे आर.एस.सोधी यांनी एका मुलाखतीत सांगितले आहे.

मच्छीमाराची अवस्था काहीशी अशीच आहे. मार्च अखेर पासून मच्छिमारांनी मासेमारी साठी समुद्रात बोट ढकलली नाही. आता माशाच्या प्रजनाचा काळ व मासेमारी हंगाम तोंडावर येऊन ठेपला असताना या टाळेबंदीमुळे सागर वाहतूक, व्यापार, व हालचालींवर निर्बंध आल्यामुळे मच्छिंमारा समोर रोजगाराचा प्रश्न आ वासून उभा राहिला आहे. तसेच स्थानिक बाजारपेठेत माशांच्या मागणीत घट झाल्याने मच्छिंमाराना न भूतो न भविष्यती अश्या परिस्थितीला सामोरे जावे लागत आहे. त्याचप्रमाणे वनोत्पादन, तेंदुपांने आणि मोहाची फुले गोळा करणे या सारख्या आदिवासी भागातील लोकांनाही स्थानिक बाजारपेठ मिळत नसल्यामुळे मोठ्या प्रमाणावर फटका बसला आहे

या विषाणूमुळे समाजातील प्रत्येक घटकांवर प्रतिकुल परिणाम होतांना दिसून येत आहे. भारताच्या एकूणच उत्पादन, उत्पादन क्षमता, रोजगार आणि लोकांच्या आरोग्यावर गंभीर परिणाम होईल, तसेच या संकटामुळे सध्याच्या काळात जगभरातील तंत्रज्ञान, पुरवठा साखळी, रोजगार आणि भांडवल क्षेत्रावर वाईट परिणाम झाला आहे. या साथीमुळे आपली सर्वात मोठी आर्थिक परीक्षा पाहिली जाणार आहे. आपल्या अर्थव्यवस्थेची ताकद आणि संकटाला तोंड देण्याची क्षमता यांचीही परीक्षा असेल असं मत रिझर्व्ह बँक ऑफ इंडियाचेगव्हर्नर शक्तीकांत दास यांनी मांडले आहे.

द्वितीयक क्षेत्र:

कोरोना या विषाणूमुळे लादण्यात आलेल्या टाळेबंदीमुळे अनेक उद्योगांना फटका बसला असून हॉटेल, रिटेल, आणि त्याच्याशी संबंधित लहान मोठे उद्योग उध्वस्त झालेले आहे. या क्षेत्रातल्या जवळपास ४ कोटी कर्मचा–यावर बेरोजगारीची कु–हाड कोसळली आहे ही बातमी लोकमत या वृत्तपत्राने दिली आहे.

विशेषत: छोटे–मोठे उद्योग व कमकुवत उद्योग नष्ट होतांना दिसून येत आहे. त्यामुळे बँकांच्या भविष्यातील संपत्तीचा गुणवत्तेबद्दलचा अंदाज कमकुवत असल्याचे दर्शविते. तसेच आयात व निर्यात बंद होण्याच्या मार्गावर असल्यामुळे देशांची उत्पादन साखळी विस्कळीत होत आहे. भारताच्या निर्यातीत २५ प्रतिशत घट झाली असून ती अशीच होत राहिल्यास या सर्व निर्यातक वस्तूच्या किंमती वाढून महागाईच्या संकटांशी सामना करावा लागेल.

तृतीय क्षेत्र:

प्राथमिक आणि द्वितीय क्षेत्रावर अवलंबून असलेल्या अदृश्य सेवांचा समावेश तृतीय क्षेत्रामध्ये होतो. सेवांच्या पुरवठ्यवर अर्थव्यवहार हा माणसाच्या उत्क्रांतीचा शेवटचा टप्पा आहे. सध्या स्थितीमध्ये सेवाक्षेत्राची व्याप्ती वाढलेली असून सर्वच क्षेत्र या क्षेत्रांने काबीज केले आहे. परंतु या चालू वित्तीय वर्षामध्ये उदभवलेल्या कोरोना या विषाणूच्या प्रादुर्भावाचा या क्षेत्रावर मोठा परिणाम झाला आहे. शासनाने अवलंबलेल्या टाळेबंदीमुळे ,दळणवळण वितरक विषयकसेवा,बांधकाम, व स्थापत्य विषयक सेवा,शिक्षण, पर्यावरण, बँकिंग सेवा, वित्तीय पुरवठा, आरोग्य व सामाजिक सेवा, व वाहतूक विषयक सेवा या सारख्या सेवांवर मोठ्या प्रमाणावर प्रतिकूल परिणाम झाल्याचे दिसत आहे.

गेल्या तीन–चार दशकात देशाच्या आर्थिक–सामाजिक विकासात सेवाक्षेत्र हे जीवन रेखा ठरले असून त्यास अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त झाले आहे.प्रत्येक देशाच्या अर्थ व्यवस्थेत उत्पादन, उत्पन्न, व रोजगार यात सेवा क्षेत्राचे महत्त्व लक्षणीय आहे. जागतिकीकरण, खुली अर्थव्यवस्था व स्पर्धा यामुळे या क्षेत्राची झपाट्याने वाढझाली असली तरी मानव विरुद्ध कोरोना या विषाणूच्या लढाईत आपण सक्षम आहेत का? हा प्रश्न उद्भवत आहे म्हणूनच बिल गेट्स यांनी २०१५ म्हटले होते की,

"जग अजूनही साथीचे रोग पसरविना–या विषाणूचा सामना करण्यासाठी तयार नाही" कोरोना या विषाणूचा सामना करण्यासाठी शासनाने अवलंबलेल्या टाळेबंदी, जमाबंदी, वाहतूक बंदी, आंतरराष्ट्रीय विमान सेवा, रेल्वे सेवा, बस सेवा, राज्याच्या व जिल्हाच्या सीमा सील करून तसेच प्रार्थना स्थळे बंद केल्या मुळे सेवा क्षेत्राची फार मोठी हानी झाली आहे. जीवनावश्यक सेवा वगळता इतर बाबींवर याचा गंभीर परिणाम झाला आहे. मानवी जनजीवन विस्कळीत झाले आहे. कोरोना चा संसर्ग रोखण्यासाठी सेवापुरवठा करणा–यानां वस्तुपुरवठा करणा–या पेक्षाही वेगळ्या समस्याना सामोरे जावे लागत आहे. उदा–वैद्यकीय सेवा देणारे कर्मचारी व पोलीस यंत्रणे वरील ताण वाढत आहे. कोरोना विषाणूचा प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्थेवर अधिक मोठ्य प्रमाणावर झाल्यामुळे सेवा क्षेत्रातील कर्मचा–याच्या कामाचे तास कमी किंवा त्यांना वर्क फॉर्म होमची सुविधा दिली , तरी अर्थव्यवस्था केव्हा रुळावर येईल याचा अंदाज लावणे अशक्य आहे

सामाजिक, सांस्कृतिक व मानसिक परिणाम:

कोरोनाच्या प्रादुर्भावामुळे हतबल झालेल्या शासनाने टाळेबंदीचा पर्याय निवडल्याने त्याचा समाज जीवनावर प्रतिकूल परिणाम झाला. माणूस हा समाजशील प्राणी आहे परंतु या रोगाचा संसर्ग हा संपर्कातुन होत असल्यामुळे सामाजिक अंतर राखणे अगत्याचे असल्याने माणूस हा एकमेकांपासून दूर होत असल्याचे दिसून येत आहे. त्याचप्रमाणे समाजा मधील होणारे सण, उत्सव, लग्न सोहळे, यावरही बंधन आल्यामुळे समाज मन हेलावून गेले आहे. तसेच स्पोर्ट्स इंडस्ट्रीमधील क्रिकेट, फुटबॉल, या सारख्या खेळाच्या तारखा पुढे ढकलण्याने खेळ्प्रेमी तरुणाई वर त्याचा परिणाम झाला आहे. सांस्कृतिक कार्यक्रमावर बंदी असल्याने या कोरोना च्या काळात माणसाची मानसिकता कशी असेल आणि ती सांभाळणे किती गरजेचे आहेहे प्रकर्षाने दिसून येते,त्यामुळे अनेक मानसिक आरोग्य विषयक प्रश्न निर्माण झाले आहेत? पर्यायाने या सर्व बाबींचा परिणाम व्यक्तीच्या दरडोई उत्पन्नावर व त्याच्या उत्पादन क्षमतेवर होत असल्याचे दिसून येत आहे.

शिक्षणावरील परिणाम:

कोरोनामुळे शिक्षण क्षेत्रात जगात जवळ दीडशे कोटी विद्यार्थ्यावर याचा परिणाम झाला आहे. शाळा ,महाविद्यालये बंद झाली आहे आणि परीक्षाही ठप्प झाल्या आहेत. पुढच्या काळात शाळा व महाविद्यालयात न जाता, ई–बुक्स वाचणे आणि ई लर्निंगनेच अभ्यास करणे वाढवावे लागेल. पण भारतासारख्या ठिकाणी अजून तरी ई लर्निंगच्या वापरावर ब–याच मर्यादा आहेत. लहान मुलांवर याचा गंभीर परिणाम होणार आहे, परंतु येत्या काळात टेली वर्किंग आणि व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग वाढण्याची शक्यता आहे. कोरोना नंतरच्या जगात टिकून राहण्यासाठी शिक्षण क्षेत्रातील सर्वांनीच आपली मानसिकता बदलणे गरजेचे आहे असे मत डॉ. भालचंद्र मुणगेकर यांनी व्यक्त केले आहे.

कोरोनाचा परिणाम जागतिक अर्थव्यवस्थेवर होणार असून त्याची मोठी किंमत भारतासारख्या विकसनशील देशाला मोजावी लागणार आहे. विकास दरात ऐतिहासिक घसरण होणार असून बेरोजगारी मोठ्य प्रमाणावर वाढणार आहे. अशा काळात नोकरीच्या मागे न लागता विद्यार्थी स्वत:च्या कुवतीनुसार छोटे–मोठे उद्योग

करून अर्थार्जन करू शकतील असे सामर्थ्य विद्यापीठांना विद्यार्थ्यांमध्ये निर्माण करावे लागेल. प्राध्यापकांनी केवळ ग्रंथालयात बसून अभ्यासक्रम न ठरवता औद्योगिक क्षेत्रातील लोकांच्या काय अपेक्षा आहेत याचाही विचार केला पाहिजे. कोरोनाच्या या संकटात संशोधनाचे महत्त्व अधोरेखित झाले आहे. संशोधनात मानवी समूहांचे अस्तित्व टिकविण्याचे सामर्थ्य असले पाहिजे. संशोधन हा विद्यापीठाचा आत्मा आहे असे आपण आजवर म्हणत होतो. परंतु समाजाचे प्राण वाचविण्याचे काम संशोधनातून झाले पाहिजे व ही काळाची गरज आहे असे मत भारती विद्यापीठाचे कुलगुरू डॉ. शिवाजीराव कदम यांनी व्यक्त केले आहे.

निष्कर्ष:

वर्तमान परिस्थितीत देशाच्या अर्थ व्यवस्थेवर आणि जन सामन्यावर असणारे कोरोना चे संकट अत्यंत बिकट आहे. या कोविडं–१९ अर्थात कोरोना विषाणूच्या प्रसाराचा भारतासह संपूर्ण जगातील प्रत्येक घटकांवर खोलवर परिणाम झालेला आहे. भारतासह जगभरातील अनेक भागात माणसांच्या हालचाली, साधनसामुग्री,वाहतूक, आदी सर्वच क्षेत्रात एक प्रकारे लकवाच मारला आहे.

या विषाणूचा प्रादुर्भाव रोखण्यासाठी टाळेबंदीसारखा पर्याय निवडल्यामुळे अर्थ व्यवस्थेचे आणि जनसामान्याचे आर्थिक चक्र कोलमडले आहे. या कोरोनाच्या काळात जलद गतीने वैद्यकीय व्यवस्था, आपत्ती• रचना, यांचे बळकटीदार ,सक्षमीकरण, करण्यासाठी आणि त्याची कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी गंभीरतेने प्रयत्न व्हायला पाहिजे होते. काही प्रमाणात ते झाले सुध्दा. परंतु टाळेबंदी हा कोरोनाचा सामना करण्याचा किंवा प्रादुर्भाव रोखण्याचा तात्पुरता उपाय आहे. त्यालाच एकमेव उपाय समजून केवळ त्या दिशेने पावले उचलणे उद्याच्या अराजकतेला आमंत्रण देणारे ठरू शकते.

अर्थतज्ज्ञ जेम्स मिडवे यांच्या मते, कोरोनाची तुलना आपण एखाद्या युद्धाशी करीत असलो तरी युद्धकाळात अर्थव्यवस्थेची जी रणनीती असते ती आजच्या परिस्थितीत वापरता येत नाही.युद्धकाळात मोठ्य प्रमाणावर उत्पादन घेतले जाते त्याला वॉरटाईम अर्थव्यवस्था म्हणतात. तर सध्या आपल्याला 'अँटी वॉरटाईम अर्थव्यवस्थेची गरज आहे.उत्पादन मोठ्य प्रमाणावर कमी करायचं आहे. भविष्यात कुठल्याही साथीच्या रोगासमोर टिकाव धरायचा असेल तर आपल्याला अशी व्यवस्था निर्माण करावी लागेल जी लोकांच्या उपजीविकेवर परिणाम न करता उत्पादन कमी करू शकेल.अर्थव्यवस्था म्हणजे केवळ वस्तुंची खरेदी–विक्री नव्हे तर त्याला वेगळ्या मानसिकतेची गरज आहे.साधनसंपत्तीचा वापर करून जगण्यासाठी आवश्यक वस्तूंचं उत्पादन करणे, हा अर्थव्यवस्थेचा गाभा आहे.

संदर्भ सूची:

१. गोडबोले अच्युत, देशमुख दीपा (२०२०),कोरोना– कोविड–१९, कोरोना विशेषांक, पुरोगामी जनगर्जना ,पुणे वर्ष–६, अंक–५, एप्रिल

२. गोडबोले अच्युत, देशमुख दीपा (२०२०), कोरोनाचे विश्व: कोरोनाचे मानवी जीवनावर होणारे तात्कालिक आणि दूरगामी परिणाम (उत्तरार्ध), साधना मासिक, ९ मे

३. देव एस.महेंद्र व सेनगुप्ता राजेश्वरी (२०२०), भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम, इंदिरा गांधी विकास व संशोधन संस्था, मुंबई

४. कामत मनोज (२०२०), कोरोनाचे आर्थिक परिणाम, दैनिक गोमंतक, १५ जुलै,

५. मिडवे जेम्स (२०२०), दी ऑन्टी वारटाईम इकोनोमी, ट्रीबुन मासिक, युनायटेड किंग्डम

६. मुणगेकर भालचंद्र (२०२०), कोरोनानंतरच्या जगात टिकून राहण्यासाठी मानसिकता बदल, दैनिक लोकमत, १० मे

डॉ.सिध्दार्थ हरिदास मेश्राम
सहाय्यक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग)
सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय,
कामठी,नागपूर–४४१००१

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - III OCTOBER - DECEMBER - 2020

ENGLISH PART - III / MARATHI / HINDI PART - I

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भारतातील योग पर्यटन : संधी आणि आव्हाने **प्रा. डॉ. सिध्दार्थ हरीदास मेश्राम**	१-१०
२	कोविड-१९ च्या काळात योगाचे महत्व पटवून देण्यासाठी जाहिरातींमधून मानवी भावनांचा सकारात्मक वापर **प्रा. कृष्णा गणपत सावंत**	११-१७
३	कोविड-१९ च्या काळात योगविषयक भूमिका **डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे**	१८-२१
४	कोरोना काळात योगसाधना महत्वाची हे पोस्टर माध्यमंद्वारे केलेली प्रसिद्धी **श्री. विपिन राजेंद्र सोनावणे** **प्रा. डॉ. शिरिष अंबेकर**	२२-२७
५	योग व कोरोना **प्रा. डी. एम. बिराजदार**	२८-३१

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१. भारतातील योग पर्यटन : संधी आणि आव्हाने

प्रा. डॉ. सिध्दार्थ हरीदास मेश्राम
सहाय्यक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय, कामठी, जिल्हा-नागपूर.

गोषवारा

भारत हे योगाचे जन्मस्थान आणि प्रमुख ठिकाण आहे. सोबतच हे हवामान क्षेत्र, निसर्ग, संस्कृती, लोक परंपरा, रूढी, भाषा, भोजन, वास्तुकला, संगीत, नृत्य, धर्म, तत्वज्ञान इत्यादींच्या विलक्षण विविधतेचे घर आहे. भारत ही बराच विरोधाभास असलेली भूमी आहे. काही ठिकाणी हिरवीगार पालवी आहे, काही ठिकाणी वाळवंट आहेत तर काही ठिकाणी बर्फाने झाकलेली किवां आच्छादललेली आहे. भारताला निसर्गाची सुंदर देणगी लाभली आहे. भारताला जगातील एक अतिशय सुंदर पर्यटन स्थळ बनवण्यासाठी सर्व ठिकाणे, एडव्हेंचर, पर्यावरणीय व्यवस्था, अध्यात्म, योग, मेडिसीन, वन्यजीव किंवा शेती इत्यादी क्षेत्रात, देशात मुबलक संधी आणि पर्याय उपलब्ध आहेत. पर्यटन विकसित करण्यासाठी, रोजगार निर्माण करण्यासाठी आणि मोठ्या प्रमाणात परकीय चलन मिळवण्याच्या दृष्टीने अनेक संधी आहेत, परंतु त्याच वेळी काही आव्हानेसुद्धा आहेत. प्रस्तुत पेपरमध्ये भारतातील पर्यटनाच्या संधींचा आढावा आणि पर्यटन विकासासमोरील आव्हानांची माहिती दिली आहे. पर्यटनाला चालना देण्यासाठी आणि योग पर्यटनासाठी भारत एक प्रसिद्ध स्थान बनविण्यासाठी काही सूचनाही देण्यात आल्या आहेत.

बिजशब्द : योगा, पर्यटक, पर्यटन (परकीय चलन), आरोग्य,

बिजशब्द: योगा, पर्यटक, पर्यटन (परकीय चलन), पर्यटन संधी व आव्हाने,

प्रस्तावना

योग पृथ्वीवरील मानवजातीएवढा जुना असल्याचे म्हटले जाते, याला समर्थन करण्यासाठी कोणतेही पुरावे नाहीत परंतु मोहेंजो दारो आणि हडप्पा शहरांच्या अवशेषांमध्ये उत्खनन करणाऱ्यांना योगासारख्या आकृत्यांशी जुळणारे साबण,दगड सील सारखी चित्रे कोरलेली आढळली. या आकडेवारीवरून असे सिद्ध होते की त्याची उत्पती 5,000 वर्षापूर्वी किंवा त्याहून अधिक भारतात झाली आहे.वास्तविक योगाचा जन्म भारतात होतो परंतु त्याचा जन्म झाल्यानंतर तो वैदिकच्या वेगवेगळ्या कालखंडांतून जातो.

ऐतिहासिक काळापासून मानवजातीला प्रवासाबद्दलचे आकर्षण आहे. युगानुयुगे, माणसाला इतर ठिकाणी प्रवास करण्याची आणि इतर ठिकाणची प्रथा, अन्न, हवामान, सराव आणि जीवनशैली जाणून घेण्याची इच्छा असते. सुरुवातीच्या काळात प्रवास हा आनंद आणि कामाच्या परिस्थितीतून सुट्टी मिळविण्याच्या उद्देशाने नव्हता. प्राथमिक उद्देश,व्यापार आणि व्यावसायिक क्रियाकलापांशी संबंधित होता. पूर्वीचा प्रवास अशा प्रकारे कच्चा माल शोधण्याशी,आणि व्यापारात गुंतवणूक करण्याशी संबंधित होता.

तसेच आणखी एक प्रकारचा प्रवासी हेतू होता ज्यांचा संबंध तीर्थक्षेत्राशी होता. 18 व्या शतकादरम्यान, युरोपमध्ये वार्षिक सुट्टीची सुरूवात केली गेली जी पर्यटनाच्या विकासासाठी महत्त्वपूर्ण होती. एकोणिसाव्या शतकात उल्लेखनीय तांत्रिक विकास झाला,त्यामुळे रेल्वेची व जहाजांची वाढ झाली. त्यानंतर सामाजिक व आर्थिक घटकांमधील बदलांमुळे पर्यटन उद्योगात वाढ झाली.

पर्यटन हा आधुनिक जीवनाचा अविभाज्य भाग आहे. पर्यटनाच्या वाढीवर विविध घटकांचा प्रभाव पडत असतो. आंतरराष्ट्रीय व्यवसायाची वाढ, नोकरी करणाऱ्या तरुणांची उच्च टक्केवारी,आवश्यक असणा-या परिषद, सभा, व्यापार मेळावे आणि प्रदर्शन या गोष्टींच्या ताणतणावापासून मुक्त होण्यासाठी, मानसिक आनंद मिळविण्यासाठी म्हणून प्रवास करणे. इतर देशांशी राजकीय, सांस्कृतिक आणि वैज्ञानिक संवाद साधणे आणि चांगल्या परिवहन सुविधांची उपलब्धता यामुळे पर्यटन वाढण्यास मदत होते. सध्यातरी पर्यटन हा प्रतिष्ठेचा विषय बनला आहे.

भारत हा जगातील लोकसंख्येच्या बाबतीत दुसरा क्रमांक आणि क्षेत्रफळाच्या बाबतीत सातव्या क्रमांकाचा देश असल्याने हा विरोधाभासी देश आहे. याचे एकूण क्षेत्रफळ 3,287,263 चौरस किलोमीटर आहे. भारत उत्तर ते दक्षिणेस 3,214 किमी आणि पूर्वेकडून पश्चिमेकडे 2,933 किमी मोजतो.

शतकानुशतके वेगवेगळ्या कारणांमुळे भारत आकर्षणाचे केंद्र ठरले आहे. काहींनी ते संपत्तीचा खजिना म्हणून पाहिले, तर काहींनी ते रहस्यमय अध्यात्मवाद आणि सखोल तत्वज्ञानाचे स्थान म्हणून पाहिले तर काहींनी ते धर्माची भूमी म्हणून पाहिले तर काहीजण वेगवेगळ्या प्रकारच्या वनस्पती आणि प्राण्यांनी मोहित होऊन, त्याच्या स्वभावामुळे आकर्षित झाले. भारताला भव्य शिल्पकलेचा वारसा आहे. येथे विविध प्रकार आणि शैलीची मंदिरे आहेत. मंदिरे, विहार, स्तूप, बासाडी आणि इतर पूजास्थळे, दगड कोरलेल्या कलेसाठी प्रसिद्ध आहेत. पर्यटकांवर त्याचा जादूचा परिणाम झाला आहे कारण त्याचे सौंदर्य आणि ही मंदिरे बनवण्यासाठी वापरलेले तंत्रज्ञान अजूनही शंकास्पद आहे. भारतीय संगीत, चित्रकला, नृत्य, साहित्य, तत्वज्ञान, औषधी ज्ञान, अन्न सर्वकाही पर्यटकांना, विशेषतः परदेशी लोकांना आकर्षित करते.भारताचा समृद्ध सांस्कृतिक वारसा आणि परंपरा याचा पर्यटनाच्या विकासाशी फार जवळचा संबंध आहेत. भारताला पर्यटनाची प्राचीन परंपरा आहे. हजारो वर्षांपासून चालणारी संस्कृती आणि परंपरा, वेगवेगळ्या प्रकारच्या शर्यती, भव्य स्मारके, वास्तुशिल्प, उत्कृष्ट घनदाट जंगले, हिरवळ, दरी, धबधबे, धार्मिक केंद्रे, समुद्रकिनारे, वाळवंट या सर्व गोष्टी मोठ्या संख्येने पर्यटकांना आकर्षित करतात.

गेल्या काही वर्षांमध्ये, पर्यटन जवळजवळ 9% ते 10% अनुक्रमे जगाच्या जीडीपी आणि रोजगारासाठी जागतिक स्तरावर योगदान देत आहे. आंतरराष्ट्रीय पर्यटकांची संख्या वाढत आहे. जगभरातील देश विकासात्मक धोरण म्हणून पर्यटनावर भर देत आहेत. असे अनेक घटक आहेत जे लोकांना पर्यटन कार्यात सामील होण्यासाठी प्रेरित करतात.विशेष म्हणजे वैद्यकीय आणि निरोगीपणा विभाग तेजीत आहे.

भारतातील पर्यटन हे सेवा क्षेत्रातील उद्योगांपैकी एक वेगवान प्राप्तीचे साधन आहे. भारतामध्ये पर्यटन क्षेत्राकडून प्राप्त झालेला निधी आणि पर्यटक दळणवळण याची माहिती पुढील तक्त्याद्वारे स्पष्ट करता येईल.

तक्ता क्र.1

भारतातील पर्यटना मधून परकीय चलन मिळकत

वर्ष	परकीय चलन (मिलियन मध्ये)	मागील वर्षाच्या तुलनेत प्रतिशत प्रमाण
2009	53754	4.8
2010	66172	23.1
2011	83036	25.5
2012	95607	15.1
2013	107563	12.5
2014	120367	11.9
2015	134844	12.0
2016	154146	14.3
2017	177874	15.4
2018	194881	9.6

स्त्रोतः भारतीय पर्यटन सांख्यिकी -2019

तक्ता क्र.2

भारतात येणारे विदेशी पर्यटक

वर्ष	पर्यटक (मिलियन मध्ये)	मागील वर्षाच्या तुलनेत प्रतिशत प्रमाण
2009	5.17	-2.2
2010	5.78	11.8
2011	6.31	9.2
2012	6.58	4.3
2013	6.97	5.9
2014	7.68	10.2
2015	8.03	4.5
2016	8.80	9.7
2017	10.04	14.0
2018	10.56	5.2

देशाच्या महत्वाच्या दहा राज्यामध्ये पर्यटकाच्या देशांतर्गत आणि बाहेरील पर्यटक भेटीची आकडेवारी पुढीलप्रमाणे-

तक्ता क्र.3

देशी पर्यटक राज्यवार भेटी

क्रमांक	राज्य/केंद्रशासित प्रदेश	पर्यटक आकडेवारी	प्रतिशत प्रमाण
1	तामिळनाडू	385909376	20.8
2	उत्तरप्रदेश	285079848	15.4

3	कर्नाटक	214306456	11.6
4	आंध्रप्रदेश	194767874	10.5
5	महाराष्ट्र	119191539	6.4
6	तेलंगणा	92878329	5.0
7	वेस्ट बंगाल	85657365	4.6
8	मध्यप्रदेश	83969799	4.5
9	गुजरात	54369873	2.9
10	राजस्थान	50235642	2.7
महत्वाची दहा राज्याची एकूण आकडेवारी		2055696101	84.5
इतर		379962786	15.5
एकूण आकडेवारी		2435658887	100

स्त्रोत: भारतीय पर्यटन सांख्यिकी -2019

तक्ता क्र.4

विदेशी पर्यटक राज्यवार भेटी

क्रमांक	राज्य/केंद्रशासित प्रदेश	पर्यटक आकडेवारी	प्रतिशत प्रमाण
1	तामिळनाडू	6074345	21.0
2	महाराष्ट्र	5078514	17.6
3	उत्तरप्रदेश	3780752	13.1
4	दिल्ली	2740502	9.5
5	राजस्थान	1754348	6.1
6	वेस्ट बंगाल	1617105	5.6
7	पंजाब	1200969	4.2
8	केरळ	1096407	3.8
9	बिहार	1087971	3.8
10	गोवा	933841	3.2
महत्वाची दहा राज्याची एकूण आकडेवारी		25364754	87.9
इतर		3491621	12.1
एकूण आकडेवारी		28856375	100

संदर्भ साहित्याचा आढावा

गुडरिक आणि गुडरिक (1987) च्या मते, वैद्यकीय पर्यटन त्याच्या नियमित पर्यटन सुविधांव्यतिरिक्त जाणीवपूर्वक आरोग्य सेवा आणि सुविधांना प्रोत्साहन देऊन पर्यटकांना आकर्षित करण्याचा एक प्रयत्न आहे. लोक या सुविधांची उपलब्धता किंवा वैकल्पिक उपचारांमुळेच आरोग्य सेवांसाठी

सेवांसाठी सीमारेषा ओलांडून जाऊ शकते.त्यांच्या स्वतः च्या देशात योग, आयुर्वेद, एक्युप्रेशर इ. सारख्या थेरपी,जास्त किंमतीवर उपलब्ध आहेत.

गुप्ता एस.पी. (२००२) भारतातील पर्यटकांसाठी योग म्हणजे शारीरिक तंदुरुस्ती आणि मानसिक उन्नती या दोन्ही गोष्टी होत.पण एकदा त्याने योगासने सुरू केल्यावर त्याला त्या वस्तुस्थितीची जाणीव होते.योगिक व्यायाम म्हणजे केवळ शारीरिक तंदुरुस्तीच नव्हे तर ती मनाची एकाग्रता ज्याद्वारे वास्तविक स्वतः ची जाणीव होते.

अग्रवाल ए.के. (2008) भारत हा जगाची आध्यात्मिक राजधानी म्हणून योग मानला जातो. विदेशी पर्यटक योग शिकण्यासाठी आणि अध्यात्मासाठी देशात येतात. भारतात काही धर्मांनी आध्यात्मिक मोक्ष देश असे स्थान आहे,मोक्ष प्राप्त करून विश्वासांना जन्म दिला आहे त्यामुळे या देशातील आकर्षण वाढले आहे.

संशोधन पेपरची उद्दिष्टे

1. भारतातील योग पर्यटनावर प्रकाश टाकणे.
2. पर्यटन विकासाच्या संधी आणि आव्हानाची चर्चा करणे.
3. पर्यटन विकासासाठी शिफारशी सुचविणे.

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत पेपर दुय्यम सामग्रीवर आधारित आहे. यामध्ये विविध प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्याचा अवलंब करण्यात आला आहे.

भारतातील योग पर्यटन

योग म्हणजे शरीर, मन आणि आत्मा एकत्र करणे. हे आपल्या शरीराच्या पवित्राबद्दल अधिक जागरूक होण्यास मदत करते. ताणतणावाच्या जीवनशैलीतून योगाद्वारे शातंता निर्माण होते. योगासनेचा अवलंब करण्याकडे लोक का आकर्षित होतात हे मुख्य कारणांपैकी एक आहे.

भारत विविध प्रकारच्या आरोग्य सेवांच्या बाबतीत सूट देते. वाजवी किंमतीवर पर्यटकाना ऑफर देऊन सुविधा देते. हेल्थकेअर टूरिझमचे काही भिन्न प्रकार देऊ केले आहेत.देशामध्ये योग, ध्यान, आयुर्वेद, ॲलोपॅथी, निसर्गोपचार, युनानी इत्यादींचा समावेश आहे ज्यामुळे भारत अद्वितीय बनतो. योग उपचारांच्या वैकल्पिक प्रकारांचे मूल्य वाढत आहेत, त्यामुळे योगावर नैसर्गिकरित्या लक्ष केंद्रित करत आहेत. भारतात शिक्षण आणि संशोधनाच्या विकासावर लक्ष केंद्रित करण्यासाठी एक समर्पित विभाग आहे. योग हा उपचार शीर्षस्थानी आहे आणि अलिकडच्या वर्षांत जागतिक स्तरावर याची लोकप्रियता वाढत आहे.आता भारताबाहेरील लोकांनीही या शक्तिशाली थेरपीद्वारे आपले शरीर आणि मन बरे होण्यासाठी योगाभ्यास सुरू सुरू केला आहे. आंतरराष्ट्रीय पर्यटन उत्पादने म्हणून योगा पर्यटन विकसित आणि प्रोत्साहन देण्याच्या संभाव्यतेची जाणीव करून देत आहे. पर्यटक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार यांनी देखील यासाठी योग्य

योजना व धोरणे बनवण्यास सुरवात केली आहे. मुख्य पर्यटन उत्पादन म्हणून योगास प्रोत्साहन देत आहेत.

भारतातील योग पर्यटनास संधी

आंतरराष्ट्रीय प्रमाणकानुसार वैद्यकीय व निरोगी सेवा पुरवून योगा पर्यटनाला चालना देण्यासाठी भारत सक्षम आहे. भारतातील काही अशी राज्ये आहेत की, इतर देशाच्या तुलनेत कमी किंमतीवर आणि नवीन शैक्षणिक योग कोर्स सुरू करून, योग पर्यटनाला चालना देण्यासाठी,त्यांना उत्पादन निर्यातीत सुविधा म्हणून योग पर्यटन विकसित करण्यासाठी वाव आहे. जगातील वैद्यकीय उपचारांच्या सर्वात प्राचीन प्रणालींपैकी योग ही एक बाब आहे.

निरोगी पर्यटन आणि वैकल्पिक उपचारांची वाढती मागणी : या वेगवान युगात लोक त्यांच्या आयुष्याबद्दल चिंताग्रस्त आहेत म्हणून विकसनशील देशांमध्ये, वैकल्पिक आरोग्य सेवांच्या मागणीत मोठी वाढ झाली आहे. योगासारख्या काही अनन्य वैकल्पिक आरोग्य सेवांचे केंद्र भारत आहे. आयुर्वेद, होमिओपॅथी, निसर्गोपचार इत्यादी पर्यायांमुळे परदेशी लोकांना भारतात येण्याची प्रेरणा मिळते.आधुनिक जगात योगाला मुख्य प्राधान्य देण्याची काळाची गरज आहे.

आंतरराष्ट्रीय प्रवास आणि पर्यटनाची किंमत कमी: भारतामध्ये मोठ्या प्रमाणात पर्यटकांना आवश्यक सोयीस्कर सर्व सुविधा विकसित केल्या जाऊ शकतात. येथे विकसित महामार्ग, नैसर्गिक आणि कृत्रिम आकर्षणे, कमी किंमतीच्या नॉन-स्टॉप फ्लाइट्स, लक्झरी हॉटेल आणि रिसॉर्ट्स आहेत. पॅकेजेस हे सर्व परिणाम स्वस्त दळणवळणावर आधारित आहेत जी थेट जगातील लोकांना आकर्षित करू शकते.

भारतातील पर्यटन आणि आरोग्य सेवा क्षेत्रातील खाजगीकरण आणि विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणूक: अलिकडच्या वर्षांत आरोग्य क्षेत्रातील एफडीआय साठी भारताने दरवाजे उघडले आहेत. खासगी क्षेत्राच्या सहभागामुळे भारतीय रुग्णालयांची उपकरणे आणि पायाभूत सुविधांची प्रगती झाली. खासगी क्षेत्राने योग केंद्र आणि योगाकडून उपचार घेणाऱ्या पर्यटकांसाठी उत्पादन तयार करणे व ते विकसित करण्यातही मोठी गुंतवणूक केली. या सर्वांमुळे भारत जागतिक स्तरावर स्पर्धात्मक झाला आहे. विशेषत: भारतीय श्रीमंत आणि परदेशी रुग्णांवर नजर ठेवून आहे.

इंग्रजी बोलणाऱ्या कर्मचाऱ्यांची उपलब्धता: भारत हा जगातील सर्वात मोठा इंग्रजी बोलनारा देश आहे. योग केंद्रांवर इंग्रजी बोलणाऱ्या कर्मचाऱ्यांची उपलब्धता असल्यामुळे वेगवेगळ्या देशांमधून बरेच इंग्रजी बोलणा-या रुग्णांना आकर्षित करण्यात मदत होते. तर इतर जसे- थायलंड, चीन या देशामध्ये ही भाषेची गुणवत्ता कमी आहे.

भारताकडे अतुलनीय आकर्षण आहे: - भारत हे पर्यटनासाठी जगातील प्रसिद्ध आणि रोमांचक स्थान आहे. ह्या देशात अद्वितीय जीवनशैली असलेले लोक, जत्रा आणि सण, अन्न, वन्यजीव, वाळवंट,

समुद्रकिनारे तसेच हिमालयातील सर्वाधिक बर्फाच्छादित शिखर तसेच समृद्ध आणि वैविध्यपूर्ण संस्कृती आहे, याचा सर्वात जुना इतिहास आणि परंपरा आहे.

परदेशी रुग्णांना नियोजित योग पॅकेजेस मिळू शकतात: - पर्यटन उद्योग मध्ये खासगी क्षेत्राच्या सहभागासह आता योगासाठी रूग्णांना भारतात जाणे येणे सोपे झाले आहे, जी विमाने,दळणवळण , हॉटेल्स, उपचार अशा कारणासाठी आता त्यांना पॅकेज डील मिळू शकतात.

भारतातील योग पर्यटन क्षेत्रातील आव्हानेः

आंतरराष्ट्रीय स्पर्धा: या जागतिक स्पर्धेच्या युगात बऱ्याच देशांना आरोग्य पर्यटन विकासाचे मूल्य समजले आहे. जागतिकीकरणामुळे योगोपचार ही आता भारतीय मालमत्ता नाही. आता बऱ्याच देशांनी योग केंद्रे विकसित केली आहेत आणि मुख्य योग पर्यटन स्थळ आणि उत्पादने म्हणून त्यांची जाहिरात करण्यास सुरवात केली आहे. योगायोगाने पर्यटनाचा विकास करण्याच्या बऱ्याच संधी भारतामध्ये आहेत पण तरीही भारताला इतर देशासोबत स्पर्धेचा सामना करावा लागतो.विविध देश जसे (इंडोनेशिया, थायलंड, मलेशिया, सिंगापूर, फिलीपिन्स इ.) योग पर्यटनाला सक्रियपणे प्रोत्साहित करीत आहेत.

उद्योगातील विविध कंपन्यामध्ये संस्थात्मक संबंध नसणे: उद्योगातील विविध कंपन्यामध्ये समन्वय आणि संबधातील कमतरता आहे. जसे - (योग केंद्र, विमा कंपन्या आणि ट्रॅव्हल कंपन्या) भारतीय आरोग्य सेवा पर्यटन उद्योगातील मुख्य समस्या आहे. भारतात पर्यटन योगाच्या विकासासाठी हा समन्वय आवश्यक आहे.

योग्य सुरक्षा आणि सुरक्षा सुविधांचा अभाव: जेव्हा एखादी व्यक्ती आपल्या ओळख नसलेल्या ठिकाणाहून प्रवास करते तेव्हा नेहमीच त्या स्थानावर योग्य सुरक्षा आणि सुरक्षा उपायांची अपेक्षा असते. अनेक प्रचलित स्थळावर दहशतवादी हल्ले वाढल्यामुळे पर्यटकांना योग्य सुरक्षा आणि सुरक्षा पुरविण्यात भारत कमी पडत आहे. पर्यटकांना सुरक्षा पुरविणे हे भारतीय पर्यटन उद्योगासाठी सर्वात मोठे आव्हान आहे.

कमकुवत पायाभूत सुविधा आणि माहितीः भारत ही एक वेगवान विकसनशील अर्थव्यवस्था आहे परंतु आता पर्यंत सुद्धा देशातील पायाभूत सुविधा पाहिजे त्या प्रमाणात विकसित नाहीत. पायाभूत सुविधेच्या बाबतीत विकसित देशांच्या तुलनेत खूप मागे आहे.

सरकारला भक्कम आधार नाही: कोणत्याही उद्योग आणि विकासात सरकारची भूमिका नेहमीच महत्वाची असते.शासन योग पर्यटनाच्या विकासासाठी गंभीर नाही. त्याचा परिणाम म्हणजे भारतातील पर्यटन उद्योग अविकसित असल्यामुळे आता त्या उद्योगास अनेक खालील समस्या भेडसावत आहेत.

(अ) कोणतेही नियम नाहीत, (ब) कर आकारणी मध्ये विसंगती, (क) रस्त्यावरील नोकरशाहीची अडथळे, (ड) जमिनीवरील कोणत्याही कामामध्ये सुधारणा नाहीत (इ) दीर्घ मुदतीच्या गुंतवणूकीस अनुकूल धोरणाचा अभाव आणि (ई) दहशतवादी हल्ल्या संदर्भात अस्थिरता आणि जातीय तणाव.

एक अस्वच्छ देश म्हणून प्रतिमा : परदेशात भारत अस्वच्छ देशासाठी ओळखला जातो. परदेशी देशांच्या लोकांच्या मनात भारताची वाईट प्रतिमा आहे. भारत सरकारने देश स्वच्छ करण्यासाठी स्वच्छ भारत अभियान सारखे नवीन मिशन सुरू केले, पण तरीही देश या समस्या पार करू शकत नसल्याचे दिसून येते.

भारतातील विविध रूग्णालयात समान किंमतींच्या धोरणांचा अभाव: भारतीय आरोग्य सेवा उद्योगात योग्य किंमत धोरणाचा अभाव आहे. योग केंद्र आणि रुग्णालयामध्ये समान उपचार किंवा सेवेसाठी आकारलेल्या किंमतीत बरीच तफावत आहे. प्रत्येक सेवा प्रदाता उपचारांसाठी स्वतःची किंमत आकारतो. हा किमंतीतला फरक रूग्णांना गोंधळात टाकतात.

आरोग्य सेवा आणि पर्यटन क्षेत्रात गुंतवणूकीसाठी निधी आणि भांडवलाचा अभाव: योग पर्यटन विकसित करण्यासाठी प्रचंड निधीची गरज आहे कारण त्यासाठी योग्य पायाभूत सुविधा आणि मनुष्यबळाचा विकास करणे आवश्यक आहे. परंतु आजपर्यंत,खासगी गुंतवणूकदारांना या क्षेत्रात गुंतवणूक करण्यास रस नव्हता. त्यामुळे भारतीय पर्यटन उद्योगात सरकार तसेच खाजगी क्षेत्राकडून भांडवली गुंतवणूकीची कमतरता दिसून येत आहे.

भाषेशी संबंधित समस्या: इंग्रजी मोठ्या प्रमाणावर बोलली जाणारी भाषा आहे याबद्दल काही शंकाच नाही. हे भारताला कळून चुकले आहे. त्यामुळे वेगवेगळ्या देशांमधून बऱ्याच इंग्रजी भाषिक रुग्णांना आकर्षित करण्यात समर्थ ठरत आहे. परंतु तरीही काही विशिष्ट भाषा न येणे हा एक अडथळा आहे कारण तेथे वेगवेगळ्या देशांतील बरेच इंग्रजी नसलेले ग्राहक बोलत आहेत. त्यामुळे त्यांच्या भाषेचे ज्ञान न घेता त्यांना योग्य सेवा प्रदान करणे फार अवघड आहे.

निकृष्ठ पायाभूत सुविधा :- रस्ते, पाणी व्यवस्था, सांडपाणी व्यवस्था,मलनिःसारण व स्वच्छता आणि सार्वजनिक सुविधा यासारख्या सुविधा मध्ये भारत अजूनही कमी पडत आहे. काही शहरे वगळता या सुविधा अत्यंत वाईट स्थितीत आहेत. योग्य पायाभूत सुविधा ही आपल्या गरजांपैकी एक आहे ज्यामध्ये आपल्या देशाची कमतरता आहे आणि त्याला विकसित करणे आवश्यक आहे.

शिफारशी

योग जगभरात प्रसिद्ध आहे आणि प्रत्येकजण ते शिकण्यास तयार आहे. आता हे भारताचा ब्रँड म्हणून बनवण्याची वेळ आली आहे. भारताला आगळ्या वेगळ्या प्रसिद्ध स्थानाच्या रूपात विकसित करण्यासाठी,भारताच्या योग पर्यटनासाठी भविष्यातील मार्गासाठी काही शिफारशी खाली दिल्या आहेत.

शासनाची भूमिका: कोणत्याही उद्योगाच्या विकासासाठी सरकारची भूमिका शरीर रक्ताइतकीच महत्त्वाची आहे. म्हणूनच, भारताला एक लोकप्रिय योग पर्यटन ठिकाण म्हणून विकसित करण्यासाठी भारत सरकारच्या मदतीची प्रचंड गरज आहे. सरकार याद्वारे महत्वाची भूमिका बजावू शकतेः

अ) योग पर्यटनाच्या यशासाठी योग्य धोरण व योजना तयार करणे.

ब) या क्षेत्रात खासगी गुंतवणूकीस प्रोत्साहित करण्यासाठी एक सहाय्यक म्हणून काम करणे.

योग व्हिसा: प्रवास सीमा ओलांडणे सोपे करण्यासाठी वैद्यकीय व्हिसा मिळवण्याची सोपी प्रणाली विकसित केली पाहिजे. रुग्णांच्या स्थितीनुसार व्हिसा वाढवता येऊ शकतो. निवडक देशांमधील पर्यटकांसाठी व्हिसा ऑन एरव्ही योजना सुरू केली जावी जे विदेशी नागरिकांना आरोग्य सेवांच्या कारणास्तव भारतात राहू देईल. अधिक आकर्षक आरोग्यसेवा,पर्यटन स्थान या प्रक्रियेस सुलभ करणे आणि त्याचा वेग वाढविणे आवश्यक आहे.

योगास पर्यटनाचा ब्रांड बनविणे: योग युगानुयुगे भारतात अवलंबिला जातो. योगा हा चित्रपट, इंटरनेट आणि इतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स यासारख्या विविध माध्यमांसह जगभरात प्रशिद्धीस आणला पाहिजे.त्याचे फायदे अनेक आहेत हे पटवून दिले पाहिजे. यामुळे अध्यात्म आणि निरोगीतेसाठी लोक भारताकडे आकर्षित होण्याची दाट शक्यता आहे.

योग केंद्र बनविणे आणि सेंद्रिय खाद्य उत्पादनांना प्रोत्साहन देणे : प्रमाणित सेवांसह आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील योग केंद्रे स्थापन करून,पर्यटन योगाचे केंद्र म्हणून भारत विकसित झाला पाहिजे. सेंद्रिय अन्न उत्पादनांचा प्रचार करा जेणेकरून त्याचा थेट फायदा शेतकरी आणि पर्यटन उद्योगांना होईल.

मानक योग आणि आध्यात्मिक केंद्रे विकसित करणे : स्थापित असलेली केंद्रे विकसित करणे. नवीन योग आणि आध्यात्मिक केंद्रे स्थापन करण्याची आवश्यकता आहे. जेणेकरून पर्यटकांना योगाची दर्जेदार सेवा दिली जाईल.ही केंद्रे शासकीय अधिकृत संस्थेने प्रमाणित केली पाहिजेत.

जगभरातील ट्रॅव्हल एजन्सीज सह समन्वय: पर्यटन क्षेत्रात वाढत्या स्पर्धेला सामोरे जाण्यासाठी,पर्यटकांच्या खात्रीने पुरवठा करण्यासाठी परदेशी संस्था आणि ट्रॅव्हल एजन्सीशी करार करण्याची गरज आहे.

प्रशिक्षण आणि विकास: योग पर्यटनामध्ये सहभागी कर्मचाऱ्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी सरकारने प्रशिक्षण आणि विकास कार्यक्रम वेगवेगळ्या ठिकाणी सुरू केले पाहिजेत.

पर्यटकांची मूलभूत गरज विकसित करणे : यात प्रत्येक पर्यटनस्थळाला आवश्यक असलेल्या सर्व मूलभूत गोष्टींचा समावेश आहे

- सार्वजनिक ठिकाणी पर्यटकांसाठी स्वच्छता आणि मूलभूत स्वच्छता
- वाहतूक आणि प्रवास सुलभ आणि त्रास-मुक्त करणे
- चोरी आणि इतर समस्यांपासून पर्यटकांना सुरक्षितता आणि सुरक्षा

राष्ट्रीय स्तरावरील संस्था स्थापन करणे: देशाने आंतरराष्ट्रीय पातळीवर संस्था स्थापन करण्याची योजना आखली पाहिजे.जगामध्ये भारतातील विशेष योग पर्यटन उत्पादनांचे बाजारपेठ करण्याचे उद्दीष्ट असले पाहिजे.

स्वच्छ आणि सुरक्षित देशाची प्रतिमा तयार करणे : विदेशी लोकांच्या मनामध्ये जी अस्वच्छ देशाची प्रतिमा आहे. ती भारतात योग पर्यटनाला चालना देण्यापूर्वी स्वच्छ आणि सुरक्षित देश अशी प्रतिमा निर्माण करणे आवश्यक आहे.

सार्वजनिक-खाजगी भागीदारी उत्तेजन देणे: भारतातील योग पर्यटनाच्या विकासाला गती देण्यासाठी आवश्यक आहे. सार्वजनिक - खाजगी भागीदारी असणे अतिशय गरजेचे आहे,जेणेकरून वित्तीय आणि धोरणाशी संबंधित अडथळे वेळेवर दूर होतील.

निष्कर्ष

योग उपचार ध्यान धारणेस योग्य मदत करते. हा उपचार युगानुयुगे भारतात अवलंबिला जात आहे.सध्या जगभरात योग प्रसिद्ध आहे आणि प्रत्येकजण ते शिकण्यास तयार आहे. योग पर्यटनामुळे भारतासाठी अफाट आशा आहे. भारताला योग ब्रँड बनविण्याची वेळ आली आहे. योगा क्षेत्रात पर्यटनामध्ये या जागतिक संधींचा फायदा घेण्यासाठी भारत फायदेशीर स्थितीत आहे.योगा ब्रँड म्हणून भारताची निर्मिती करण्यासाठी सरकारची भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे. सरकारने खासगी क्षेत्राला प्रेरित केले पाहिजे .योग पर्यटनासाठी गुंतवणूक रस्ते, वाहतूक,राहण्याची व्यवस्था इत्यादी बाजाराच्या विस्तारासाठी उच्चस्तरीय अधिका-यांनी विपणन धोरण राबवून आणि देशाच्या ब्रांडिंगमध्ये प्रभावी मार्केटींगची योजना तयार करावी. मंत्रालयाने देशातील महत्वाच्या काही ठिकाणी उदा.ऋषिकेश,ठिकाणी उदा.ऋषिकेश, केरळ ई. सारखे योगा पर्यटनाचा विकास करून योग पर्यटनासाठी आवश्यक पायाभूत सुविधा पुरविणे आणि नंतर त्यांना टूर ऑपरेटरशी दुवा साधला गेला पाहिजे.

संदर्भ सूची

1. Aggarwal, Adarsh Kumar Meenal Guglani, and Dr. Raj Kumar Goel, (2008)Spiritual & Yoga Tourism: A case study on experience of Foreign Tourists visiting Rishikesh, India, Part XI – Health, Spiritual and Heritage Tourism.
2. Gupta, S. P., Lal, K., and Bhattacharya, M., (2002)Cultural Tourism in India: Museums, Monuments and Art, D.K. Printworld Pvt. Ltd., New Delhi, 2002, pp. 183-87
3. Indian Tourism Statistics-2019
4. Mrs. Ashalatha B(2018) Tourism In India Opportunities And Challenges, International Conference on recent development in science, engineering, management, YWCA of Delhi, Ashoka road, Connaught place, New Delhi, ISBN:978-93-87793-39-2

5. Pardeep Kumar (2015) Yoga Tourism–A Unique Feather in the Cap of Indian Tourism Advances in Economics and Business Management (AEBM)Print ISSN: 2394-1545; Online ISSN: 2394-1553; Volume 2, Number 9; April-June, 2015 pp. 919-924
6. Singh Jitender Pal (2016) Yoga Tourism in India, International Journal of Information Movement, Vol. I Issue VIII, ISSN: 2456-0553 (online), Pages 1-6 Website: ijim. In

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November 2020 Special Issue 256

The New Normal : Evolving Scenario in Business & Economy

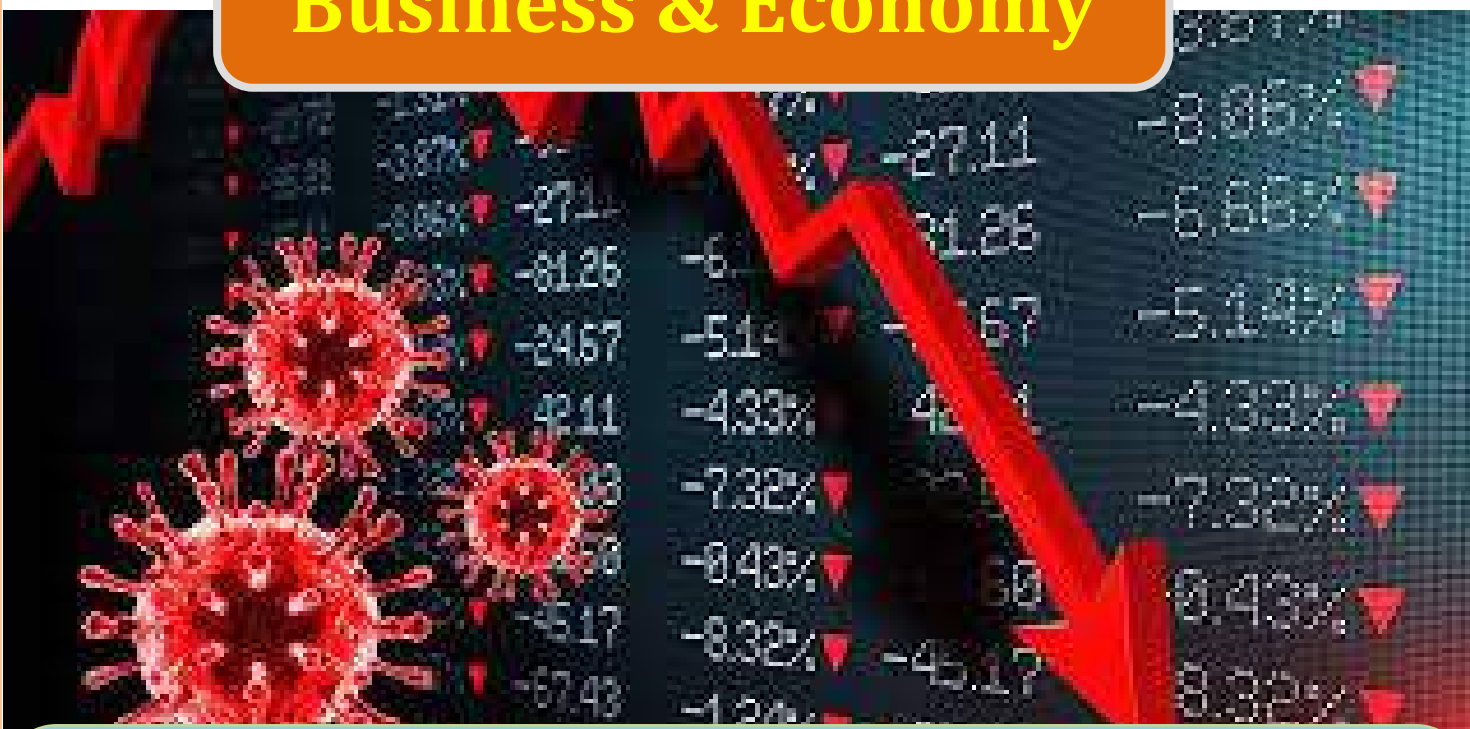

Guest Editor -
Dr. Amishi Arora,
Director,
Central Institute of Business Management,
Research & Development, Nagpur -25.

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Dr. Ajay Talwekar,
Asst. Professor, CIBMRD, Nagpur

Dr. Sagar Khursange,
Asst. Professor, CIBMRD, Nagpur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

22	Impact of International Trade on Distribution of Income **Dr. Rosalin Mishra**	132
23	Judicial Approach on Force Majeure Clause in Financial Adhesion Agreements Focusing New Normal Scenario in India **B. Priya**	138
24	Relevance of Business Communication and Soft Skills in Modern English Curriculum **Dr. Renuka Roy**	143
25	A Socio-Psychological Perspective in Post Covid-19 **Dr.Renu Tiwari, Dr. Siddharth Meshram**	147
26	Relevance of Online Teaching and Learning in Higher Education During Pandemic: Its Advantages, Disadvantages and Different Technical Tools **Dr. Vaishali Meshram**	151
27	Corporate Governance and Ethics-The New Normal **Divyarajsinh Zala**	156
28	Teaching English through Bilingual Method - A Critical Study **Manish Chakravarty**	162

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -256 : The New Normal : Evolving Scenario in Business & Economy
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Nov. 2020

A Socio-Psychological Perspective in Post Covid-19

Dr. Renu A. Tiwari
Associate Professor (Eco.)
S.K. Porwal College, Kamptee
Email Id.-renutiwarngp@gmail.com
Mob.No.-8668988889

Dr. Siddharth H. Meshram
Assistant Professor (Eco.)
S.K. Porwal College, Kamptee
Email Id.-siddhmeshram@gmail.com
Mob.No.-9689940527

Abstract:

Taking a social-psychological perspective, this paper discussed the present and expected changes, also because the potential risks and opportunities arising from three pandemic attributed effects: depression and psychological state issues, force and nationalism. Indeed, the long-term implications of the pandemic are far-reaching from the economy to governance and from healthcare to education. None the less, even as a crisis carries risks, it's also in the course of opportunities.

Keywords: Depression and psychological state issues, Domestic abuse, Nationalism

Introduction:

The COVID-19 pandemic has plunged the earth into disarray as nations fight to regulate the spread of the virus. While much attention has been focused on health concerns, reports of the social-psychological effects arising from this outbreak are on the increase, from mental depression and domestic conflicts, to racist attacks and nationalistic behavior's. More concerningly, these social-psychological effects may have longer-term ramifications that will well outlive the pandemic. The Chinese language expresses the word crisis as denoting a state of both threat and opportunity. Although physical safety is of critical importance, it's vital to contemplate this pandemic's impact on social-psychological issues and also the accompanying risks and opportunities. This understanding will inform how individuals, organizations and governments can better manage the potential downstream risks, while capitalizing on opportunities arising from the crisis. We target three distinct effects arising from, and even accentuated by, the pandemic–depression and psychological state issues, violence and nationalism. These effects lie, respectively, at different levels in terms of how a private categorizes and perceives oneself: at the individual level, in relevancy close others, and as a member of a bigger and psychologically more distant grouping. For every social-psychological effect, we discuss the expected structural changes arising from it and also the corresponding potential risks and opportunities.

Depression and psychological state issues: Current and expected changes:

Given the gravity of and therefore the uncertainty surrounding the pandemic, it's natural for a spread of intense negative emotions to exacerbate, like fear and anxiety, stress and distress, anger and confusion. These emotions are driven by myriad stressors (e.g., physical safety concerns, financial uncertainty, negative and/or conflicting news) and might result in depression and other mental state issues as observed in previous outbreaks including SARS, MERS, and H1N1. Further magnified by a number of things like social isolation and perceived helplessness, mental state challenges may especially affect vulnerable segments of the population

(e.g., the elderly and other people with special needs). A case of depression and mental state challenges is also amplified the longer the pandemic continues, with the likelihood of persisting well after. The unemployed and financially distressed is also hit hardest as jobs are scarce while economies worldwide struggle to endure the expected financial recession.

Risks:

The persistence and intensification of those psychological state issues may lead to far graver consequences. As people seek to control their negative feelings, they will employ a gamut of coping strategies, often with dire outcomes for both their mental and physical health. At one end of the spectrum is compulsive consumption, like overspending and alcohol use. Taken to the intense, these emotional-repair strategies may end in increased materialism and abuse that carry potentially enormous costs for the self and society. On condition that there are often bidirectional relationships between negative emotions and compulsive behaviours, victims may find themselves trapped in an unfortunate regeneration. At the opposite end of the spectrum is suicide. Already, there are increasing reports of suicide cases arising from the pandemic. Evidence suggests that suicides are especially prevalent following financial hardship, with suicide rates in Europe and also the US rising about 1% for each 1% point increase in unemployment.

Opportunities:

It is imperative to implement public-health education programmes and campaigns to extend awareness of mental state issues, and for self-regulatory mechanisms and professional treatments to be made more widely and readily accessible. Rather than lying off employees, companies could redeploy underutilized manpower and resources to higher support frontline organizations engaged in mental and public health services. Such strategies allow companies to remain relevant and resilient while addressing important societal needs emerging from the crisis. Likewise, individuals and support groups can play a more proactive role in assisting those fighting emotional and mental state issues. Possible initiatives could include the utilization of digital platforms that enable verified users to directly extend help to those in their neighbourhood. Such public outreach at the overall community level, in turn, fosters strong community spirit as individuals become more sensitized to the requirements of others and are better equipped to supply support.

Domestic abuse: the Present and expected Changes

Measures like mandatory lockdowns have unfortunately been amid increased rates of domestic abuse. In the UK, the national domestic abuse helpline reported a 65% surge in calls in one week while Singapore saw a nationwide increase of about 35% in force in March 2020 compared to a year ago. Spikes within the number of severe maltreatment cases possibly tied to the pandemic were also reported within the US. Trapped reception with their abusers, domestic abuse victims are in danger because the pandemic presents a replacement barrier to exiting abusive relationships and forces victims to decide on between their personal safety, housing stability and therefore the health risks the virus poses. Social isolation shatters support networks, rendering break loose the shackles of abusers particularly difficult. Perpetrators, aggravated by uncertainty and financial worries, may intensify abuse to keep up a way of power and control in their lives. Because the global economy weakens, unemployment and other financial setbacks will amplify domestic tensions across households and further exacerbate the impact on abuse

victims. Protracted periods of social isolation and confinement with the abuser could lead on to increased vulnerability and long-term trauma as victims become resigned to constant fear and learned helplessness.

Risks:

A potential repercussion is a rise in divorce rates. Many cities of China have already reported an unprecedented number of divorce appointments post-lockdown. Although such divorces are owing to existing cases of domestic abuse, Chinese officials have observed an alarming rate of impulsive divorces arising from domestic conflicts during the lockdown as social isolation imposes further tensions on the clan and fuels greater violence. As welfare systems and medical facilities become overloaded, social services for victims of violence may suffer budget cuts. Government aid and social services is also hard-pressed to satisfy the increased burden on welfare as government's worldwide struggle to allocate resources across various social sectors with in the wake of the pandemic.

Opportunities:

The anticipated surge in domestic abuse over the approaching months suggests areas for policy-makers and family-violence social services to foster partnership in assisting abuse victims. Beyond providing access to free legal advice and lengthening helplines to 24/7, organizations should build innovative service delivery models and tools with the requirements of diverse community groups in mind, including those that could also be forcibly confined or living in remote communities. This could include developing encrypted apps that collect evidence of domestic abuse and embolden victims to require action. More communally, blog communities and campaigns that equip the general public to be conscious of telltale signs of abuse can powerfully increase awareness and also the support of abuse victims.

Nationalism: The Present and expected changes

Although meant to shield their citizens, many COVID-19 policy responses are accompanied with unintended consequences observed in disconcerting expressions of nationalism. Border closures and public-health restrictions are conflated with anti-migrant rhetoric while racist attacks have increased. Such negative expressions of social categorization are expected to persist post-pandemic as people seek to assign blame for the reason behind the crisis. Assessments from the Federal Bureau of Investigation indicate that hate-crime incidents against Asian Americans may escalate across the US because of a big portion of the general public associating the virus with China and Asian-American populations. Social categorization elevated to a national level has also manifested itself within the sort of protectionism and localization of production. Nationalistic responses to the pandemic have led governments to dam the flow of products and dishonour trade agreements. Although global trade is expected to resume within the wake of this pandemic, cross-border collaborations are likely to be marked by increasing distrust and tension.

Risks:

The rise of racism and xenophobia may prompt reverse migration, resulting in a drain in many developed economies. The exodus may particularly hit the US, the UK, and Australia –the major hosts of highly skilled Asian migrants. Although anti-racism campaigns have sought to quench explicit attacks, there's the potential for more subtle, insidious styles of racism to fester within the aftermath of COVID-19. While temporary national protectionism may serve a country's urgent interests and stimulate domestic production, there's a danger of slipping into

uncontrolled nationalism, which could lead on to slumps in global trade and disputes over international cooperation. Post-pandemic revisions of economic policies could jeopardize relations between nations and intensify existing bilateral and/or multilateral tensions.

Opportunities:

Locally, this crisis can heighten social awareness of marginalized communities and promote greater support for homegrown businesses. Governments also can encourage the return of skilled national talent through attractive remuneration and appeals that highlight talent-shortage areas. More generally, various government efforts to take a position in its institutions and folks may foster greater trust and support of future governmental policies. Internationally, this crisis may serve as a catalyst for strategic economic interdependencies to leverage collective strength. Because the pandemic doesn't discriminate demographically or geographically, it's crucial for economies to concentrate on common goals that are shared across nations. Although self-defensive measures is also provisionally necessary to safeguard the urgent needs of their citizens, countries that like better to share their competencies within the face of a worldwide threat will have the advantage of enhancing trust and future collaboration across borders.

Conclusion:

Taking a social-psychological perspective, this paper discussed the present and expected changes, also because the potential risks and opportunities arising from three pandemic attributed effects: depression and psychological state issues, force and nationalism. Indeed, the long-term implications of the pandemic are far-reaching from the economy to governance and from healthcare to education. None the less, even as a crisis carries risks, it's also in the course of opportunities. When the storm passes and therefore the dust settles, whether the new world will emerge stronger and also the post-COVID-19 normal more resilient and sustainable will turn on our ability to effectively mitigate the risks while harnessing the opportunities that these social-psychological effects may present. As an aphorism in Chinese goes heroes are but products of their times.

References:

1. Chan Ghee Koh, Leonard Lee, Carolyn Lo, Catherine Wong, Janson Yap, World Economic Forum, E-book, Challenges and Opportunities within the post-covid-19world,Switzerland,Year-May,2020
2.Competition Success review, Magazine, Vol. LVII, No.5, New Delhi, Nov, 2020
3.IndiaToday, Magazine, New Delhi, Sept., 2020
4.IndiaToday,Magazine,NewDelhi,Oct.,2020
5.IndiaToday,Magazine,NewDelhi,Nov.,2020
6.IndiaToday,Magazine,NewDelhi,Dec.,2020
7.IndiaToday,Magazine,NewDelhi,Oct.,2020
8.Outlook,Magazine,NewDelhi,Oct.,2020
9.Outlook, Magazine, New Delhi, Nov., 2020
10. Outlook, Magazine, New Delhi, Dec., 2020

VOLUME - IX, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१. मुक्केबाज़ी में घुसा मारने की क्षमता पर सूर्य भेदन और चन्द्र भेदन प्राणायाम का प्रभाव

डॉ. जयंत कुमार रामटेके
सहा. प्राध्यापक, शारीरिक शिक्षा विभाग सेठ केसरमल पोरवाल कॉलेज, कामठी.

सार

इस अध्ययन का उद्देश्य मुक्केबाज़ी खिलाड़ी में घुसा मारने की क्षमता पर सूर्यभेदन और चंद्रभेदन प्राणायाम के प्रभावों को जाँचना है । इस अध्ययन के उद्देश्य से दस मुक्केबाज़ी खिलाड़ियों को शारीरिक शिक्षा विभाग एस. के. पोरवाल कामठी से चुना गया था। दो अलग-अलग प्राणायामों के बाद दो दिनों के बाद प्राप्त किए गए दो समूहों के पूर्व और बाद के प्रयोगात्मक साधनों में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाने के लिए डेटा का परीक्षण टी-टेस्ट के माध्यम से किया गया था।

सकेतशब्द: सूर्यभेदन प्राणायाम, चन्द्रभेदन प्राणायाम, मुक्केबाज़ी

परिचय

योग एथलीटों, खिलाड़ियों और वरिष्ठों के लिए एक लोकप्रिय गतिविधि है। योग को उम्र, लिंग और शारीरिक स्थिति से लेकर सभी स्तरों के अनुरूप बनाया जा सकता है। शब्द "योग" संस्कृत मूल "युज" से आया है, जिसका अर्थ है "आत्मा को जगाने" और भौतिक शरीर को एक साथ जोड़ना। शैलियों और विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को अपनाने के लिए योग हजारों वर्षों में विकसित हुआ है। योग हमारे शरीर को स्फूर्ति देता है और हमारे मन को शांत करता है।

प्राणायाम से सांस का नियंत्रण होता है। "प्राण" शरीर में सांस या महत्वपूर्ण ऊर्जा है। सूक्ष्म स्तरों पर प्राण प्राण या जीवन शक्ति के लिए जिम्मेदार प्राणिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है, और "आयाम" का अर्थ है नियंत्रण। इसलिए प्राणायाम "सांस का नियंत्रण" है। प्राणायाम का तंत्रिका तंत्र पर एक सोथेनिंग और संतुलन प्रभाव होता है और इसमें विभिन्न श्वास अभ्यास होते हैं। हमारे शरीर विज्ञान और हमारे मन की स्थिति पर कई प्रकार के प्राणायामों का एक अलग प्रभाव पड़ता है। "तस्मिन सती संवत् प्रस्वासा ऑरगतिविकसित प्राणायाम" - सांस का नियंत्रण या प्राण का नियंत्रण साँस लेना और साँस छोड़ना है, जो आसन या आसन की उस दृढ़ता को प्राप्त करने के बाद होता है। यही पतंजलि योग सूत्र में प्राणायाम की परिभाषा है।

सूर्यभेदन प्राणायाम कुंभका के साथ मुख्य प्राणायामों में से एक है। सूर्य का अर्थ है ऊर्जा प्राणायाम में सूर्य नाड़ी या दाईं नासिका चैनल सक्रिय होता है। सूर्यभेदन प्राणायाम का उल्लेख योग ग्रंथ हठ योग प्रदीपिका और घेरंड संहिता में मिलता है। योग में, दाहिने नथुने या सूर्य नाड़ी, जिसे पिंगला नाड़ी

1. Thoughts of Dr. B. R. Ambedkar on Democracy

Dr. Jayant Kumar Ramteke
Assistant Professor, Dept. of Physical Education, S. K. Porwal College, Kamptee
R.T.M.N.U., Nagpur.

Abstract

Dr. B. R. Ambedkar (Babasaheb) ended up being one of several essential thinkers that are political social revolutionaries that contemporary India has actually created. Babasaheb said that the objective of contemporary democracy had not been so much to put a curb for a king this is certainly autocratic but to bring about the welfare of those. For him democracy means not only democracy this is certainly political also social and financial democracy and highlighted the need for eliminating these inequalities according to problem for steady democracy and quick economic development with justice. The key aim of the study is to analyse and evaluate critically the notion of B.R. Ambedkar, the truly amazing constitution this is certainly Indian, regarding Indian democracy and to capture the positioning of Ambedkar on issues whoever relevance is even felt at the moment

Keywords: Dr. B. R. Ambedkar (Babasaheb), democracy, thought,

1. Introduction

"AMBEDKARISM" is just a philosophy that is brand new on equivalence, Fraternity self-esteem and freedom of man. The foundation of this philosophy is personal justice together with emancipation associated with the incredible number of untouchables and weaker areas for the clutches of social evils. Within the history of India modern believed that is governmental. Babasaheb possesses role this is certainly significant through his scholarly writing, speeches, leadership and socially focused works. He gives a new purchase this is certainly personal India as well as dictated the political, Economic and issues that tend to be personal general and untouchables in specific. Since 1950 the federal government of India enacted laws being much the protection of planned caste and scheduled tribes and at the time that is same federal government have actually been cores that are investing cores of rupees for the upliftment associated with downtrodden classes. Babasaheb legacy when it comes to Dalit's is primarily by means of Constitutional safeguards, planning for the life of individuals and preparation that is

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२. डॉ. आम्बेडकर भारतीय महिला सशक्तिकरण क्रांति के मसीहा

डॉ. जयंत कुमार विवेकानंद रामटेके
सेठ केसरिमल पोरवाल महाविध्यालय, कामठी.

20वीं शताब्दी में डॉ. बी. आर. अंबेडकर भारत के सबसे उत्कृष्ट बुद्धिजीवि थे साथ ही एक प्रख्यात न्यायविद्, भारतीय संविधान के प्रमुख वास्तुकार, एक साहसी नेता कुल मिलाकर एक बहुमुखी व्यक्तित्व एक बौद्धिक क्रांतिकारी, आशा की एक किरण थे उन्होनें अपने जीवनकाल में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेक प्रयास किए। उन्होनें अपनी रचनाओं में भारतीय महिलाओं की स्थिति के बारे में विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने बताया कि मनु से पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी, महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने व धार्मिक कार्यो को सम्पन्न करने का अधिकार था। मनु की 'मनुस्मृति' से महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास पर पूरी तरह से प्रतिबंध लग गया। आधुनिक युग में डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं को जागृत करने के लिए अनेक सम्मेलन किए। डॉ. अम्बेडकर ने 'मूकनायक' व 'बहिस्कृत भारत' इत्यादि समाचार-पत्रों के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। **1941** में डॉ. अम्बेडकर ने कानून मंत्री रहते हुए 'हिन्दू कोड बिल' का कार्य अपने हाथों में लिया 'हिन्दू कोड बिल' के प्रस्ताव को रख कर भारत सरकार के माध्यम से उन्होने महिलाओं के पूर्ण सशक्तिकरण का प्रयास किया। लेकिन रूढ़ीवादी लोगों ने इस बिल का विरोध किया।

परिचय

20वीं शताब्दी में डॉ. बीआर अंबेडकर भारत के सबसे उत्कृष्ट बुद्धिजीवि थे, साथ ही एक प्रख्यात न्यायविद्, भारतीय संविधान के प्रमुख वास्तुकार, एक साहसी नेता कुल मिलाकर एक बहुमुखी व्यक्तित्व एक बौद्धिक क्रांतिकारी, आशा की एक किरण थे दमित वर्गों के उद्धारक थे, रूढ़िवादी हिंदू परंपरा को चुनौती देने के लिए अपने पूरे जीवन समता, एकतमकता और बंधुता के लिए आजीवन अथक प्रयास करते रहे। उन्होंने **1920** प्रसिद्ध पत्रिका मूक नायक के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में अपना महिला पुनः उद्धार आंदोलन शुरू किया और **1927** में बहिश्तक भारत और हिंदू सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई **1942** में शोषित वर्ग की महिलाओं के एक सम्मेलन में देखने को मिली थी, जब उन्होंने कहा था, 'किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं की प्रगति से आंकी जाती है।' उनके यही शब्द जिसमे जाति समस्या और महिला के अधिकारों को एक करके देखा उन्हें नारीवाद का एक बड़ा नेता बनाने के लिए काफी है| उनका मानना था कि महिलाओं की स्थिति इसलिए बदहाल है क्योंकि वे सब प्रथा के जाल में फंसी हुई है| आजादी मिल जाने के बाद भी चिंता इस बात की थी, कि आधी आबादी का क्या

Academic Year 2020-2021

Dr. JITENDRA SAOJI TAGADE

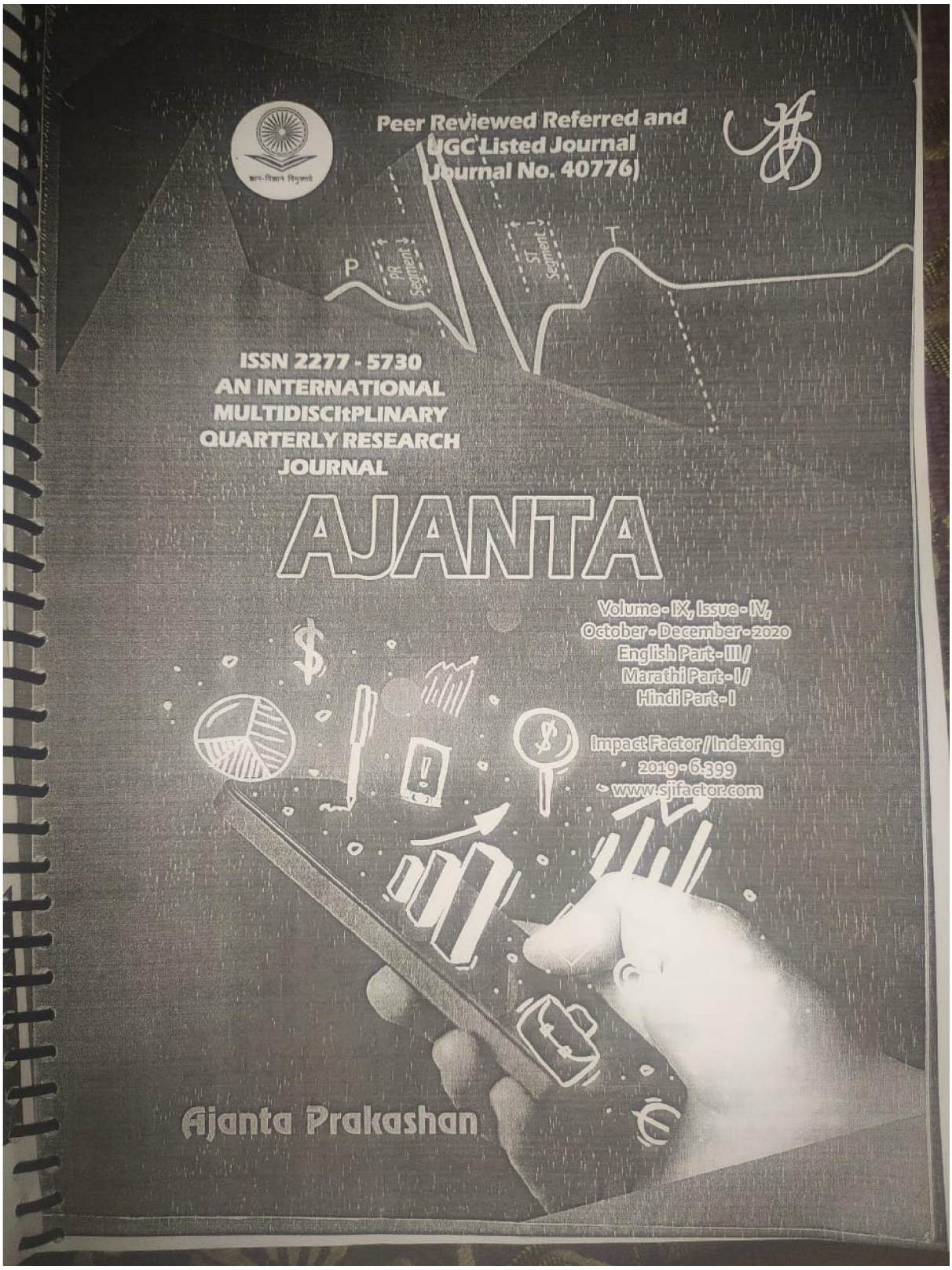

VOLUME - IX, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२. बौद्ध दर्शन : योग

डॉ. जितेंद्र सावजी तागडे
सहायक प्राध्यापक एंव इतिहास विभाग प्रमुख, सेठ केसरिमल पोरवाल महाविद्यालय, कामठी, जि. नागपूर.

प्रस्तावना :

भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का उदय छठी शताब्दी इ.स. पूर्व की एक युगांतकारी घटना थी. वेदवाद, देववाद और यज्ञवाद ने एक सरल एवं सर्वसुलभ धर्म की आवश्यकता ने बौद्ध धर्म को जन्म दिया. भारतीय धर्मो के इतिहास में बौद्ध मत का स्थान अव्दितीय हैं, सांघिक जीवन में मठ पद्धति बौद्ध धर्म की देन हैं तथा बौद्ध दर्शन में निर्वाण आध्यात्मिक साधना की चरमसीमा हैं. कुशल चित की एकाग्रताही सम्यक समाधी हैं. प्राचीन बौद्ध धर्म ने ध्यानपरणीय (समाधि) अवशोषण अवस्था को निगमित किया हैं. बुद्ध के प्रारंभिक उपदेशों में योग विचारों की सबसे प्राचीन तथा निरंतर अभिव्यक्ति मिलती हैं. बुद्ध ने एक प्रमुख नवीन ध्यानपरणीय सम्यक समाधि अवशोषण से योगी को निर्वाण गति प्राप्त करने का मार्ग बताया.

बिजशब्द – बौद्ध, योग, समाधी, दर्शन, ध्यान, चित, साधना

योग का संक्षिप्त इतिहास

सिंधु सभ्यता में योग एवं साधना की परंपरा के संकेत मिलते हैं. हड़प्पा से योगासन की मुद्रा में बैठें पुरुष का धड़ और मोहोनजोदड़ो से योगी उपासना की प्रसिद्ध पशुपति मुहर प्राप्त हुई जिसमें योगी पद्मासन मुद्रा में बैठे है, योगी की ओर चार पशु – भैंसा, बाघ, गेंडा, हाथी हैं जो पृथ्वी की ओर देख रहे हैं और दो हिरन योगी के पैर के पास हैं, इस अंकन में शिव के तिन रूप देखे जा सकते हैं (१) शिव का त्रिमुख रूप (२) पशुपति रूप (३) योगेश्वर रूप, अनेक शिवलिंग के आकर के पत्थर प्राप्त हुए हैं, जिनकी उपासना की जाती थी. योग विद्या में शिव को आदि योगी और आदि गुरु माना जाता हैं. उत्खनित प्रमाणों के आधार पर योग की प्राचीनता व चलन ५००० वर्षों पूर्व तक सिद्ध होती हैं.[1]

वैदिक काल में शाररिक, मानसिक और सांसारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए यज्ञ कार्य संपन्न कर भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु योगाभ्यास किया जाता था. महाकाव्य महाभारत, उपनिषदों और भगवतगीता में ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग और राज योग का उल्लेख मिलता हैं. बृहदारण्यक उपनिषद में प्रसिद्ध संवाद योग याज्ञवल्क्य वर्णित हैं, जिसमें याज्ञवल्क्य और गार्गी के बीच श्वसन संबंधी व्यायाम और शरिर की के लिए आसन और ध्यान का उल्लेख हैं. गार्गी द्वारा छांदोग्य उपनिषद में भी योगासन का उल्लेख हैं. छठी सदी इ.पू. के लगभग भारत में जो धार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ हुए उनमें जैन और बौद्ध धर्म प्रधान हैं. इस उत्थान काल में यम और नियम के अंगों पर बल दिया गया अर्थात

BUSINESS ECONOMICS
THEORETICAL ASPECTS

Dr. Durga Anil Pande (Shukla)

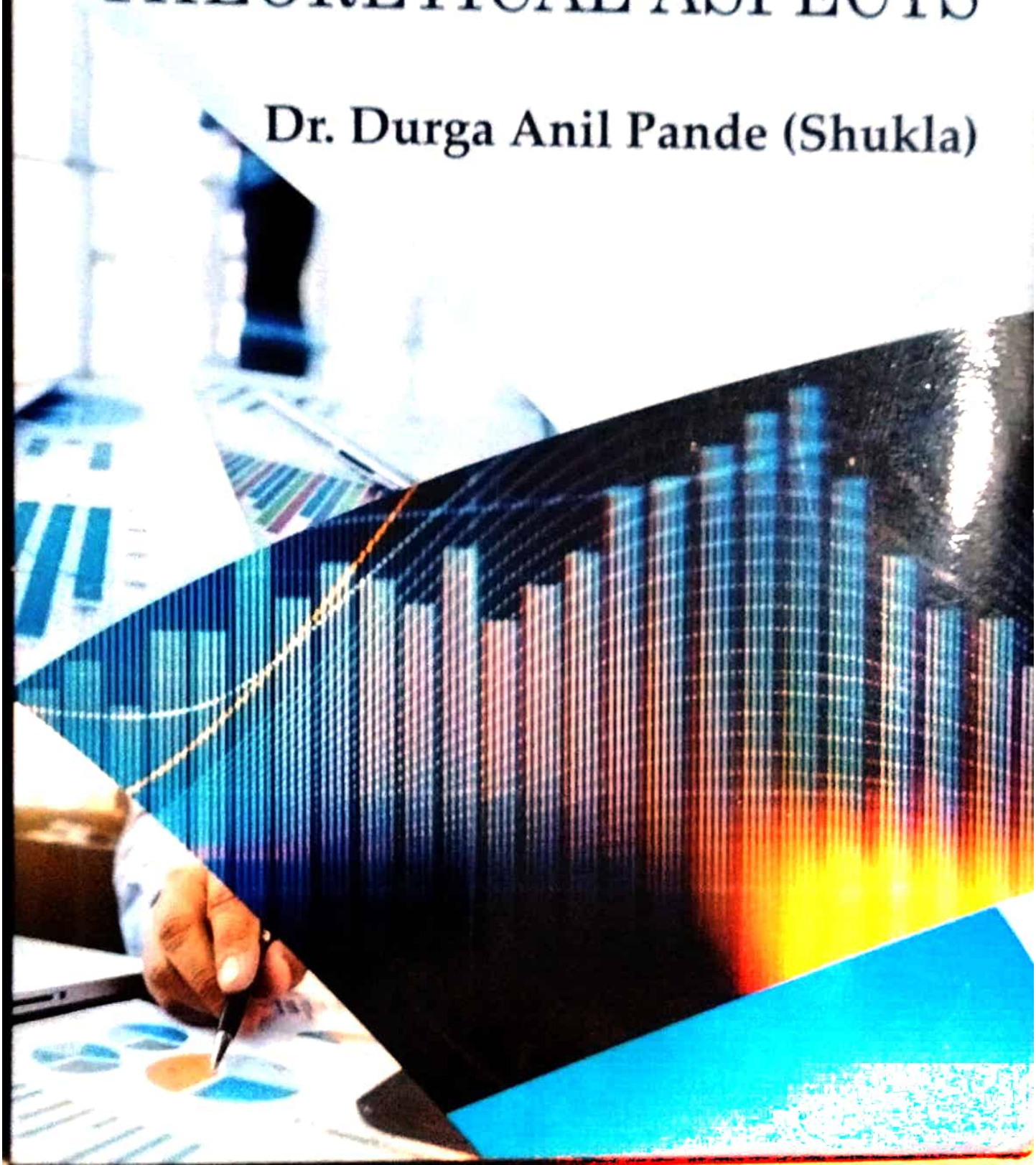

Business Economics: Theoretical Aspects

© Reserved

First Published : 2020

ISBN : 978-81-942077-7-1

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers]

Published by

CHANDRALOK PRAKASHAN

132, 'Shivram Kripa', Mayur Park,
Basant Vihar, Kanpur - 208 021
Ph : 0512-2634444, 0512-2634242, Fax : 0512-2634444
Mob. : 09415125867, 9506294444, 09415200584
E-mail : chandralok.prakashan@gmail.com
info@chandralokprakashan.com
visit us at : www.chandralokprakashan.com

PRINTED IN INDIA

Printed at Deepak Offset Press, Delhi.

Contents

Preface (v)

1. **Market Structure** 9
- Meaning, Classification of Market Structure
- Firm and Industry-Meaning and objectives, Difference between Industry and Firm
- Pricing of Products-Cost based pricing, Customer-based pricing, Competitor-based pricing

2. **Perfect & Imperfect Competition Markets** 69
- Features and Price-output determination under Perfect Competition Market
- Features and Price-output determination under Monopoly Market
- Price Discrimination – Meaning and types
- Features and price-output determination under Monopolistic Competition

3. **Theories of Distribution** 145
- Theory of Distribution- Modern Theory of Distribution
- Theories of Rent- Ricardian Theory of Rent, Modern theory of Rent, Concept of Quasi Rent
- Theory of Wages- Marginal Productivity Theory of Wages with Criticisms
- Theories of Interest- Loanable Funds Theory of Interest
- Liquidity Preference Theory of Interest, Criticisms
- Theories of Profit- Dynamic Theory of Profit, Innovation Theory of Profit, Criticism of Theories
- Concept of Gross Interest and Net Interest

4. Business Cycles and National Income 249

- Business Cycles- Concept, Features, Phases of Business Cycles, Causes and Remedies of Business Cycles
- National Income – Meaning, Concepts, Methods of Measuring National Income
- Difficulties in National Income Accounting

Bibliography 325

Index 327

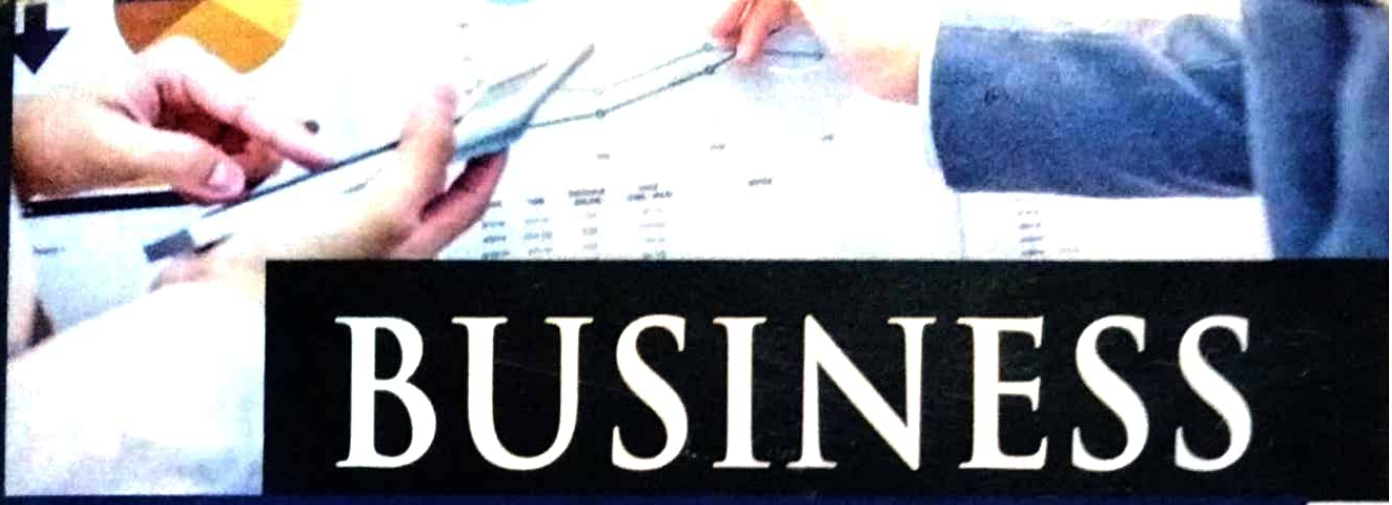

BUSINESS ECONOMICS

CONTEMPORARY PERSPECTIVE

Dr. Durga Anil Pande (Shukla)

Business Economics: Contemporary Perspective

© Reserved

First Published : 2020

ISBN : 978-93-89837-04-9

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers]

Published by

CHANDRALOK PRAKASHAN

132, 'Shivram Kripa', Mayur Park,
Basant Vihar, Kanpur - 208 021
Ph : 0512-2634444, 0512-2634242, Fax : 0512-2634444
Mob. : 09415125867, 9506294444, 09415200584
E-mail : chandralok.prakashan@gmail.com
info@chandralokprakashan.com
visit us at : www.chandralokprakashan.com

PRINTED IN INDIA

Printed at Deepak Offset Press, Delhi.

Contents

Preface (v)

1. Nature and Scope of Business Economics **9**

- Business Economics – Meaning, Scope and Objectives of Business Economics
- Nature and Types of Business Decisions
- Meaning, Scope, Merits and Demerits of Micro and Macro Economics

2. Theory of Consumption **74**

- Law of Demand, Demand Determinants, Changes in Demand
- Indifference Curve Concepts – Definition, Properties and it importance
- Elasticity of Demand – Concept, Types, Measurement, Factors influencing Elasticity of Demand and Importance
- Demand Forecasting – Meaning, Importance and methods of Demand Forecasting

3. Theory of Production **171**

- Concept of Production Function – Meaning, Cobb-Douglas Production Function
- Law of Variable Proportion, Assumptions, Significance and Limitations
- Law of Returns to Scale
- Internal and External Economies and Diseconomies of Scale

4. Theory of Cost and Revenue 241

- Law of Supply and Factors Influencing supply
- Concept of Cost in Short Run – Accounting Cost, Economic Cost, Opportunity Cost, Fixed Cost, Variable Cost, Direct and Indirect Costs
- Real Cost, Explicit and Implicit Costs, Money Cost, Total Cost, Marginal Cost, Average Costs
- Total, Marginal and Average Cost in the Long Run
- Revenues – Total Revenue, Average Revenue, Marginal Revenue and their Relationship

Bibliography 325

Index 327

Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal
Volume - 9 | Issue - 12 | September - 2020
Impact Factor : 5.7631(UIF) 2249-894X

THE CONTRIBUTION OF THE INDIAN POSTAL DEPARTMENT IN THE DEVELOPMENT OF BUSINESS COMMUNICATION

Dr. Durga Anil Pande

Dr. Durga Anil Pande

Assistant Professor , Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

Abstract : India Post, formerly known as the Department of Posts, is India's state-owned postal delivery service.....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal
Review of Research
Save Trees, Save Paper, Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 9, Issue -12, September -2020

Content

Sr. No.	Title and Name of The Author (S)	Page No.
1	**THE CONTRIBUTION OF THE INDIAN POSTAL DEPARTMENT IN THE DEVELOPMENT OF BUSINESS COMMUNICATION** Dr. Durga Anil Pande	1
2	**DRAGONFLIES OF SOLAPUR CITY (MS), INDIA** S. Z. Kamble , P. S. Kamble and A. C. Kumbhar	9
3	**INTEGRATED TOWNSHIPS IN PUNE: A TEMPORAL STUDY USING REMOTE SENSING TECHNIQUES** Ujjwala Khare and Prajakta Thakur	13
4	**IMPLEMENTATION OF DIRECT BENEFIT TRANSFER SCHEME: AN APPRAISAL** Dr. Ranjan Kumar Thakur	20
5	**STRATEGIES FOR THE TRAINING OF TEACHERS IN PHYSICAL EDUCATION** Sri. H. G. Patil	30
6	**MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES (MSMEs) IN INDIA: MOVING TOWARDS DIGITAL BUSINESS** Sameena Banu and Dr. B. H. Suresh	35
7	**ROLE OF SELF- HELP GROUPS IN WOMEN EMPOWERMENT** Jyoti Sahebrao Jadhav and Dr. Madhav Hanumantrao Shinde	44

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2020

THE CONTRIBUTION OF THE INDIAN POSTAL DEPARTMENT IN THE DEVELOPMENT OF BUSINESS COMMUNICATION

Dr. Durga Anil Pande
Assistant Professor , Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

ABSTRACT

India Post, formerly known as the Department of Posts, is India's state-owned postal delivery service. The first postal service to be started in the country was started in 1788 by a member of the East India Company. While India Post is still primarily concerned with package and parcel delivery, its other services include remittances (money orders), small savings schemes, life insurance coverage, and providing retail services such as bill collection, sale of forms. India Post also distributes pension payments., handles identity card and passport applications, and has India Post ATMs.

Both the vast expanse covered by India Post and the many services it offers means it plays a vital role in the governance of the Indian state. Many people in India use the service provided by India Post and hence also ship their parcels with India Post as a result. This means that India Post is extremely popular.Today India Post offers domestic and international shipping options along with a Speed Post service, which is exclusively used for e-commerce shipping. India Post also often handles parcels that have been shipped from other countries and have arrived in India. Postal services are of great importance to the general public, especially to trade.This research paper has been written to find answers to the questions that what is the Contribution of The Indian Postal Department in The Development of Business Communication, what is the importance of Indian Postal Department for the Indian society and business, and What are the services provided by Indian Postal Department for the communication.

KEYWORDS: *Business Communication, Indian Postal Department, Post Offices,Postal Services,Commercial Conveyance .*

DATA COLLECTION METHOD USED FOR RESEARCH:

This research depends on secondary data like newspapers, books, magazines, reports, and websites.

The Objective of Research:

1) To study the Contribution of The Indian Postal Department in The Development of Business Communication
2) To know the importance of Indian Postal Department for the Indian society and business
3) To study the services provided by Indian Postal Department for the communication.

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN - 2277 - 5730

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

AJANTA

Volume IX, Issue - IV, October - December - 2020
English Part - III / IV

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399 (www.sjifactor.com)

AJANTA PRAKASHAN

CONTENTS OF ENGLISH PART - IV

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Socioeconomic Differentials in Hysterectomy in India **Dr. Shantabai Nanasaheb Jadhavar** **Dr. Anand Madhavrao Wagh**	1-6
2	Sustainable Separation of Toxic Heavy Metal from Aqueous Solution using Green Solvent as Liquid Membrane: Emulsion Liquid Membrane **Saira Mulla**	7-13
3	Problem of Women Entrepreneurs Development in Aurangabad District **Prof. Pooja Manohar Wankhade** **Shri. Akash Manohar Wankhade**	14-19
4	Heavy Metals Remediation in *Withaniasomnifera* (L.) Dunal on the Content of Chlorophyll Pigments **Dr. Pachore Manohar Vishwanath**	20-31
5	Internet of Things: A thoroughgoing Platform in the Field of Education **Kanchan Mulay**	32-35
6	Social Values in Vijay Tendulkar Play Sakaram Binder **Prof. Basavaraj Sharanappa Mailare**	36-41
7	Women's Participation in Polities **Dr. Geeta Patil**	42-48
8	The Study of the Contribution of Mobile Commerce in Implementation of Welfare Works of Government **Dr. Durga Anil Pande**	49-55

8. The Study of the Contribution of Mobile Commerce in Implementation of Welfare Works of Government

Dr. Durga Anil Pande
Assistant Professor, Seth Kesarimal Porwal College of
Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

Abstract

In the 21st century, mobile has brought a revolution in the field of communication. In this third millennium, mobile is being seen as an important tool to bring change in the way of governance. In the beginning, mobile was used only as a medium of communication, but today it is being used by government agencies not only to convey important information to the people. Mobiles are also being used to provide government services. Today, services related to health, education, banking, business, etc. are being provided to people through mobile.

According to the Department of Telecommunications and Telecom Regulatory Authority of India, the Indian telecom sector has registered phenomenal growth during the last few years and is today the second-largest telephone network in the world after China. The total number of mobile subscribers in India was 870.58 million in September 2013, which increased to 870.58 million in October 2013. Hence Mobile Services / Mobile Based Governance - An external website that opens in a new window has emerged as a separate and completely new framework aimed at taking advantage of the tremendous growth and far-reaching reach of wireless communication technology in the country. To provide these various services to the people. The use of smartphones and other wireless-based technologies has seen tremendous changes in the country in the last decade. To take advantage of this situation, mobile is being used as a medium so that public services can be easily accessible to the people. This research paper has been written to find answers to the questions that what is the contribution of mobile commerce in the implementation of welfare works of the government, what is the importance of mobile commerce for the development of mobile-based governance, and What are the mobile-based services provided by the government.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March 2021

Special Issue 261(A)

Use of ICT in Teaching - Learning

Opportunities and Challenges

Guest Editor of the Issue :-
Dr. P. D. Hudekar
Act. Principal
Vidarbha Mahavidyalaya, Buldana
Dist – Buldana [M.S.] INDIA

Executive Editor of the Issue :-
Prof. Sangita K. Pawar
Vidarbha Mahavidyalaya, Buldana

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Co Editors of the Issue :-
Prof. Vaibhao G. Vaghmare
Prof. M. T. Jamaiwar
Prof. S. H. Gandade
Prof. N. D. Raut
Prof. L. F. Shirale
Prof. S. V. Kalne
Shri. S. G. Pande

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	Information Communication and Technology (ICT) Integration in Teacher Education: A Necessity for Sustainable Educational Growth	Dr.G.V. Sreenivasamurthy	13
2	ICT in Sports and Physical Education	Dr. Sangita Khadse	20
3	Need of Innovations in ICT Teaching Learning Process	Dr. Hari Kale	22
4	E-Resources, Concepts and Use : An Overview	Dr. Harshal Nimbhorkar	26
5	Role of ICT in Home Economics : Enhancement in Teaching and Learning	Ms. Pratibha S. Katkar	30
6	Emphasis on ICT / Digital Technology in National Education Policy 2020	Dr. Durga Pande	34
7	Application of ICT in Academic Library : An Overview	Dr. Pranali Pete	40
8	Use of ICT in World of Sports : Development in Physical Education	Dr. Balasaheb Paul	45
9	Need of Library Automation in Current Era: A Study	Prof. Swapnil Dandade	50
10	Use of Internet in Language Acquisition	Pundlik Nalinde	53
11	Role of Information and Communication Technologies (ICT) in Physical Education and Sports	Prof. Sunil B. Chordiya	57
12	Use of RFID Technology In Libraries	Dr. Prashant Pagade	61
13	Use of E-Learning in Teacher Education Institutions	Mrs. Sharmila Kerkar	64
14	Usage of ICT Based Library Services.	Dr. Dattatray Dhumale	70
15	ICT Enabled English Language Teaching-Learning in Rural India	Dr. Archana Deshmukh	73
16	A Study of Various Parameters of ICT and Teaching Aids used in the Higher Education in Gadchiroli District	Ganesh Dandekar	80
17	Impact of ICT in Higher Education in India	Dr. Pawan Naik	85
18	Role of ICT in Quality Enhancement in Higher Education in India	Dr. Archana Patki (Kahale)	90
19	IT and Teaching	Dr. Mahesh Joshi	95
20	Role and Significance of ICT in Rural Higher Education	Dr. Dadarao Upase	97
21	Impact and Suitablity of Use of Information Technology with Reference to Physical Education in the Context of Pandemic of Covid-19	Dr. Pratap Chauhan	100
22	Suitability of ICT in Teaching Learning Process	Dr. Bhavesh Bhuptani	104
23	Innovations in Physical Education and Sports: Technological Tools Developing Sports	Dr. Devendra Gawande	107
24	Information and Communication Technology Uses in Teaching - Learning: with Respect to Opportunities and Challenges	Dr. Umesh Rathi	111
25	Technology in Physical Education and Sports	Sanjay Kale	116
26	Use of IT in Education	Dr. D. S. Wankhade	120
27	Social Media as Modern Tool	Dr. R. G. Suralkar	123
28	Expressionistic Technique in Tennessee Williams' 'The Glass Menagerie'	B. W. Somatkar	126
29	Use of ICT in Developing Academic Libraries	Dr. Sanjay Shenmare	129

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 5.625 (2019)
Special Issue - 261 (A) : Use of ICT in Teaching - Learning
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
March 2021

Emphasis on ICT / Digital Technology in National Education Policy 2020

Dr. Durga Anil Pande
Assistant Professor in Commerce
Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee

Abstract:

Abstract deals with the summary of the study. It consists of the manner in which the present study had been conducted. It indicates the line of approach of the study and consists of information related to the various aspects of study, which includes rationale of the study, aims and objectives of the study, hypotheses formulated for the study, methodology used for the study, tools constructed for collection of data, Major findings of the study, National Education policy 2020 developed under the study followed by educational implications and suggestions for further research. On the whole abstract contains a brief account of the whole study.

Introduction:

Education Policy laysparticularemp has is on the development of the creative potential of eachindividual. It is based on the principle that education must develop not only cognitivecapacities both the'foundationalcapacities'of literacyandnumeracyand'higher order' cognitivecapacities,suchas critical thinking and problem solvingbut also, social,ethical,and emotional capacities and dispositions India is a global leader in information and communication technology and in other cutting-edge domains, such as space. The Digital India Campaign is helping to transform the entire nation into a digitally empowered society and knowledge economy. While education will play a critical role in this transformation, technology itself will play an important role in the improvement of educational processes and outcomes; thus, the relationship between technology and education at all levels is bi-directional. Given the explosive pace of technological development allied with the sheer creativity of tech-savvy teachers and entrepreneurs including student entrepreneurs, it is certain that technology will impact education in multiple ways, only some of which can be foreseen at the present time. New technologies involving artificial intelligence, machine learning, block chains, smart boards, handheld computing devices, adaptive computer testing for student development, and other forms of educational software and hardware will not just change what students learn in the classroom but how they learn, and thus these areas and beyond will require extensive research both on the technological as well as educational fronts.

Objective: -

1. Digitalized pedagogy and classrooms
2. A layered Accreditation system
3. Self – reliant India
4. Sustainable development goals
5. Education as Economy booster
6. Equipping teachers with latest technology and education methodology
7. Internationalization of Higher Education

Methodology

The methodology consists of a conceptual discussion on highlighting the gist of the national education policy framework & ICT, highlighting various section of the policy of NEP 2020 and comparing it with currently adopted education policy. Identifying the innovation made

SPECIALISSUE– VII : MAY–2021

IMPACT FACTOR : 5.473 (SJIF)

CHIEF EDITOR
Dr. Anil Dodewar

EDITOR
Dr. Ghizala. R. Hashmi
Dr. Siddharth Meshram
Prof. Mohd Asrar

PUBLISHED BY:
UPA GROUP PUBLICATION
In Association with
Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Commerce and Science Kamptee

CORPORATE OFFICE:
38, Mitra Nagar, Manewada Cement Road, Nagpur-24.

PUBLICATION :
The UPA Interdisciplinary e-journal is published Bi-annually.

© All Rights Reserved.
The views expressed in this publication are purely personal judgments of the authors and do not reflect the views of Journal or the body under whose auspices the journal is Published.

SETH KESARIMAL PORWAL COLLEGE OF ARTS AND SCIENCE AND COMMERCE, KAMPTEE (NAGPUR)

In Association with

UPA National Peer-Reviewed Interdisciplinary e-Journal

Sr.No.	Name of Contributor	College Name	Title of Research Papers	Page No.
English				
1	Dr. Somnath Barure	Vasantrao Naik Govt. Institute of Arts & Social Sciences, Nagpur	IMAGERY, VISION, SYMBOLISM AND DICTION IN JAYANT MAHAPATRA'S SELECTED POEMS: A READING	1
2	Dr. Renuka L. Roy	S. K. Porwal College, Kamptee	PORTRAYAL OF JAHAJI BEHEN AS THE CULTURAL AMBASSADORS IN TRINIDAD WITH SPECIAL REFERENCE TO PEGGY MOHAN'S JAHAJIN	8
3	Dr. Sopan S. Bonde	Late N. P. Waghaye College, Ekodi	OKTRIBAL COMMUNITIES DANCES AND SONGS WITH REFERENCE TO THE BAIGASPRIMITIVE TRIBAL GROUP IN INDIA	13
4	Dr. Indira A. Budhe	S. S. Girls' College, Gondia (M.S.).	CREATIVITY AND INTELLIGENCE	17
5	Prof. Siddarth Patil	Rani Laxmibai Mahila Mahavidyalaya, Sawargaon	THEME OF DEJECTED HEARTS INKIRAN DESAI'S NOVELTHE INHERITANCE OF LOSS	23
6	Dr Jayshree Thaware	S. K. Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee	GENETICALLY MODIFIED CROP: A STORY OF BT COTTON	28
7	Dr. Manjusha Y. Dhoble	G. College, Kalmeshwar	MARRIAGE AS A CAGE OF STORMY SILENCE	37
8	Prof. Rupesh Prakash Rede	Late Vasantrao Kolhatkar Arts College, Rohana	FACETS OF NATSAMRAT: A MARATHI PLAY (A CRITIQUE)	42
9	Dr. A.V.Ramteke	S.K. Porwal College, Kamptee, Nagpur	ECOSYSTEM STABILITY WITH MEGACHIROPTERAN AND MICROPTERAN BAT	45
10	Dr. G. R. Hashmi	S. K. Porwal College, Kamptee	FAIRY TALES OR BRUTAL TALES: A BRIEF ANALYSIS OF THE FAMOUS GRIMM'S FAIRY TALES	51

Sr.No.	Name of Contributor	College Name	Title of Research Papers	Page No.
English				
11	Mrs. S.N. Hirekhan	S. K. Porwal College, Kamptee	TRENDS AND IMPACT OF INFORMATION COMMUNICATIONTECHNOLOGY IN LIBRARIES	55
12	Mr. Bagul Ashok P.	M. G. Vidyamandir's Arts & Cmm. College, Yeola (Nashik)	IMPACT OF INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY ON COLLEGE LIBRARY SERVICES TOWARDS	60
13	Dr. Durga Anil Pande	Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee	IMPACT OF COVID-19 ON INDIAN TOURISM SECTOR	66
14	Avhad Sharad T.	KVNN Naik Arts, Commerce and Science College Canada Corner, Nashik	EFFECT OF ICT ON SERVICES, SOURCES AND FACILITIES OF COLLEGE LIBRARIES	71
15	Prof. Maheshkumar B. Bhaisare	N. J. Patel College, Mohadi. (Bhandara)	LITERATURE AND WORKS OF DR BABASAHEB AMBEDKAR IN EMANCIPATION OF WOMEN IN INDIA	76
16	Dr. Manish R. Chakravarty	S. K. Porwal College, Kamptee (Nagpur)	ARUN JOSHI'S THE STRANGE CASE OF BILLY BISWAS- A JOURNEY TO ONE'S INNER SELF	81
17	Dr. Niraj P. Kendhe	Arts, Commerce & Science College, Arvi (Wardha)	USE OF FLIPPED CLASSROOM: A REVIEW OF STUDENT ENGAGEMENT IN ONLINE TEACHING	85
18	Dr. Prashant Katole	Smt. Kesharbai Lahoti College, Amravati.(M.S)	NPA ISSUE IN INDIA: AN ANALYSIS	89
19	Dr. Pankaja Sudam Ingle	Arts Commerce and Science College, Amravat	RELEVANCE OF COMMUNICATION SKILLS FOR STUDENTS - A BRIEF STUDY	95
20	Dr.Indrajit Basu	Seth Kesarimal Porwal College, Kamptee	FOOTBALL CLUBS GOALKEEPERS DISTRIBUTION COMPETENCE	100

IMPACT OF COVID-19 ON INDIAN TOURISM SECTOR

Dr. Durga Anil Pande

Assistant Professor in Commerce,

Seth Kesarimal Porwal College of Arts

and Science and Commerce,

Kamptee

Abastract:*COVID 19 is a disease caused by a new strain of Coronavirus. The meaning of COVID-19 is CO means corona, VI means virus and D means disease. All the sectors of Indian Economy were affected by pandemic covid-19. i.e., Agriculture, Industry and service sectors.Tourism is the movement of a person from one place to another to visit and memorize the beauty of that place or to have fun. Tourism boosts the revenue of the economy, develops the infrastructure of the country. Tourism creates thousands of jobs, culture exchange through the country of the world. Because of COVID-19 we have to consider public health and life, staying at home safe, using sanitizer, social distancing. Covid-19 affected the adverse impact on Indian Tourism. Many sectors shutting down their business.This paper deals with the impact of covid-19 on Indian tourism sector.*

Key words:- *COVID 19, tourism, Indian Economy, pandemic*

Introduction:-

India is perceived as the land of yoga, meditation and serenity by most foreign tourists who visit the country every year. India is also an emerging superpower with cultural and traditional values with the sense"Atithi Devo Bhava". In the era of globalisation tourism is one of the fastest growing sectors in the world. Tourism is the major factor for the economic growth of the country. Tourism has greatcapacity to create large scale employment. Because of coronavirus all the sectors are affected. Due to the COVID-19 pandemic, the travel and tourism industry's employment loss is predicted to be 100.08 Million worldwide (Statista, 2020). The pandemic has not only affected economically but as well as politically and socially (Cohen, 2012). As the number of infected cases rising throughout the nation, and with the implementation of certain measures and campaigns like social distancing, community lockdowns, work from home, stay at home, self- or mandatory-quarantine, curbs on crowding, etc., pressure is created for halting the tourism industry/business. (Gretzel et al., 2020; Sigala, 2020).

Objectives of the Study:-

1. To understand the meaning of Covid-19
2. To focus on the impact of pandemic on Indian tourism sector

Hypotheses:-

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June -2021

ISSUE No- (CCXCVII)297

Changing Economy of DimandJubilee Independence India

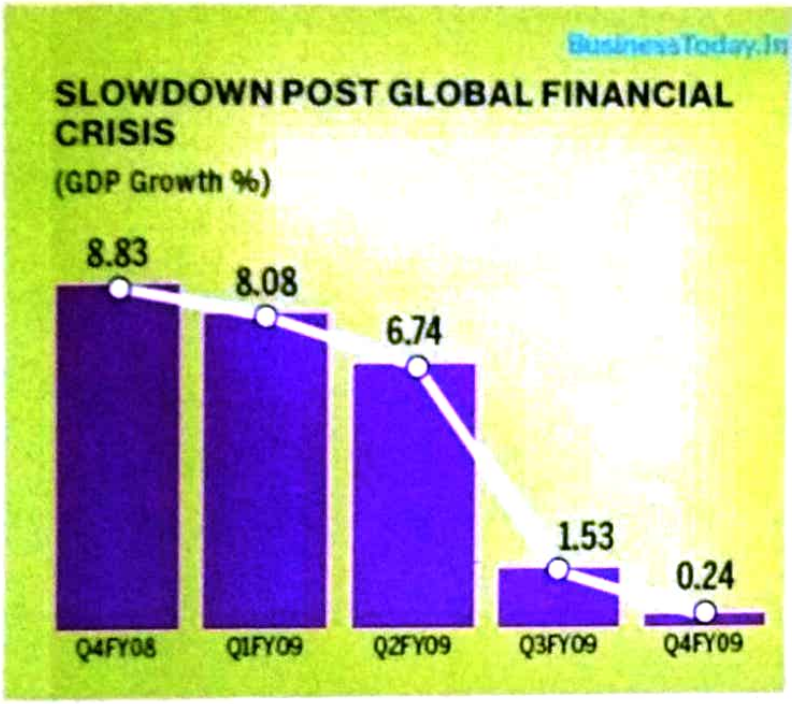

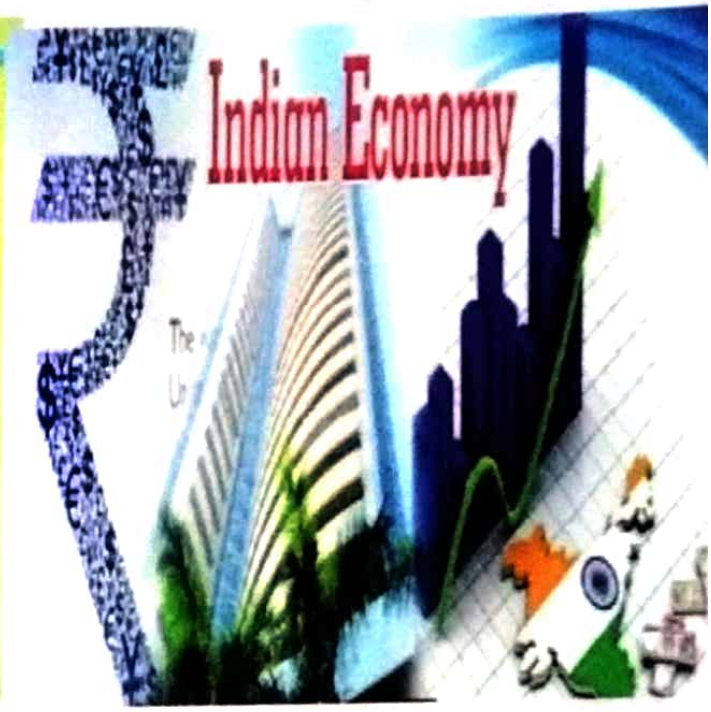

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editors
DR. P. N. Ladhe
Principal
Janata Kala Vanijya
Mahavidyalaya Malkapur,
Dist Buldana

Editor
Dr. T. P. More
Dept. OF Economics,
Janata Kala Vanijya
Mahavidyalaya Malkapur,
Dist Buldana

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	महाराष्ट्रातील कृषी क्षेत्रातील वैविधीकरण	डॉ. बोराडे योगेश अंकुशराव/ प्रा.डॉ.नागरगोजे भरत बाबुराव	1
2	स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर प्रमुख तिन कृषीकायदे २०२०: एक दृष्टीक्षेप	प्रा.डॉ.एस.एल.मेढे/ विश्वनाथ काशीनाथ शेळके	5
3	भारतातील लोकसंख्या बदल	डॉ. आस्तीक टी. मुंगमोडे	8
4	कोविड–१९ आणि भारतातील अंतरराज्य स्थलांतरण	डॉ. एस. व्ही. अडसोड	13
5	स्वतंत्र भारतातील लोकसंख्येच्या बदलाची प्रवृत्ती	प्रा. डॉ. प्रवीण भास्करराव हाडे	17
6	भारतीय कृषि क्षेत्र में ७५ ईयर में बदलाव	सुधाकर किसन माटे	20
7	भारतीय कृषी क्षेत्रासमोरील आव्हाने	डॉ. अलका अनिल मानकर	30
8	कृषी विकासात माहिती आणि दळणवळण तंत्रज्ञानाचे(आय.सी.टी.चे) योगदान	डॉ.जया सवाईथूल	35
9	स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक औद्योगिक निती(१९४७ से १९५५)	प्रा.वाय.एस.राजपूत	40
10	A study on Indian Agriculture Sector: In the light of Channing economy	**Dr. J.D. Gupta**	43
11	Changes in agricultural sector in 75 years	**Prin. P. N. Ladhe**	48
12	Study Goods and Service Tax: Economic Revival of India.	**Mr. Chandrakant B. Dhumale**	52
13	Changes in India's foreign trade	**Principle Dr. V.H. Nagre**	62
14	Changes in Banking and Insurance Sector in 75 years	**Dr. Prashant Bhagwan Kharche**	66
15	Unemployment: A Major Economic Problem in Indian Economy	**Prof. Dr. T. P. More**	70
16	In the light of Changing Economy: A study of opportunities and challenges for Commerce and Management Students in the job market.	**Mr. Rahul Oza**	75
17	'Progress of Road Infrastructure in 75 Years in India'	**Prof Dr. Mahavir N. Sadavarte**	80
18	Indian Money Market	**Dr.Dipak K.Raut**	87

19	Elation Between Training Programmes And Quality Of Work Life Of Municipal Councils Employees For Urban Development **1Mr. Omprakash A. Sonone, 2Dr. Sushma S. Deshmukh,**	92
20	Trend of FDI in India and Its Impact on Economic Growth. **Prof. Rahul G. Mahure**	99
21	Changes in banking sector and insurance sector in 75 years **Dr. R. S. Patil**	104
22	Changes in Education sector in India **Dr. A. B. Kharche**	109
23	Changes in Banking Sector Within 75 years **Dr.Durga Anil Pande**	113
24	Progress of Farm Mechanization in India Prof. **Dr. T. P. More**	116

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 297 (CCXCVII)
ISSN : 2278-9308
June, 2021

Changes In Banking Sector Within 75 years

Dr.Durga Anil Pande
Assistant Professor- In- Commerce
Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee
E-Mail -dr.durgashivdayalshukla@gmail.com, Mobile.No. 8698848851

Abstract

Banking plays an important role in the economic development of all the nations of the world. In fact, banking is the life blood of modern commerce. It may truly be said that modern commerce is so dependent upon banking that any cessation of banking activity, even for a day or two, would completely paralyze the economic life of the nation. Indian banking industry, today is in the midst of an IT revolution. A combination of regulatory and competitive reasons has led to the increasing importance of total banking automation in Indian banking industry. Indian banking provides services with new technology which saves money and time. This paper details the changes in the banking sector within 75 years.

Key words: ATM, EFT, ECS, MICR Technology, Smart Cards.

Introduction

Banking in India, as we see today, as the result of a slow and gradual development. Though India had a system of indigenous banking from very early times it was not similar to the banking of the modern times. Modern commercial banking originated in India during the latter part of the 19th century and the early 20th century,mainly due to the development of foreign trade and convergence of the organised commercial and industrial sectors. Till the advent of the presidency bank, the European Agency Houses acted as bankers. They accepted deposits from the British officers serving in India and the Europeans who had served in India. They financed trade with such funds and,43cxzat certain times, even helped the government. The Indian banking firms had a very effective credit network for flow of funds from one part of India to the other.

Objectives of theStudy

- To understand the development of Indian banking
- To study the recent services provided by banks

Hypotheses

- Banking has played a very important role in the economic development
- Indian banking provides services with new technology

Methodology

The present research uses the descriptive analysis method using data and information published in books, internet, research papers and journals.

Role of Commercial banks in developing economy

Commercial banks have to perform a variety of functions which are common to both developed and developing countries. These are known as "General banking" functions of the commercial banks. The modern banks of a more variety of functions are divided into two categories. First is primary function and second is secondary functions. Primary functions are Acceptance of deposits,Advancing loans and Creation of credit. Commercial banks have to

PRINT ISSN : 2395-6011
ONLINE ISSN : 2395-602X

ABSTRACT BOOK

International Multidisciplinary E-Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building

Date : 11th to 13 th October 2021

Organised by

Department of [English, Marathi, Sociology, History, Commerce, Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics]
Shetkari Shikshan Sanstha's
Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist.
Yavatmal, Maharastra, India

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH IN SCIENCE & TECHNOLOGY

VOLUME 9 - ISSUE 5 , SEPTEMBER-OCTOBER-2021

Email : editor@ijsrst.com Website : http://ijsrst.com

205	The Role of Maharashtra Gramin Bank in the Development of Rural Socio-Economy Dr. Rajesh M. Jadhav
206	Can Women empowerment be an accelerator to achieve sustainable development goals? Dr. Sonal Agrawal
207	Cyber Security In the Indian Banking Sector Nuruddin khan, Sandeep Bala
208	Servqual Analysis Of Indian Stock Broking Companies – A Survey R. Kajapriya, Dr. S. Venkateswaran
209	A Study On Effects of Mergers & Acquisitions on The Financial Performance Of The Acquiring Organisation Dr. Sunaina Sardana
210	The Socio-Economic Effects of COVID-19 Mr. Mohammed Qasem Al-Maflehi, Mahdi Qasem Saeed Saeed, Prof. Dileep Arjune
211	AGRI RE-FORM MADASU VEERENDER
212	The problems and issues in urbanization in India Dr. Santosh Nivrutti Ghongade
213	Agricultural Financial Support granted by NABARD-An Analysis Ms.A.Banupriya, Dr.V.SureshBabu
214	Role of Rural Women Entrepreneurs towards Nation Building: A Study on Opportunities and Challenges of Entrepreneurs of Sualkuchi Village of Kamrup District of Assam (India) Dr. Runumoni Lahkar Das
215	Impact of Financing Policies on Loan Growth: A Case Study of AXIS Bank, India Mahdi Qasem Saeed Saeed, Mr. Mohammed Qasem Al-Maflehi, Dr. D. A. Nikam
216	Financial Literacy Among Working Women - A Study In Mangalore City Ms. Bharathi R, Dr. Subhashini Srivatsa
217	Use of Digital Platform in Teaching Languages Dr. Elisha Kolluri
218	Impact of COVID-19 on the performance of NIFTY Pharma stocks Dr. Hariom J. Puniyani
219	Future of E- Commerce In India Varsha Dhondiram Bansode, Dr. Sandeep B. Gaikwad
220	Growth of Telecommunication Sector And Foreign Direct Investment Dr. U. Jothimani
221	Empowerment of women through E-Banking in Agricultural Marketing Dr. Durga Anil Pande
222	भारतात ई-कॉमर्सचा विकास प्रा. डॉ. जया सवाईथूल
223	A Critical Study on New Education Policy-2020 Dr. Rupa Gupta
224	Impact Of Cashless Economy On Banking & Finance Prof. Dr. Deepak D. Nilawar
225	Comparative study of Pradhan Mantri Mudra Yojana (P.M.M.Y) of Top Ten States in India Dr. Borde G.D, Mr. Gopale S.D
226	Role of Business Ethics in Sustainable Development Dr. Harinder Kour
227	Education 4.0: A New Paradigm DuringIndustrial Revolution 4.0 Dr. Razeka Khan
228	Consumption Of Health And Wellness Food Products In Selected Urban Cities Of Maharashtra State-Trends, Attitudes And Drivers

International Multidisciplinary E- Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building
In Association with International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Volume 9 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

Empowerment of Women through E-Banking in Agricultural Marketing

Dr. Durga Anil Pande (Shukla)[1]
[1]Assistant Professor, Department of Commerce, Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee, Maharashtra, India

ABSTRACT

The status of women throughout the world and in India particular, has been changing for the better, in recent years social awakening, education, economic pressure and other factors have contributed significantly in narrowing the gap of social status and promoting social equality between men and women. Women play significant and crucial role in agricultural marketing and development. In most subsectors, they predominate at either end of the marketing chain, as a producer delivering small quantities to local markets, and as retail sellers in major markets, women have a prominent role in preparing, processing as well as sorting and grading of the agricultural products for marketing. Electronic banking played an important role in agricultural marketing. Empowerment in the contest of women's development is a way of defining, challenging and overcoming barriers in a woman's life through which she increases her ability to shape her life and environment. E-Banking supports women in agricultural marketing.
This paper details the online banking services supportswomen in agricultural marketing.

Keywords: KCC, NABARD, SHGs, ATM, Credit cards

I. INTRODUCTION

Traditionally, a woman has to perform her destined role i.e., cooking, child rearing and home making. Besides this she has to perform relation-based functions i.e., maintaining the family relationship and perform rituals. These are her indoor or interior functions performed within four walls of the house. As matter of fact these are her lifelong functions she has to design and develop her family and bear and share all the joys and sorrows modestly. Thus, she is a mover and moulder of her and family's life. Women have to do jobs that are time and labour intensive such as sowing, transplanting, weeding, intercultural, harvesting, threshing and post-harvest operations like, shelling, cleaning, trading and processing. They also contribute to the decision-making process for crop production, seed production and management, post-harvest management of agricultural and horticultural, produce biomass utilisation, livestock management, marketing and financial management [1]

II. OBJECTIVE OF THE STUDY

- To understand the socio- economic status of women.
- to understand the meaning of agricultural marketing.

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

THE JOURNAL OF ORIENTAL RESEARCH MADRAS

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

THE STUDY OF THE CONTRIBUTION OF NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT (NABARD) IN THE RURAL AND AGRICULTURAL DEVELOPMENT OF INDIA

Authored By

Dr. Durga Anil Pande

Assistant Professor, Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

Published in Vol. XCII-X : 2021

The Journal of Oriental Research Madras with ISSN : 0022-3301

UGC-CARE List Group I

Editor

THE STUDY OF THE CONTRIBUTION OF NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT (NABARD) IN THE RURAL AND AGRICULTURAL DEVELOPMENT OF INDIA*

BY

Dr. Durga Anil Pande♣
Assistant Professor, Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

Abstract

National Bank for Agriculture and Rural Development was established on 12th July 1982 with a paid-up amount of Rs.100 crore. In 2010, the paid-up amount of NABARD reached Rs.2,000 crore. NABARD is an apex institution of rural credit structure that provides loans for the promotion of agriculture, cottage, and small-scale industries, village industries and handicrafts, etc. NABARD mainly performs financial, developmental, and supervisory functions. Through which he is contributing to almost every aspect of the rural economy. Under these, he has various responsibilities. These include providing refinance assistance, creating rural infrastructure, preparing district-level credit plans, guiding and motivating the banking industry to achieve credit disbursement targets, supervising co-operative banks and regional rural banks, and best banking practices. Helping them to develop and helping them to join the CBS system, preparing new schemes for rural development, implementing the development plans of the Government of India, providing training to handicraft artisans, and providing them a platform to sell their products is included. This research paper has been written to find answers to the questions that how the National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) plays an important role in the agricultural and rural development of India? what is the contribution of NABARD to the development of the agricultural economy? what are the NABARD's Policies and schemes promoting rural economy and agricultural economy? what is the role of NABARD in the economic development of the country?

Key words: National Bank for Agriculture and Rural Development, financial functions, developmental functions, Supervisory functions, Rural economy, Agriculture economy.

Received 07September 2021, Accepted 25September 2021, Published 14October 2021

♣ Correspondence Author: Dr. Durga Anil Pande

Data Collection Method Used for Research:

This research depends on secondary data like books, magazines, reports, newspapers, and websites.

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X, Issue - IV,
October - December - 2021
English Part - I / II

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Inculcation of Human Values through Literature **Mr. Swapnil P. Dhomane**	1-6
2	Childhood Maladaptive Schemas on Marital Relationship **Sreedevi Nagireddy** **Mamata Vyas**	7-11
3	RFID Security System for Library **Naikwade Satish Sadashivrao**	12-21
4	Chemistry of Sea Water **Dr. Kishore Nabajirao Koinkar**	22-28
5	The Study of the Development of the Service Sector in India and its Impact on Trade and Commerce **Dr. Durga Anil Pande**	29-35
6	Endangered Languages of India Effects of Modernization on Scheduled Tribal Language **Dr. Sanjaykumar S. Koli**	36-38

5. The Study of the Development of the Service Sector in India and its Impact on Trade and Commerce

Dr. Durga Anil Pande
Assistant Professor, Seth Kesarimal Porwal College of
Arts and Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur.

Abstract

The importance of the service sector in India's economy is increasing continuously. The services that are mainly covered in the service sector are transportation, courier, information sector services, securities, real estate, hotels and restaurants, scientific and technical services, waste management, health welfare and social assistance; and arts, and entertainment services, etc. And its share in Gross Addition Value and Gross Addition Value addition is 55% to 60%. This increase accounts for two-thirds of India's foreign direct investment inflows and 38% of total exports. About 38 percent of the total exports are from the services sector. It is also known as the third sector of the economy.

Every economy has three sectors. Which are as follows: the primary sector (such as mining, agriculture, and fisheries), the secondary sector (construction), and the tertiary sector (the service sector). After studying the development trends of the economies of different countries, it is found that the economies of those countries move from the agricultural sector to the service sector, that is, the contribution of the service sector in the economy of those countries. In India, the contribution of agriculture to India's economy is about 51%, which is only about 14% at present. This research paper has been written to find the answer to the question that what is the contribution of the service sector in India's economy, what is the importance of the service sector for the development of trade and commerce, and how is the service sector important for a better economy.

Keywords: Service Sector, India's Economy, GDP, Development of Trade and Commerce

Data Collection Method Used for Research

This research depends on secondary data like newspapers, books, magazines, reports, and websites.

Recent Trends

in Commerce, Economics and Management

Dr. L. K. Karangale ▪ Dr. Varsha Sukhadeve
Dr. J. D. Porey ▪ Dr. R. R. Rathod ▪ Dr. N. B. Mathapati
Dr. Wasudeo D. Golait ▪ Mr. V. P. Hissal ▪ Dr. L. S. Hurne

Prashant

RECENT TRENDS IN COMMERCE, ECONOMICS AND MANAGEMENT

© Reserved

Prashant

Publisher | Printer:
Rangrao A Patil (Prashant Publications)
3, Pratap Nagar, Dynaneshwar Mandir Road,
Jalgaon 425 001.

Phone | Web | Email:
0257-2235520, 2232800
www.prashantpublication.com
prashantpublication.jal@gmail.com

Edition | ISBN | Price
January, 2022
978-93-92425-78-3
₹ 395/-

Cover Design | Typesetting
Prashant Publications

DOWNLOAD **Prashant Publications** *app for e-Books*
e -Books are available online at
www.prashantpublications.com / kopykitab.com

All rights reserved. No part of this publication shall be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (zerox copy), recording or otherwise, without the prior permission of the Author and Publishers.

Disclaimer:- The publisher/editor of the book is not responsible for errors in the contents or any consequences arising from the use of information contained in it.

Contents

1. **वस्तू आणि सेवा कराची भारतीय अर्थव्यवस्थेतील भूमिका..... 9**
   - डॉ. विठ्ठल शंकरराव फुलारी
2. **Post Covid Opportunities and Challenges.....14**
   - Dr. Shailesh M. Kewatkar, Mr. Madhav D. Chakolkar, Mr. Dipak V. Bhusari
3. **Value Addition and Digital Marketing of Crop Production.....18**
   - Dr. Dasharath V. Kale
4. **Cashless Economy In India- Present Scenario.....24**
   - Prof. Dr.Suresh Namdeo Gawai
5. **Crypto Currency And Bitcoin.....33**
   - K. Pratish
6. **Role of E-commerce In 21st Century.....43**
   - Dr. Vyankatesh Digambarrao More
7. **E-Commerce.....48**
   - Dr. Shailesh M. Kewatkar, Mr. Madhav D. Chakolkar, Mr. Dipak V. Bhusari
8. **E- Commerce - Challenges and Opportunities.....60**
   - Dr. Balkrushna S. Ingle
9. **Future of Online Education in India.....68**
   - Dr. Anil M. Tirkar
10. **Green Human Resource Management (HRM): Framework and Practices.....75**
    - Dr.Rajiv B. Khaire, Dr.Sunita V. Gujar
11. **Green Innovation and Entrepreneurship.....86**
    - Dr. Gaurav Jain
12. **बँकींग क्षेत्रातील चालू घडामोडी आणि सर्वसामान्य जनता 93**
    - डॉ. केशव सुर्यभानसा गुल्हाने

13. **Human Resource Accounting** 99
- B. Eswaraiah

14. **मेक इन इंडिया आणि उत्पादन क्षेत्र** 108
– ज्ञानेश्वर बापूराव जांभुळे

15. **Integration of e-business with e-Life is the global need of time** 114
- Prof. Meena Donagre

16. **Moving Towards Cashless Economy – Present Scenario in India** 119
- Dr. Nilesh N. Chotiya

17. **Post Covid Opportunities and Challenges** 124
- Kanumuri Vinaya Kumar

18. **Impact Of Agriculture Market On Indian Management System / Trends** 130
- Dhavale Sidhant Madhavrao

19. **Recent Trends in Commerce, Economics and Management** 136
- Dr. Sachin Kadu

20. **Recent Trends of Sustainable Development In Commerce and Management** 142
- Dr. Piyush U. Nalhe

21. **Crypto Currency and Bit Coin** 153
- Mr.Sumit Rajendra Ginode

22. **वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) तथा भारतीय अर्थव्यवस्था** 160
– डॉ. चित्रा राय, स्वर्णा मराठा

23. **E-Marketing** 169
- Dr. Durga Anil Pande (Shukla)

24. **Revolution of cashless economy in India** 174
- Dr. Sapna Ashish Nandeshwar

25. **स्वयं मदत व उन्नतीचा मार्ग–सहकार** 180
– प्रा.डॉ. जयंत डी. पोरे

26. **Cashless Transactions And Modes of Digital Payment** ... 184
- Lahankar Sarika Madhukar

E-Marketing

Dr. Durga Anil Pande (Shukla)
Assistant Professor- in- Commerce
Seth Kesarimal Porwal College of Arts and
Science and Commerce, Kamptee

Abstract:

A business is an organization where people work together. In a business, people work to make and sell products or services. A business can earn a profit for the products and services it offers. Business improves the quality of life in two ways. Firstly, it provides high-quality goods and service to the people required for their enjoyment, comfort, and health. Secondly, a business offers employment opportunities to the people by which they can generate income and improve the quality of life. Business is the activity of obtaining and selling products or services on a continuing basis. Marketing is a subset of business and consists of the process of reaching potential customers and preparing them for the sales process. E-marketing is a process of planning and executing the conception, distribution, promotion, and pricing of products and services in a computerized, networked environment, such as the Internet and the World Wide Web, to facilitate exchanges and satisfy customer demands. Its broad scope includes email marketing, electronic customer relationship management and any promotional activities that are done via wireless media.

This paper details the online marketing and its services provide to the customers.

Key words: business, E-marketing, electronic customer relationship

Introduction :

E-marketing is a process of planning and executing the conception, distribution, promotion, and pricing of products and services in a computerized, networked environment, such as the Internet and the World Wide Web, to facilitate exchanges and satisfy customer demands. It has two distinct advantages over traditional marketing. E-marketing

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Online and Print Journal, Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN Online: 2349-4182, ISSN Print: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Sanjeev C Shirpurkar"** has published article titled **"The increasing trend of criminalization in Indian politics and the future of Indian democracy (With special reference to 2019 lok sabha elections)".**

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**7**
Issue	:	**12**
Year	:	**2020**
Page Number	:	**88-93**
Certificate No.	:	**7-12-32**
Date	:	**4-12-2020**

IJMRD

Regards
International Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.allsubjectjournal.com
Email: research.manuscript@gmail.com
Ph: 9999888931

International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979; Impact Factor: RJIF 5.72
Received: 03-10-2020; Accepted: 18-10-2020; Published: 08-11-2020
www.allsubjectjournal.com
Volume 7; Issue 11; 2020; Page No. 55-58

Achievements and challenges of Indian democracy standing at the threshold of platinum jubilee

Sanjeev C Shirpurkar
Head-Department of Political Science, SK Porwal Arts, Comm and Science, College, Kamptee, Nagpur, Maharashtra, India

Abstract
Even in this era of 21st century, the democratic system of independent India, which follows the ancient democratic culture, stands at the entrance of the platinum jubilee year. The long journey of smooth functioning of the governance system of democracy has been very volatile. During this time we also saw the instability and poor system of coalition government while also realizing the harsh decision of majority governments. We have also seen the journey from Nationalization of Banks to Net Banking system, from cash payments to Digital payment and increase or decline in GDP rate. We have seen the creation of new laws in place of traditional laws and to some extent the judicial system of the country has come under the purview of Right to information act. During this period, we saw the increasing participation of youth at every level of the political system, increasing the political consciousness and voting percentage of voters and the common people occupying the top posts of the country. Considering the positive and negative role of the opposition, felt the sensitive and transparent role of the administration, then saw the highest leadership of the country while discharging the role of the "Pradhan Sevak" of the people. Undoubtedly, our democratic system is getting stronger day by day, but some problems related to education, health, unemployment, poverty, migration, security and elections are blocking the path of healthy functioning of democracy. In such situation, a mature political leadership, the formulation and implementation of farsighted policies and our self-determination, self-discipline, self- dependency, discretion and positive thinking will give a "Dimond Status" to the democracy of this country.

Keywords: democratic decentralization, administrative-transparency, politics of development, democratic values and ideals, judicial activism and impartiality, unemployment, poverty, migration, election process

1. Introduction

After hundreds of years of slavery, a new journey started in the path of democracy in independent India. The framers of the constitution represented the foundations of democracy and secularism as the basis for taking this nation on the path of socio-economic and political justice. Keeping on this path, today we have established ourselves as the largest democratic nation in the world. On analyzing this journey till platinum jubilee, we find that-on one hand we have got many achievements but on the other hand, due to circumstantial deviancies have also been deprived of many achievements. While vigorously combating all obstacles, our mature political leadership, visionary policies and programs, sensitive administration, decentralized system and energetic entrepreneurs-all are constantly striving to make this country's democratic system stronger and successful at its own level. Institutional and constitutional elements such as Panchayati Raj System, Independent Judiciary, Independent Election Commission, Adult suffer age, Interdependence of Legislature and Executive and five-year plans, 20-point programs, MANREGA and Make in India schemes have given auspiciousness to Indian democracy. This Indian path of democratic system is not only moving us in the direction of multifaceted development but also establishing us globally.

2. Review of Literature

Re-creating the ancient roots of democratic systems and institutions, the constitution makers decided to take independent India on the democratic path from 26th January 1950.The democratic system and institutions existed in this country during the Vedic period. In this era, organizations called "Sabha and Samiti" existed. The Samiti was functioning as the representative body of the people and the Sabha-as a small and elected body of senior citizens. Kashyap and Gupta (2005) [1] have cited that-"The working Republic states existed in the later Vedic era. These ancient republics represent the ideal example of the people-oriented institutions and self-government in India's. Soverignity was vested in the people in these republics. They followed many such rules and parliamentary procedures that are prevalent in today's era"(1).Similarly Sir Charles Metcalfe(1830)also describe that-"The village communities are little republics, having nearly everything they want within themselves and almost independent of any foreign relations"(2).Valmiki prasad Singh (2017) [4] has also quoted that-"In independent India, the Judiciary, Election Commission, Audit system and the Right to information act can be called an important step towards strengthening democracy"(3).An analytical study of the rich historical legacy of Indian democracy standing at the entrance of the platinum jubilee and emerging new trends after independence has been studied under this research paper.

3. Objectives of the Research Paper

The following two objectives have been set for the analytical study of the research title -

1. Analyze achievements of democratic institution, policies and programs in independent India.
2. Analyzing obstacles and difficulties in the path of democracy and presenting practical suggestions for their solution.

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Online and Print Journal, Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN Online: 2349-4182, ISSN Print: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Sanjeev C Shirpurkar"** has published article titled **"Achievements and challenges of Indian democracy standing at the threshold of platinum Jubilee".**

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**7**
Issue	:	**11**
Year	:	**2020**
Page Number	:	**55-58**
Certificate No.	:	**7-10-41**
Date	:	**8-11-2020**

Yours Sincerely,

IJMRD

International Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.allsubjectjournal.com
Ph: 9999888931

www.eprajournals.com

Certificate of Publication

EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR)

ISSN : 2455-3662 (Online) **Impact Factor :** (SJIF)7.032(ISI)1.188

Is hereby honoring this certificate to

Dr.Sanjeev.C.Shirpurkar

In Recognition of the publication of Paper entitled

WOMEN REPRESENTATION AND RURAL DEVELOPMENT THROUGH PANCHAYATI RAJ SYSTEM IN INDIA-EMERGING TRENDS AND CHALLENGES

Published under Paper Index 202010-01-005490

Volume 6 , *Issue* 10 , October, 2020

Dr. A. Singaraj
Chief Editor

Generated on : 30-Oct-20

e-mail : chiefeditor@eprajournals.com

Post Box 1936, Tiruchirapalli-620 009, Tamil Nadu, India.

कार्यालय - प्राचार्य, शासकीय रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय छुरिया
जिला - राजनांदगांव (छ.ग.)
Email-chhuriacollege@gmail.com Phone&Fax-07745273

क्रमांक /[illegible]/ जी सी सी / 2020 छुरिया, दिनांक 05/03/2020

प्रति,

डॉ. संजय शिरपुरकर
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
एस.के.पी. महाविद्यालय कामठी
जिला – नागपुर (महा)

विषय –राष्ट्रीय संगोष्ठी में सारगर्भित उद्बोधन हेतु आभार।

—00—

उपरोक्त विषयांतर्गत, महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में "पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका" विषय पर दिनांक 25 फरवरी 2020 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें आप विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहे। आपके सारगर्भित उद्बोधन से प्राध्यापक, शोधार्थी एवं स्नातकोत्तर छात्र –छात्राएं लाभान्वित हुए जिसके लिए महाविद्यालय परिवार आपका हृदय से आभार व्यक्त करता है तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखता है।

प्राचार्य
शासकीय रानी सूर्यमुखी देवी
महाविद्यालय
छुरिया (छ.ग.)

Impact Factor – 6.625 Special Issue - 225 Feb. 2020 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-research Journal

Role of Judiciary in Reinforcing Indian Democracy

Organized by

Political Science Department

Women's College of Arts & Commerce

310 B, New Nandanvan, Nagpur - 440 009

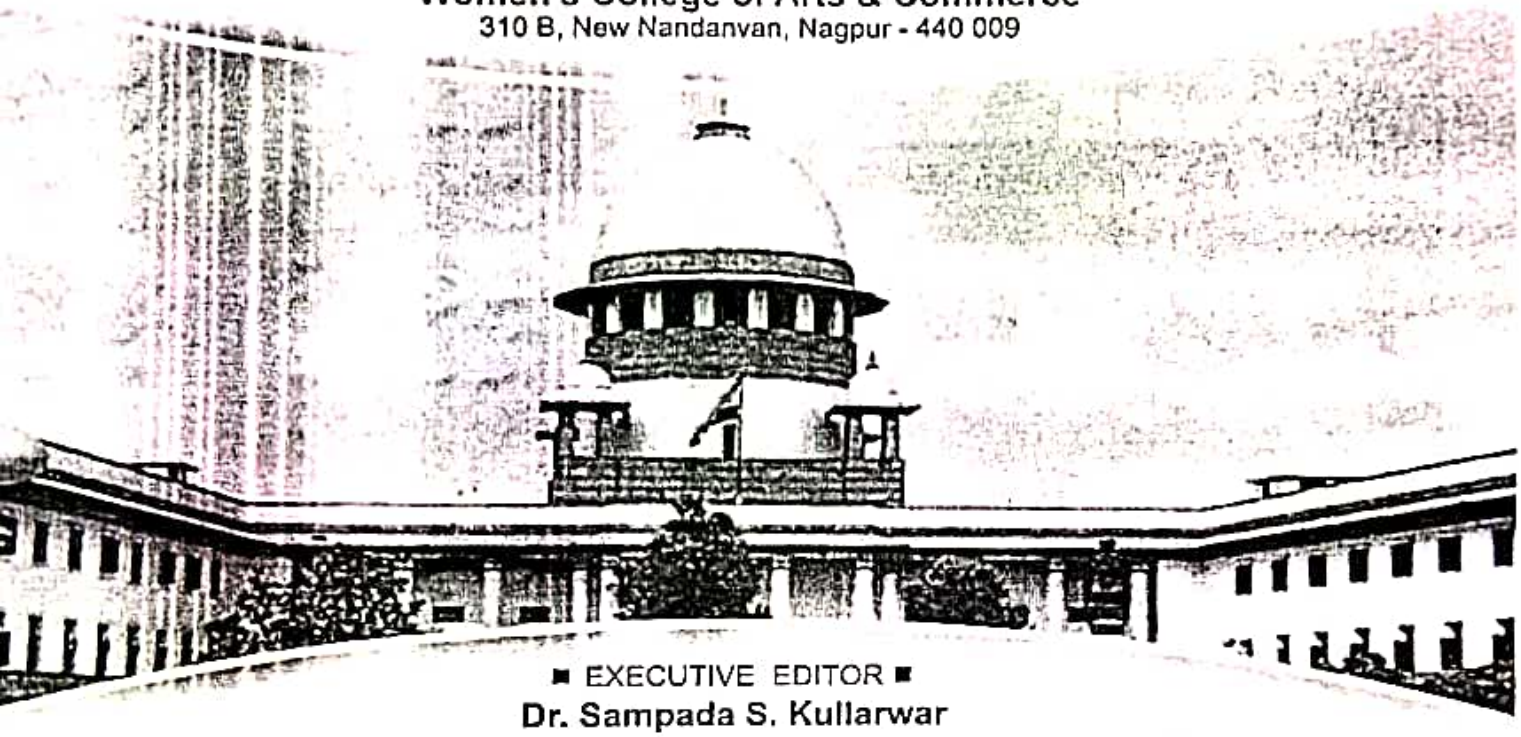

■ EXECUTIVE EDITOR ■

Dr. Sampada S. Kullarwar

■ ASSOCIATE EDITOR ■

Dr. Sandip Tundurwar ■ Dr. Santosh Dakhare ■ Dr. Anjali Gaidhane

■ CHIEF EDITOR ■

Dr. Dhanraj T. Dhangar

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Vaidarbhiya Mahila Sanstha's

WOMEN'S COLLEGE OF ARTS AND COMMERCE, NANDANWAN

310-B, New Nandanwan, Nagpur (M.S.) India.

Affiliated to R.T.M. Nagpur University, Nagpur. NAAC Re-Accredited with 'B' Grade

ONE DAY NATIONAL INTERDISCIPLINARY CONFERENCE

On

ROLE OF JUDICIARY IN REINFORCING INDIAN DEMOCRACY

ORGANIZED BY

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Certificate

This is to certify that

Dr. / Prof. / Ms / Mr. / Mrs. SANJEEV C. SHIRPURKAR

of S.K. Porwal College Kamptee, Nagpur has participated in the

One Day National Interdisciplinary Conference on

ROLE OF JUDICIARY IN REINFORCING INDIAN DEMOCRACY

organized by

Department of Political Science, Women's College of Arts and Commerce, Nagpur

on 8th February 2020.

He / She has presented a Research Paper entitled

Role of Judiciary in Reinforcing Indian Democracy

Dr. Sampada S. Kullarwar
Convenor

Dr. N.R. Dixit
Principal

EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR) - Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2455-3662
Volume: 6 | Issue: 10 | October 2020 || Journal DOI: 10.36713/epra2013 || SJIF Impact Factor: 7.032 ||ISI Value: 1.188

WOMEN REPRESENTATION AND RURAL DEVELOPMENT THROUGH PANCHAYATI RAJ SYSTEM IN INDIA- EMERGING TRENDS AND CHALLENGES

Dr. Sanjeev.C. Shirpurkar
Head- Dept. Of Political- Science,
S.K. Porwal Arts, Science & Comm,
College, Kamptee, Dist-Nagpur,
Maharashtra,India

Article DOI: https://doi.org/10.36713/epra5490

ABSTRACT

In our country, it has been an ancient and rich tradition of democratic decentralization through Panchayati institutions. Today, the independent India has completed 25 years on the path of democratic decentralization through the Panchayat Raj Act. During this period, more than 20 states have increased the number of seats reserved for women from 33% to 50%. In terms of number of women representatives -Jharkhand is on top in states like Rajasthan, Uttarakhand and Chhattisgarh, while Mizoram is at the bottom in this list. During the period of these 25 years, some new trends have emerged in Panchayati institutions like-Conversion of elite politics into mass politics, decline the concept of sarpanch pati, three-tier pressure on women in a three-tier Panchayati system, conflict status regarding the exercise of political rights, increase in percentage of women representatives and their political awareness, different role and different work culture of women representatives in urban and rural areas, efforts for economic self-reliance through self-help groups etc. In this era of information revolution in 21st century,these women leaders will have to be technically equipped for the practical implementation of transparent schemes like e-governance and m-governance.Today,panchayati institutions are being entrusted with the important responsibility of connecting people through various schemes related to rural India like "Make in India" and "Digital India". In such a situation, the success of the scheme like Digital Literacy Mission, Ayushyaman Bharat Yojana, Jal shakti Abhiyan, single use plastic ban and e-market plus depend to some extent on the working capacity of these representatives occupying more than half of the Panchayati posts. We can hope that maximum governance and minimum government based our Panchayati system will create immense possibilities in the female leadership, which will change the picture of rural India in the near future, it will also change destiny.

KEYWORDS- *Panchayati Raj, Rural Development, Decentralization, Political Awareness, Information Technology, E-Panchayat, E-Governance,Women's Reservation.*

INTRODUCTION

It is an absolute privilege of Indians that we live in the world's largest democratic nation. The sucess, importance and purity of any democratic nation depends on the fact that dominion power is vested in maximum number of people, the dominance of this dominating power should be more decentralized, expansion or transfer - Panchayati raj system is certainly an exemplary and praiseworthy endeavor in this direction. This system not only creates a democratic character among the people and people representatives, but also makes them capable of performing important roles at higher level in democratic system of India. In fact, India is a democratic nation as well as the village-nation. More than 70% of India's population lives in villages and panchayats have been the basis of the socio-economic and political system of rural India.

REVIEW OF LITERATURE

There is a rich tradition of Panchayati raj system and institutions in India. The administration was divided into two parts -"PUR" and "JANPAD" during the Ramayana period. In this period, words like "Gram","Jayaraman "Ghosh"were the symbol of decentralization of power. It is also mentioned in the chapter called "Shantiparva"that the smallest unit of governance was the village. In "Manusmriti"- decentralization of power, self-government and village administration were discussed. Even in the

SJIF Impact Factor : 7.032
ISI I.F.Value : 1.188

ISSN (Online): 2455-3662
DOI : 10.36713/epra2013

EPRA International Journal of MULTIDISCIPLINARY RESEARCH (IJMR)

Monthly, Peer Reviewed (Refereed) & Indexed International Journal

Volume - 6 Issue - 10 October 2020

SEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625
Special Issue 225 : Role of Judiciary in Reinforcing Indian Democracy
ISSN : 2348-7143
Feb. 2020

Role of Judiciary in Reinforcing Indian Democracy

Dr. Sanjeev C. Shirpurkar
H. O. D. Political Science
S. K. Porwal College, Kamptee, D-Nagpur

Abstract -

The history of the last 7 decades establishes India as the largest and strongest democracy in the world. The policy makers of this country, the politicians, the judges, the lawyers, the entrepreneurs,and the intellectual class have worked tirelessly to develop India as a strong nation. We are successfully facing the challenges in many fields like security, education,health, employment,judicial system & terrorism. Transparency in administrative functions, co-ordination of various organs of governance, freedom of judiciary and fairness, decentralization of powers gives dignity to democracy of this country. Our constitution establishes a sovereign democratic republic and our governance system is a combination of both federal and parliamentary arrangements,that is, our constitution establishes the supremacy of parliament, sometimes the supremacy of the judiciary. Increase in remuneration of labour, in respect of dissolution of assemblies, bonded wages,protection the rights of backward classes , women entering temples , succession of property to wome,divorce allowance for divorced women ,child labour and decision made by the courts in respect of Ayodhya dispute has empowered Indian democracy.

Key Words – Democracy,Legislative,Executive,,Judiciary,Public interest,Judicial activism,Judicial reform.

Introduction -

As a result of the sacrifices of the brave sons of freedom movements and the continuous struggle , this country was freed from the slavery of British imperialism 7 decades ago. A new era began after independence and the constitution makers pledged to move on a democratic path based on the concept of economic,social and political justice.It is quite difficult to analyze the history of post- independence era of this country ,which believes in the democratic civilization and fair justice system of almost 5000 years , but it can be said that many institutions associated with the democratic system of this democratic country like the administrative,executive,judiciary,election commission ,audit system is also our strengthened our system and process.

Review of literature -

To analyze the research title ,the literature related to judgement given by the judiciary in various cases and their impact was studied. Krishna Ayer (1978) believes that "the progressive development of the nation ,its unity and integrity,its legal equality is depends on judiciary" (1) Lord Sainki (1929) belief that the defence of the strong rock of laws is entrusted to the firm hands of the courts" (2) Gangal,S.C, (1971) believes that the judiciary look forward for the protection of Fundamental Rights" (3) Austin (1966) belief that " the need of the hour is that the judiciary should be free from all distress and political interference" (4) Mahadev sharma (1959) believes that " the supreme court has the right to do justice in accordance with the law made by parliament and the theory of natural justice" (5) In the context of these diverse perspectives , the research paper has attempted to establishe the judiciary as the guardian of democracy or vigilante watchdog.

Objectives of Research Paper -

For comprehensive and factual analysis of the research title ,the following 2 objectives have been set-

1) To study the challenges facing Indian Democracy,
2) Analyzing the role of the judiciary in addressing these challenges.

Hypothesis -

In this research paper ,it has been determined that- " In the last 7 decades ,the judiciary has generally provided strength to Indian Democracy through public welfare decisions within its constitutional framework".

Research Methodology -

This study is mainly based on historical ,descriptive and analytical method. In this paper ,various texts related to the research title ,like journals judicial decisions and judicial observations related to facts and figures have been analyzed.Internet has also been used for reviewing the study materials as required.

Discussion on Research Paper -

Today India is the largest and most effective democratic nation in the world. "Adult suffrage" and "one vote one value" attaches all the citizens to the democratic system. The specialty of our democracy is that unlike western

OUR HERITAGE JOURNAL

certify to all that

Dr. Sanjeev C.Shirpurkar

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

Role Of E-Governance In Rural Development

Published in Vol-68-No-9-2020 of OUR HERITAGE JOURNAL with ISSN:: 0474-9030

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

Impact Factor 6.6

S.L.Sharma

Editor, OUR HERITAGE JOURNAL

Yavatmal Zilha Akhil Kunbi Samaj Dwara Sanchlit

Gopikabai Sitaram Gawande Mahavidyalaya

Umarkhed Dist. Yavatmal - 445206

Re-Accreditted By NAAC B++ Grade with CGPA 2.79 Affiliated to Sant Gadge Baba Amaravati University Amaravati

One Day National Conference on
Emerging Innovative Trends in Higher Education
: An Interdisciplinary Approach

Wednesday, 25th September 2019

Organized By
Faculty of Humanities

Certificate

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Miss. Sanjeev C. Shirpurkar of Seth Kesarimal Porwal Arts, Com. & Science College, Kampthee has Participated /Presented / Published / Chaired the session in National Conference on Emerging Innovative Trends in Higher Education :An Interdisciplinary Approach on 25th September 2019. He/She has contributed / presented a paper on "Role of Education in Strengthening Democracy".

Dr. K. B. Shirse
Convener

Dr. M.N. Gaikwad
Principal

ISSN 0474-9030
Vol 68 Issue 10 February 2020

Government Efforts on Water Conservation and Management in Rural India: Problems and Prospects

Dr. Sanjeev C. Shirpurkar (corosponding Author)
Head, Department of Political Science,
Seth Kesarimal Porwal College of Arts,
Science and Commerce, Kamptee,
District- Nagpur (Maharashtra)
Sanjeevcs1971@gmail.com

Sunil Kumar Shirpurkar
Asst. Professor Spl. Education
NIEPVD Dehradun (Uttarakhand
avss18@gmail.com

ABSTRACT - A detailed examination of problems and prospects related to Government efforts in accordance to water conservation and management in rural India is attempted in this paper. It is a doctrinal truth that life is possible only on earth in the entire universe and 'water' is an important element for 'life preservation'. In ancient times, natural water sources were available in rural India, but due to the industrialization, urbanization, modernization of agriculture, irrigation and power projects, these water sources are gradually being destroyed. Continuous decline in ground water level, contamination of water sources and wild exploitation of water are some of the important conditions related to water resources. In such circumstances, the availability of safe and clean water is a formidable challenge. Therefore, the need today is to modernize water harvesting infrastructure and proper water management so that every household in rural India can have clean and safe drinking water. If we do not wisely use, store and manage water, then we may have to yearn for drops of water. Therefore, along with Government policies and efforts related to water conversation, harvesting and management public awareness, mass movement and public support are also required.

Key words: - Water harvesting, Water conservation, Water management, Ground water level, Water pressure, Water resources.

Introduction - It is a strange co-incidence and universal truth that life is possible only on th

Copyright © 2019Autho

ISSN. 0474-9030

Vol 68-Issue-48-January -2020

"Clean India Mission -Past, Present and Future"

Dr. Sanjeev.C.Shirpurkar,

H.O.D-Department of Political-Science

S.K.Porwal College,Kamptee,District-Nagpur (M.S)

Email- sanjeevcs1971@gmail.com

Abstract-

The tradition of cleanliness has been the foundation of our culture since ancient times. Although cleanliness is a individual element but its widespread impact can be seen on society and nation. . It is responsibility of the present generation to Providing clean, beautiful and pleasant environment to the future generation. Environmental protection, clean and healthy society with a view to creating strong nation building and long- term changes in individual and collective behavior - Swachh Bharat Abhiyan is representing the people's aspirations today. Under this mission,the target was to declare the entire India as open defection free by 2 oct. 2019. Under these target total 10,28,67,271 toilets were constructed, 706 districts and 603175 villages declared open defection free by 2018-19. Similarly, we succeed in bringing 63.3% rural population of 36 states and UTs under this ambit. From 2 oct 2019, programs like Jal Shakti Abhiyan (J.S.A) and ban on the use of single-use plastic have been added to this mission. This mission is paving the way for system change for the present generation and systemic protection for future generation. In short, we can say that this mission has become a symbol of change in political culture, administrative culture, work culture, thought culture, that is, mass and elite culture.

Key Words- Cleanliness, Open defection free, Jal shakti mission, Single use plastic, Enviromental protection, Public participation, Administrative transparency.

Introduction – The tradition of cleanliness has been the mainstay of the basic beliefs and lifestyle of our culture since the ancient times in the villages of India. As such, cleanliness is related to the individual conscience, but it also has a direct and indirect effect on other individuals, groups, nstitutins,various societies and nations. It is generally believed that every older generation wants to provide a clean ,beautiful and auspicious environment in the heritage for the next generation. For this to be possible, it is necessary that the present heritage should also be clean ,beautiful and pleasant. If our present is good than the path of golden future automatically paves.

Indian people has always been vigilant about cleanliness. In our country , the panch elements (Earth ,Water, Fire, Air and Sky) have made a continuous efforts to keep their environment clean while maintaining equilibrium status. Since ancient times till today ,special care is taken to clean the courtyard and surrounding premises of our homes. Even on festivals and

NATIONAL SEMINAR
ON
Role of Women under Panchayati Raj System
"पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका"

25 Fabuary 2020

ORGANIZED BY

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Govt. Rani Suryamukhi Devi Mahavidyalaya, Chhuria

Distt. - Rajnandgaon (C.G)

Certificate

This is to certify that Prof/Dr./Mr/Mrs/Ms डा. संजीव शिरपुरकर of शास. रानी सूर्यमुखी देवी महा. छुरिया, जि. राजनांदगांव (छ.ग.) Attended the seminar as a Chair Person/Subject Expert/Participant.

He/She has presented a paper / Invited Talk entitled पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका During National Seminar Organized by Department of Political Science Govt. Rani Suryamukhi Devi Mahavidyalaya, Chhuriya Distt. Rajnandgaon (C.G.) held on 25 Fabuary 2020.

Dr. K.J. Tandekar
Patron
Principal
Govt. Rani Suryamukhi
Devi Mahavidyalaya
Chhuria (C.G.)

Dr. Shusma Choure (Netam)
Convenor
Govt. Rani Suryamukhi
Devi Mahavidyalaya
Chhuria (C.G.)

OUR HERITAGE
ISSN: 0474-9030,Vol-68, Special Issue-9
International Conference On E-Business, E-Management, E-Education and E-Governance (ICE4-2020)
Organised by
Kamla Nehru Mahavidyalaya, Nagpur
7th & 8th February-2020

Role of E-Governance in Rural Development

Dr. Sanjeev C.Shirpurkar
HOD- Political-Science
S.K.Porwal College ,Kamptee
District- Nagpur (Maharashtra)

Abstract- The amazing and rapid progress in the computer sector since last two decades heralded the information revolution. India as well as the whole world is not untouched by its impact. Under e-governance ,using information and communication technology , all processes of government policies ,objectives and programs are digitalized. Prompt and transparent service delivery , ensuring the responsibility of various organs of governance ,transfer of information and public participation in decision making process is the key of e-governance. Today, about 6.5 lakh villages and more than 70% population living in rural India ,have reached mobile network , internet and electricity facilities. As a result , rural people living in remote villages have also joined the mainstream of the country. Employment and skill development in rural India, moving towards knowledge-based economy through digital India ,basic changes in agricultural economy :striving to balance between development and environment :changing picture of education and health, conversion of Gram panchayats into e-panchayat-are the direct evidence of changing rural India. Today affordable and dynamic e-services provided by the governmenBhim App,UPI ,E-Nam,GSTN,DG Locker,GEM,E-Hospital,Mygov,Umang,Swayam,NSP are implemented in rural India.As a result of the smooth availability of all these citizen-centric services ,not only administrative transparency has been promoted ,but there has also been an increase in communication and co-operation between the people and the government .

Key-Words- **Overall development, e-panchayat, e-littracy, e-health, NIC,NeGp, e-transport.**

Introduction ---India is the largest democratic country in the world with more than 70% of its population living in rural areas. In fact, the rural India truly seems to represent the reality of the whole of India. The success of democracy in India depends on decentralization of power and public participation at every level of power .E-governance is an innovative effort to strengthen the democratic governance system of India, to make administration transparent and connect rural India with the process of development.Efforts related to e-governance in independent India started from the mid-nineties when rural development policies were emphasized to increase civic amenities. Initially schemes like computerization of land records ,banks and railways were implemented, which gradually expended to public utility schemes like e-governance. Today, meaningful efforts are being made to remove digital gap through schemes like Digital India and to ensure public

OUR HERITAGE JOURNAL

certify to all that

Dr. Sanjeev C. Shirpurkar

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

Government Efforts on Water Conservation and Managem

in Rural India: Problems and Prospects

Published in Vol-68-Issue-30-February-2020 of OUR HERITAGE JOURNAL with ISSN:: 0474-9030

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

Impact Factor 4.912(SJIF)

SJSharma

Editor, OUR HERITAGE JOURNAL

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November 2020 Special Issue 256

The New Normal : Evolving Scenario in Business & Economy

Guest Editor -
Dr. Amishi Arora,
Director,
Central Institute of Business Management,
Research & Development, Nagpur -25.

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Dr. Ajay Talwekar,
Asst. Professor, CIBMRD, Nagpur

Dr. Sagar Khursange,
Asst. Professor, CIBMRD, Nagpur

RESEARCH JOURNEY
MULTIDISCIPLINARY ONLINE RESEARCH JOURNAL

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

22	Impact of International Trade on Distribution of Income **Dr. Rosalin Mishra**	132
23	Judicial Approach on Force Majeure Clause in Financial Adhesion Agreements Focusing New Normal Scenario in India **B. Priya**	138
24	Relevance of Business Communication and Soft Skills in Modern English Curriculum **Dr. Renuka Roy**	143
25	A Socio-Psychological Perspective in Post Covid-19 **Dr.Renu Tiwari, Dr. Siddharth Meshram**	147
26	Relevance of Online Teaching and Learning in Higher Education During Pandemic: Its Advantages, Disadvantages and Different Technical Tools **Dr. Vaishali Meshram**	151
27	Corporate Governance and Ethics-The New Normal **Divyarajsinh Zala**	156
28	Teaching English through Bilingual Method - A Critical Study **Manish Chakravarty**	162

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

A Socio-Psychological Perspective in Post Covid-19

Dr. Renu A. Tiwari
Associate Professor (Eco.)
S.K. Porwal College, Kamptee
Email Id.-renutiwarngp@gmail.com
Mob.No.-8668988889

Dr. Siddharth H. Meshram
Assistant Professor (Eco.)
S.K. Porwal College, Kamptee
Email Id.-siddhmeshram@gmail.com
Mob.No.-9689940527

Abstract:

Taking a social-psychological perspective, this paper discussed the present and expected changes, also because the potential risks and opportunities arising from three pandemic attributed effects: depression and psychological state issues, force and nationalism. Indeed, the long-term implications of the pandemic are far-reaching from the economy to governance and from healthcare to education. None the less, even as a crisis carries risks, it's also in the course of opportunities.

Keywords: Depression and psychological state issues, Domestic abuse, Nationalism

Introduction:

The COVID-19 pandemic has plunged the earth into disarray as nations fight to regulate the spread of the virus. While much attention has been focused on health concerns, reports of the social-psychological effects arising from this outbreak are on the increase, from mental depression and domestic conflicts, to racist attacks and nationalistic behavior's. More concerningly, these social-psychological effects may have longer-term ramifications that will well outlive the pandemic. The Chinese language expresses the word crisis as denoting a state of both threat and opportunity. Although physical safety is of critical importance, it's vital to contemplate this pandemic's impact on social-psychological issues and also the accompanying risks and opportunities. This understanding will inform how individuals, organizations and governments can better manage the potential downstream risks, while capitalizing on opportunities arising from the crisis. We target three distinct effects arising from, and even accentuated by, the pandemic–depression and psychological state issues, violence and nationalism. These effects lie, respectively, at different levels in terms of how a private categorizes and perceives oneself: at the individual level, in relevancy close others, and as a member of a bigger and psychologically more distant grouping. For every social-psychological effect, we discuss the expected structural changes arising from it and also the corresponding potential risks and opportunities.

Depression and psychological state issues: Current and expected changes:

Given the gravity of and therefore the uncertainty surrounding the pandemic, it's natural for a spread of intense negative emotions to exacerbate, like fear and anxiety, stress and distress, anger and confusion. These emotions are driven by myriad stressors (e.g., physical safety concerns, financial uncertainty, negative and/or conflicting news) and might result in depression and other mental state issues as observed in previous outbreaks including SARS, MERS, and H1N1. Further magnified by a number of things like social isolation and perceived helplessness, mental state challenges may especially affect vulnerable segments of the population

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

August-2020

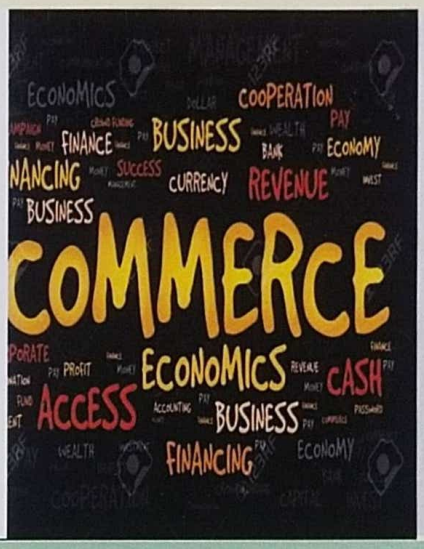

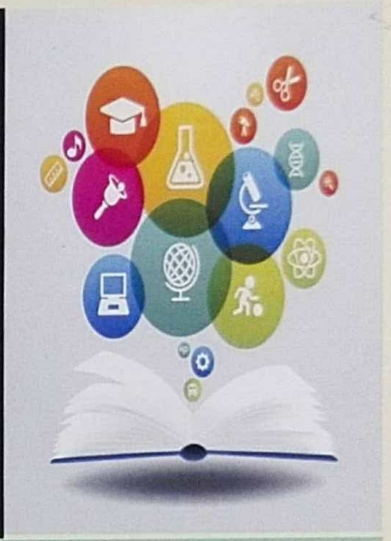

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Corona-19: Impact of Yoga and Exercise	Dr. Shridhar R. Dhakulkar	1
2	Economy of Maharashtra: A Study	Dr.Liladhar D. Kharpuriye	5
3	Savarkar's thoughts on Nationalism	Dr. Maya S. Watane	8
4	Gender Inequality In India: Issues In Development	Dr. Sushma Bageshwar	12
5	The Translation Of Dalit Writings And Its Impact	Mr. Jeetendra K. Talreja	17
6	Geotourism for sustainable development of Tribes: an Overview	Mr. Dinu Laxman Patil	20
7	Impact of Covid-19 on Indian Film Industry	Dr. Renu A. Tiwari	23
8	Criminal Liability of Corporations : The Legal Dilemma	Mahendra U. Ingole /Dr. Pankaj D. Kakde	27
9	Effectiveness of Brain Based learning on the achievement in Mathematics of secondary school students	Nilima B. Rindhe /Dr. Hrushikesh Dalai	30
10	Legislative Framework of Freedom of Press/Mediain India	Mr.Chaitanya A. Ghuge/ Dr.Pranay R. Malviya	36
11	Factors Influences and Motivational of Athlete in High Performance Sports	Ulhas V. Bramhe	40
12	The Indian Scenario of Internet Banking	Dr.Anil Satyanarayan Purohit	43
13	वेद नाकारणारा पहिला क्रांतिकारी संत तुकाराम	डॉ. एन. एच. खोडे	49
14	कोरोनाच्या महामारीत असंघटित मजूरांचे स्थलांतर समस्या आणि उपाय	प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर	55
15	शिलालेखांमधील वारकरी संप्रदायाचा इतिहास	डॉ. अनिता देशमुख	60
16	कोरोनाच्या पार्श्वभूमीवर केंद्र - राज्य संबंधाचा आढावा	प्रा.डॉ. भगवान विश्वनाथ धोटे	66
17	'महाराष्ट्राची माउली': वारकरी पंथ-संत आणि काव्य	प्रा.डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे	70
18	नागपूर शहरातील मजूरी करणाऱ्या महिलांच्या कौटुंबिक व आर्थिक समस्या	डॉ. माया प्रभाकर शिरखेडकर	75
19	मराठी पौराणिक कादंबरीतील ययाती	डॉ. भारती खापेकर	83

Impact of Covid-19 on Indian Film Industry

Dr. Renu A. Tiwari
Vice-Principal and Head
Department of Economics S.K.Porwal College of Arts, Science & Commerce Kamptee

Abstract

The COVID-19 pandemic has considerably influenced the amusement world, mirroring its belongings over all articulations fragments. Over the world and to moving degrees, movies and films have been closed, festivals have been dropped or conceded, and film releases have been moved to future dates or deferred uncertainly. As movies and films shut, the overall entertainment world dropped by billions of dollars, streaming ended up being more popular, and the heap of film exhibitors dropped radically. Various blockbusters at first reserved to be conveyed among March and November were conceded or dropped far and wide, with film manifestations similarly being put on an end.

The Covid-19 pandemic will influence the media and news source, winding up being horrifying for films, redirection events and entertainment. It will, in any case, uphold modernized media usage in India. KPMG has conveyed a report named "Covid-19: The Many Shades Of A Crisis-A Media And Entertainment Sector Perspective", which includes the impact of Covid-19 in the media and news source. The report communicates that the current condition could achieve a dunk in media use in the near term.

During the lockdown time span, TV, gaming, automated and OTT stages are seeing usage advancement. Of course, outside usage models, for instance, films, events, carnivals, are seeing an enthusiastic fall with social isolating guidelines set up, news association IANS declared. The report communicates that cutting-edge use will see brisk progressive improvement with India's 'automated billion' course obligated to animate truly.

Progressed media usage, particularly OTT, has seen a flood during the lockdown time span the extent that both time spent and more cutting-edge swarms. The resultant penchant game plan is likely going to realize another higher customary once the condition around Covid-19 goes leveled out,"

Key words: - COVID-19, film industry, Bollywood, lockdown.

The COVID-19 pandemic has substantially affected the entertainment world, reflecting its effects over all expressions segments. Over the world and to shifting degrees, films and cinemas have been shut, celebrations have been dropped or deferred, and film discharges have been moved to future dates or postponed uncertainly. As films and cinemas shut, the worldwide film industry dropped by billions of dollars, streaming turned out to be more famous, and the load of film exhibitors dropped drastically. Numerous blockbusters initially booked to be delivered among March and November were deferred or dropped far and wide, with film creations likewise being put on an end.

The effect of the lockdown on the Indian entertainment world everywhere is as yet being assessed; we investigate how thin creation and related fields have endured in India in the course of recent months. Enormous deliveries delayed, film, TV and web arrangement shootings ended, theaters unfit to screen motion pictures, every day wage representatives battling for their next

ISSN 2394-5303

Issue-74, Vol-01, March 2021

Printing Area®

International Peer Reviewed Referred Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

14) National Education Policy 2020 : A Comparison with the National Policy ...
Dr. Sushil Kumar, Sangli (M.S.) ||84

15) Sex Workers and Their Human Rights
Vani Vyas, Jaipur ||89

16) जलसंवर्धनात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान
प्रा. डॉ. अरूण बावा, जि. उस्मानाबाद ||99

17) बदलती शिक्षण पद्धत
श्री. बाळासाहेब रघुनाथ चव्हाण, जिल्हा– पालघर ||101

18) भूमि उपयोगाचे वर्गीकरण, पीकरचना आणि पीक रचनेतील बदल
डॉ. ढास डी.के., जि. बीड ||106

19) भारतीय संघराज्य आणि मर्यादा
प्रा. डॉ. सायबण्णा घोडके, जि. उस्मानाबाद ||109

20) विशेष आर्थिक क्षेत्र : विविध घटकावरील परिणाम व उपाययोजना
डॉ.संजयकुमार एम. कांबळे, जि.जालना ||112

21) भारतीय अर्थव्यवस्था : रोजगार संधी
डॉ. एन. के. मुळे, जिल्हा बीड ||114

22) साहित्य,समाज आणि संस्कृती यांच्यातील अनुबंधाचे दर्शन– 'नाद अंतरीचा ...
डॉ.नावडकर विद्या विजय, जि.रायगड (नवी मुंबई) ||118

23) बौध्द स्थळांचे धार्मिक परिवर्तन भारतीय पर्यटनातील संभ्रम: एक अभ्यास
डॉ. सुनिलचंद्र सोनकांबळे, जि.नांदेड ||124

24) देश के सरदार :सरदार पटेल
कुलदीप सिंह & डॉ० सुधा गुप्ता, जनपद जालौन ||129

25) भारत में ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव
डॉ. रेणु आशीष तिवारी, कामठी ||133

26) दादा भाई नौरोजी का आर्थिक चिंतन (धन निष्कासन के विशेष संदर्भ में)
डॉ. अभय कुमार सिंह, छपरा, बिहार ||137

27) कृष्णा अग्निहोत्री का व्यक्तित्व और कृतित्व
अपसाना खान & डॉ. रेशमा अंसारी, रायपुर (छ.ग.) ||142

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

25

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव

डॉ. रेणु आशीष तिवारी
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख एवं
सहयोगी प्रध्यापक (उपप्राचार्या),
सेठ केसरीमल पोरवाल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविदयालय कामठी

****

सारांश:

भारत में शिक्षा प्रणाली को शिक्षा की पहुंच बढाने, शिक्षा में असमानताओं को दूर करने, शिक्षकों के प्रशिक्षण ओर सुदूर क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी की भरपाई करने की आवश्यकता है। नियोजन साधनों के माध्यम से भारतीय नीति निर्माताओं द्वारा लंबे समय के प्रयासो के बावजूद, भारतीय शिक्षा प्रणाली देश सभी कोनों में शैक्षिक बुनियादी ढांचा प्रदान करने में सफल नही हुई है। यदयपी भारत के शैक्षणिक संस्थान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हर संस्थान के अलग—अलग लक्ष्य, मानक और नियम, बजट दबाव, सुरक्षा चिंताएँ और तकनिकी विरासते हैं। इसलिए पूरी समस्या के लिए एकल समाधान एक उपयुक्त मॉडल नहीं हो सकता है। शैक्षिक योजनाकारों के पास यह कहने का एक उचित आधार है कि, आईसीटी कुछ बड़ी समस्याओं का इलाज कर सकता है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली लंबे समय से कर रही है। आईसीटी अवसंरचना के प्रभावी उपयोग और लागत प्रभावी ई—लर्निंग मॉडल मुख्य मुद्दे को उपयुक्त रुप से संबंधित कर सकते हैं। ई—लर्निंग व्यापक रुप से ऑनलाइन शिक्षा, मिश्रित शिक्षा, नेटवर्क शिक्षा, लचीली शिक्षा आदि का जिक्र करता है। इसे तेजी से शिक्षा और विकास के अवसरों तक पहुंच को व्यापक बनाने के लिए एक उपकरण के रुप में देखा जा रहा है।

जैसा कि पिछले कई वर्षों से स्पष्ट है कि v RWy Ibu शिक्षा नई शिक्षा प्रौद्योगिकी के एक शक्तिशाली दावेदार के रुप में उभरी हैं। हाल के दिनों में कई ऑनलाइन पाठयक्रम चलाए गए हैं, जिन्होंने कई विषयों में हजारों छात्रों को शिक्षा प्रदान की हैं। ऑनलाइन शिक्षा का मानवीय अनुभव परिवर्तनशील हैं, हमें घटना के पीछे के मुद्दों को समझना चाहिए। प्रौदयोगिकी समाज के हर पहलू को छू रही है और इसे नाटकीय रुप से बदल रही है। लेकिन समाज का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अपरिहार्य हिस्सा जिसे नए नवाचारों और खोजों द्वारा सजाया गया है वह अवधारणा ऑनलाइन शिक्षा है। यह भारत मे शैक्षिक क्षेत्र के विकास का प्रभावी साधन हैं।

कुंजी शब्द : शैक्षिक विकास, ऑनलाइन शिक्षण, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई—लर्निंग

प्रस्तावना

पिछले एक दशक में, इंटरनेट ने ऑनलाइन शिक्षा के अभुतपूर्व विकास को सक्षम करके उच्च शिक्षा पर गहरा प्रभाव डाला है। इसके अलावा, जैसे—जैसे पूरी तरह से ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मिश्रित पाठ्यक्रम और आमने—सामने शिक्षा को एकीकृत करने वाले पाठ्यक्रमों का उपयोग किया जा रहा है, वैसे—वैसे शिक्षा के स्तर में सुधार आता जा रहा है। उभरती डिजिटल तकनीके जैसे विकी, ब्लॉग, पॉडकास्टिंग, सोशल सॉटवेयर और गेमिंग प्रौदयोगिकि द्वारा बनाए गए परिवर्तित शिक्षण वातावरण, न केवल समय, स्थान और यकीनन सीखने की शैलियों की बाधाओं को खत्म करते हें, बल्कि उच्च शिक्षा तक पहुंच प्रदान करते हैं, वे हमारे शिक्षण और सीखने की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देते हैं, आज से १०—२० साल पहले की तस्वीर देखें तो शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया एक समुद्री बदलाव से गुजरी है। प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन के लगभग हर क्षेत्र को संभाला है और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की शुरुआत पथ—तोड़ने वाले स्वरुप कि तरह हुई है। अब किसी को भी स्कूलों, पर समय या बहुत अधिक धन नष्ट करने की आवश्यकता नहीं हैं। सभी के लिए एक अच्छा इंटरनेट कनेक्शन

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

April -2020

SPECIAL ISSUE-CCXXIX (229)

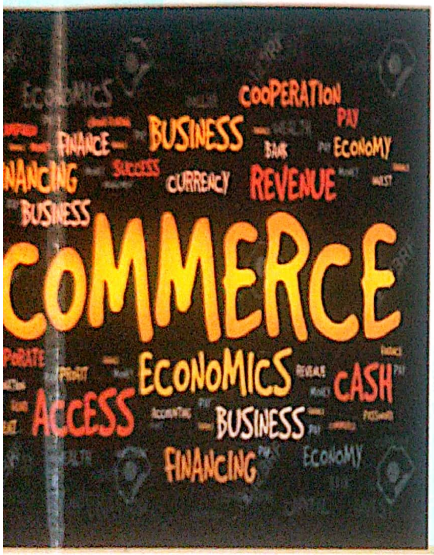

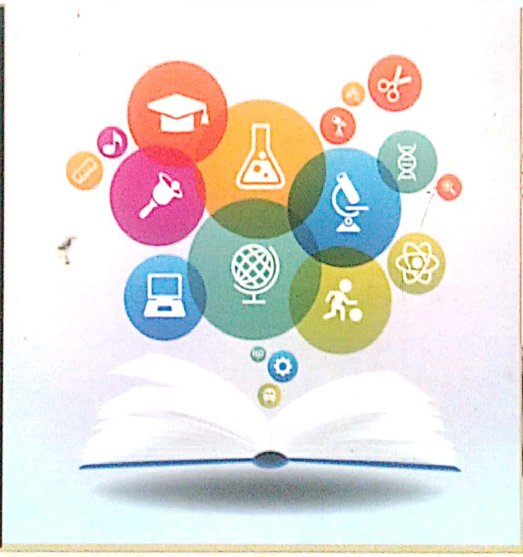

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned with OKEN Scanner

(SJIF) Impact Factor-7.675 ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April-2020

SPECIAL ISSUE- CCXXIX (229)

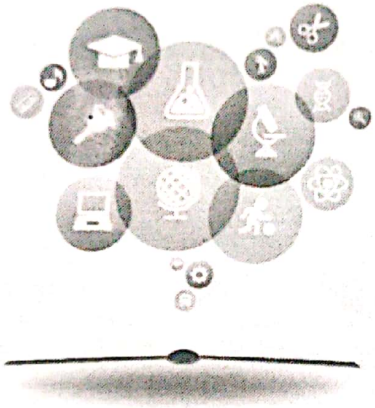

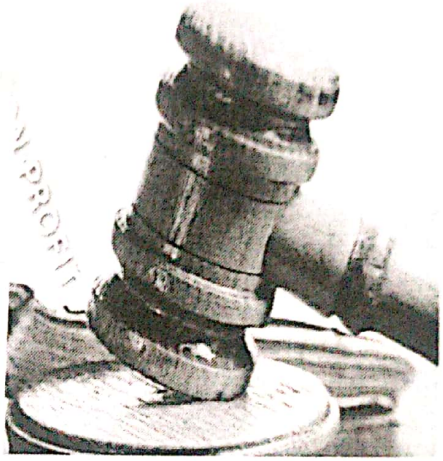

Chief Editor
rof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
earch & Development
ing Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Scanned with OKEN Scanner

20	"स्वामी रामानंदतीर्थ मराठवाडा विद्यापीठास सादर इतिहास पीएच.डी. प्रबंधाचे उल्लेख विश्लेषण" प्रा. दत्तराम रामजी रगडे	83
21	वृद्धांचा नातवांशी असलेला संबंध अभ्यासणे प्रा. डॉ. पूनम देशमुख	91
22	विदर्भातीलसिंचन अनुशेषामुळे कृषी उत्पादनावर व उद्योग व्यवसायातील रोजगार संधी झालेल्या परिणामाचे अध्ययन डॉ. मिलिंद. डी. गुल्हाने	94
23	विदर्भातील सेंद्रिय व जीवाणू खत यांचा वापर व लोकप्रीयतेतील वाढीचे अध्ययन डॉ. राधेशाम पिलाजी चौधरी	99
24	नागपूर जिल्हयातील काटोल तालुक्यातील संत्रा उत्पादकांच्या उत्पादन विषयक समस्या व उपाय योजनेचे विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ. रेखा मिलिंद गुल्हाने	103
25	भंडारा जिल्हयाच्या ग्रामीण आदिवासी भटक्या जातीतील लोकांना देण्यात येणाऱ्या मनरेगाच्या सेवासंबंधी अध्ययन डॉ. तारूण्य हन्नुपूरी मुलतानी	109
26	रामटेक पर्यटन स्थळावर पर्यटकांकरीता असलेल्या निवास व इतर सोई सुविधा संदर्भातील चिकित्सक अध्ययन प्रा.कल्पना कांतीलाल पटेल	113
27	नागपूर जिल्हयातील सावनेर व पिपळा येथील वेस्टर्न कोल फिल्डस् लिमिटेड द्वारा स्विकृत श्रमिक कल्याणकार्यच्याअभ्यास प्रा. निशिता राहूल अंबादे	118
28	यवतमाळ जिल्हयातील असंघटीत महिला कामगारांच्या आर्थिक समस्यांचे अध्ययन डॉ. हरिदास माणिकराव धुर्वे	123
29	गोंदिया जिल्हयातील हलबा समाजातील व्यवसायिकांची आर्थिक स्थितीचे अध्ययन प्रा. सुनिल नामदेवराव ईक्ष्वार	127
30	शेतकऱ्यांचे हितकर्ते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या शेतीविषयक विचारांची वर्तमान प्रस्तुतता प्रा. सचिन सुभाष बोलाईकर	131
31	सामाजिक ,वैचारिक क्रांतिची जपणूक करणारा' कथाकार : अण्णा भाऊ साठे प्रा.छत्रपाल श्रीपत लांबकाने	137
32	वर्तमान स्थितीत बाजार समिती विनियम कायदा प्रभावहिन प्रा. ए. एम. वानखडे	140
33	महात्मा गांधी व शैक्षणिक विचार प्रा. डॉ. संजय गुडधे	142
34	ऑनलाइन शॉपिंग सोय की डोकेदुखी डॉ. महेश गायकवाड	144
35	भारतातील मानवाधिकार आणि शिक्षण हक्क सतिश किसनसिंह चंदेल	147
36	Mahatma Gandhi's Views on Philosophy of Education Dr. Pankaj D. More	152
37	Privatisation of School Education and Social Inequality in India Ms.Pranali N. Ingole	156

Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhar' International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
April 2020

नागपूर जिल्हयातील सावनेर व पिपळा येथील वेस्टर्न कोल फिल्डस् लिमिटेड द्वारा स्विकृत श्रमिक कल्याणकार्याचा अभ्यास

प्रा. निशिता राहूल अंबादे
सहायक प्रध्यापक
सेठ केसरीमल पोरवाल कला आणि वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, कामठी

सारांश –

श्रमीक हा उत्पादनाचा महत्वाचा घटक आहे. तो समाधानी असणे आवश्यक आहे. श्रमीक जर पूर्णपणे समाधानी झाला तर संपूर्ण कार्यक्षमतेने कार्य केल्यानंतर रोख स्वरूपात मिळणा–या वेतनाषिवाय श्रमीकांना इतर सोयी सवलती मिळणे आवष्यक आहे. कोळसा खाणीमध्ये काम करणा–या श्रमीकांना फार मोठी जोखीम स्विकारावी लागते. खाणीत काम करतांना काळजी घेतली तरी अपघात होण्याची षक्यता जास्त असते. त्याच्या सुरक्षीततेकरीता प्रबंधकांनी कोणती जबाबदारी स्विकारली आहे.

तसेच खाणीच्या आतील भागात व वरील भागात काम करणा–या श्रमीकाला आरोग्यकारी सोयी पुरविण्यासाठी काय उपाययोजना केल्या आहेत, एखादा श्रमीक कोळसा खाणीत अपघात होऊन जखमी होत असेल, आशिंक किंवा पूर्ण विकलांग होत असेल किंवा मरण पावत असेल तर त्याला किंवा त्यांच्या आश्रीतांना कोणत्या सामाजिक सुरक्षा प्रदान केल्या जातात. जे विविध कल्याण कार्यक्रम राबविण्यात येतात त्याचा फायदा श्रमीकांना होतो किंवा नाही, या सर्व बाबींचा अभ्यास करणे हीच भूमिका संशोधना मागे आहे.

प्रस्तावना

स्वातंत्र्यापूर्वी कामगारांची कार्यस्थिती साधारण होती. श्रमीकांच्या कोणत्याही मागण्यांकडे दुर्लक्ष केले जात होते. श्रमिक ज्या स्थितीत काम करतो त्या स्थितीबद्दल कारखानदार उदासीन होते. श्रमीकांकडून जास्तीत जास्त काम करून जास्तीत जास्त नफा मिळविणे हे धोरण होते. त्यामुळे मजुरांची स्थिती फारच खालावत गेली व पारतंत्र्यामुळे देषाचीही परिस्थिती खालावत गेली. इंग्लंडमध्ये झालेल्या औद्योगिक क्रांतीची छटा भारतातही दिसून आली व भारतातही औद्योगिक क्रांती झाली. यंत्रशक्तीच्या साहाय्याने उत्पादन घेणारे मोठमोठे कारखाने भारतात स्थापन झाले. कालांतराने श्रीमंत भांडवलदार व गरीब मजूर निर्माण होऊन त्यांच्यात संघर्ष होऊ लागला. ब्रिटीषांच्या काळात श्रमीकांची पिळवणूक होऊ लागली. कारखानदारांनी श्रमीक शक्ती स्वत:च्या स्वार्थाकरीता राबविली यातून श्रमीक संघटना निर्माण झाली. श्रमीक संघटना श्रमीकांच्या असंतोशाची दखल घेऊ लागली. श्रमीकांविषयी अनेक कायदे तयार करण्यात येऊ लागले. त्यांच्या कल्याणाबाबत अनेक तरतुदी करण्यात आल्या. श्रमीक हा उत्पादनाचा महत्वपूर्ण सजीव घटक आहे. उत्पादनांच्या वाढीचे बहुतांश यश हे श्रमीकाला जाते. आजच्या औद्योगिकरणाच्या युगातही श्रमीकाला महत्वाचे स्थान प्राप्त झाले आहे.

श्रमीक कल्याणाची आवश्यकता आणि महत्व

श्रमीक कल्याणाची आवश्यकता आणि महत्व भारतात श्रमीक कल्याणासंबंधी कार्याची किती आवश्यकता आहे. हे जर आपण भारतातील श्रमीकांच्या कार्यस्थळाची व उद्योगाची पाहणी केली असल्यास समजून येईल. तसे पाहता आपला देश औद्योगिकरित्या मागासलेलाच आहे. व सध्या

Scanned with OKEN Scanner

SPECIALISSUE– VII : MAY–2021

IMPACT FACTOR : 5.473 (SJIF)

CHIEF EDITOR
Dr. Anil Dodewar

EDITOR
Dr. Ghizala. R. Hashmi
Dr. Siddharth Meshram
Prof. Mohd Asrar

PUBLISHED BY:
UPA GROUP PUBLICATION
In Association with
Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Commerce and Science Kamptee

CORPORATE OFFICE:
38, Mitra Nagar, Manewada Cement Road, Nagpur-24.

PUBLICATION :
The UPA Interdisciplinary e-journal is published Bi-annually.

© All Rights Reserved.
The views expressed in this publication are purely personal judgments of the authors and do not reflect the views of Journal or the body under whose auspices the journal is Published.

SETH KESARIMAL PORWAL COLLEGE OF ARTS AND SCIENCE AND COMMERCE, KAMPTEE (NAGPUR)

In Association with

UPA National Peer-Reviewed Interdisciplinary e-Journal

CamScanner

Sr.No.	Name of Contributor	College Name	Title of Research Papers	Page No.
English				
11	Mrs. S.N. Hirekhan	S. K. Porwal College, Kamptee	TRENDS AND IMPACT OF INFORMATION COMMUNICATIONTECHNOLOGY IN LIBRARIES	55
12	Mr. Bagul Ashok P.	M. G. Vidyamandir's Arts & Cmm. College, Yeola (Nashik)	IMPACT OF INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY ON COLLEGE LIBRARY SERVICES TOWARDS	60
13	Dr. Durga Anil Pande	Seth Kesarimal Porwal College of Arts and Science and Commerce, Kamptee	IMPACT OF COVID-19 ON INDIAN TOURISM SECTOR	66
14	Avhad Sharad T.	KVNN Naik Arts, Commerce and Science College Canada Corner, Nashik	EFFECT OF ICT ON SERVICES, SOURCES AND FACILITIES OF COLLEGE LIBRARIES	71
15	Prof. Maheshkumar B. Bhaisare	N. J. Patel College, Mohadi. (Bhandara)	LITERATURE AND WORKS OF DR BABASAHEB AMBEDKAR IN EMANCIPATION OF WOMEN IN INDIA	76
16	Dr. Manish R. Chakravarty	S. K. Porwal College, Kamptee (Nagpur)	ARUN JOSHI'S THE STRANGE CASE OF BILLY BISWAS- A JOURNEY TO ONE'S INNER SELF	81
17	Dr. Niraj P. Kendhe	Arts, Commerce & Science College, Arvi (Wardha)	USE OF FLIPPED CLASSROOM: A REVIEW OF STUDENT ENGAGEMENT IN ONLINE TEACHING	85
18	Dr. Prashant Katole	Smt. Kesharbai Lahoti College, Amravati.(M.S)	NPA ISSUE IN INDIA: AN ANALYSIS	89
19	Dr. Pankaja Sudam Ingle	Arts Commerce and Science College, Amravat	RELEVANCE OF COMMUNICATION SKILLS FOR STUDENTS - A BRIEF STUDY	95
20	Dr.Indrajit Basu	Seth Kesarimal Porwal College, Kamptee	FOOTBALL CLUBS GOALKEEPERS DISTRIBUTION COMPETENCE	100

CamScanner

TRENDS AND IMPACT OF INFORMATION COMMUNICATIONTECHNOLOGY IN LIBRARIES

Mrs. S.N. Hirekhan
Librarian
S. K. Porwal College,
Kamptee

Abstract: *Information and communication technology (ICT) plays a vital role in bringing about changes in every sector. Library is also one of the parts where the information communication technology is wildly using. Information Communication Technology has changed the nature of academic libraries. This paper discussed the impact of ICTs in library and information services and gains of ICT. There are many technologies which are using day by day practice and also satisfy the user information needs in less time. This paper assessed the need for ICT application in library services. This paper went further the impact and application of ICT in libraries as good opportunity for giving the best and quick services to its user.*

Keywords: *- Information communication Technology, Information services, application of ICT*

Introduction :-

Now day information is most valuable thing in the world. Information is commodity wealth and product. Information technology has transformed the whole world into a global village with a global economy which is increasingly dependent on the creative management, services. ICT may be defined as technology which is used to store, progress and communicate the required information on demand or in anticipation. ICT is a very broad term in the field of information technology which is brought to use in information and its communication. Computing technology, communication technology, and mass storage technology are some of the areas of continuous development that reshape the way libraries access, retrieve, store, manipulate, and disseminate information o users. ICT has impacted on every sphere of academic library activity especially in the form of the library collection development strategies, library building and consortia. Information and Communication technology (ICT) has brought unprecedented changes and transformation to academic library and information services. The impact of ICT characterized on information services by changes in format, content and method of production, and delivery of information products. ICT plays an important role in academic libraries and their professionals. Due to ICD professionals give quick service to user and they work with technologies. They use ICT in conventional work as well as services with the help of IT, communication, network and internets. ICT is more essential part of academic libraries now days.

Needs of Information Communication Technology:-

CamScanner

अकादमिक हिन्दी

स्थिति और संभावनाएँ

मनोज पाण्डेय

अकादमिक हिन्दी

स्थिति और संभावनाएँ

सम्पादक

डॉ. मनोज पाण्डेय

ए.आर. पब्लिशिंग कम्पनी

दिल्ली

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फ़ोन : + 91 9968084132, + 91 7982062594

arpublishingco11@gmail .com

AKADMIK HINDI : STHITI AUR SAMBHAVNAYEN

Edited by Manoj Pandey

ISBN : 978-93-88130-36-3

Criticism

© लेखकगण सम्पादक

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : ₹ 675

ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल

मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

हिन्दी भाषा और मीडिया लेखन में रोजगार 106
—डॉ. सुनिता पं. बनसोड
कम्प्यूटर में हिन्दी रोजगार के अवसर 111
—डॉ. ईश्वर जानकीराम पवार
हिन्दी में अनुसंधान और आलोचना 116
—कु. नियति अग्रवाल
हिन्दी में रोजगार के क्षेत्र 120
—कु. प्रतिमा रा. बैसवारा
हिन्दी मे रोजगार के क्षेत्र 123
—डॉ. राजकुमारी यादव
हिन्दी में रोजगार के क्षेत्र 127
—प्रा. रितु उ. तुरकर
हिन्दी भाषा एवं साहित्य में रोजगार के अवसर 132
—डॉ. साधना गुप्ता
शोध लेखन : नई दिशाएँ-नई चुनौतियाँ 136
—सुमिता राय
राष्ट्रभाषा हिन्दी के नये आयाम 142
—डॉ. हरगोविंद टेंभरे
टेलीविजन एवं सिने जगत में हिन्दी भाषा व साहित्य रोजगार के अवसर 146
—डॉ. प्रतिमा त्रिपाठी
हिन्दी में रोजगार के अवसर 151
—डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा
हिन्दी में रोजगार के क्षेत्र 154
—डॉ. नीलम वैरागडे
हिन्दी में शोध की दिशा और दशा 159
—प्रीति पांडेय
हिन्दी में शोध प्रलेखन 164
—रणजीत भारती
हिन्दी भाषा में रोजगार के क्षेत्र 168
—डॉ. विकास कामडी
हिन्दी में अनुसंधान के विविध आयाम 173
—डॉ. रमेश टी. बावनथड़े
आज के दौर में हिन्दी की अकादमिक स्थिति 177
—डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला

हिन्दी भाषा में रोजगार के क्षेत्र

डॉ. विकास कामडी

हिन्दी भाषा की लोकप्रियता विश्वभर में बढ़ती जा रही है उसी प्रकार से हिन्दी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। केन्द्र और राज्य सरकारें अर्थात हिन्दी भाषी राज्यों के विभिन्न विभागों में हिन्दी भाषा में काम करना अनिवार्य हो गया है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली चीनी (मंदारिन) भाषा है। इस सूची में हिन्दी भाषा का तीसरा क्रमांक लगता है। विश्व में हिन्दी बोलने वालों की संख्या करीब 500 मिलियन है तथा हिन्दी भाषा को अच्छी तरह समझने वालों की संख्या करीब 900 मिलीयन हैं। "हिन्दी एक साधारण भाषा ही नहीं, अपितु आज दुनिया की सबसे बड़ी भाषा है। हिन्दी और हिन्दी के विविध प्रारूपों, पर्यायों की गिनती की जाए तो यह 130 करोड़ लोंगों की भाषा है। यह धरती पर सर्वत्र बोली और समझी जाने वाली भाषा है। दुनिया की सबसे बड़ी भाषा मंदारिन को संख्या की दृष्टि से चाहे जो स्थान दे दिया जाए, बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी के बाद ही उसका क्रम है। हिन्दी एशिया में बोली जाती है। सऊदी अरब से लेकर बांग्लादेश तक हिन्दी का एक बड़ा संसार है तो कैरेबियन द्वीप समूह और उत्तर अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में न्यूजीलैंड में विशिष्ट किस्म के हिन्दी क्षेत्र हैं जहां ऐसे लोंगों की एक बहुत बड़ी संख्या है जिनकी दूसरी-तीसरी-चौथी भाषा हिन्दी है।"[1] हिन्दी भाषा का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है। डॉ. सुधाकर गोकाककर लिखते हैं "हिन्दी अपने देश के बहुसंख्य लोंगों की बोली भाषा है। हिन्दी का एक रूप राजभाषा का भी है। इस देश में और भाषाएँ भी बोली जाती हैं। टी.वी. जैसे माध्यम पर जितने कार्यक्रम हिन्दी में होते हैं, उतने और किसी भाषा में नहीं होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं की संख्या को देखें तो जितनी पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होती हैं, उतनी और किसी